سُورَةُ النَّبَإِ

सूरतुन नबा-७८

सूरतुन नबा मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें चालीस आयतें एवं दो रूकुअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ①

(१) ये लोग किस वस्तु की पूछताछ कर रहे हैं ?[1]

عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ②

(२) उस बड़ी सूचना की ?

الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ③

(३) जिसमें ये विभिन्न मत हैं।[2]

كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ④

(४) निश्चित रूप से ये अभी जान लेंगे।

---

[1] **सूरतुन नबा** : जब नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* को नबूअत से सम्मानित किया गया तथा आप से एकेश्वरवाद एवं प्रलय आदि की चर्चा की तथा पवित्र ईशवाणी क़ुरआन सुनाया तो काफ़िरों तथा मुशरिकों ने एक-दूसरे से प्रश्न करना आरम्भ किया कि क्या यह सम्भव है ? जैसा कि यह दावा कर रहे हैं अथवा यह क़ुरआन वास्तव में अल्लाह की ओर से अवतरित है। जैसा कि मोहम्मद *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* कहता है। प्रश्न द्वारा अल्लाह ने पहले इन चीज़ोकी वास्तविक स्थिति उजागर की जोउनकी है। फिर स्वयं ही उत्तर दिया।

[2] अर्थात जिस वड़ी सूचना के सम्बन्ध में प्रश्न है। इस बड़ी सूचना से अभिप्राय कुछ ने पवित्र क़ुरआन लिया है। काफिर उसके विषय में विभिन्न बातें करते थे। कोई उसे जादू कोई ज्योतिष कोई कविता तथा कोई प्राचीन कथा बतलाता था। कुछ के विचाार में इसका अभिप्राय प्रलय का घटित होना है तथा पुनः जीवित होना। इसमें भी उनके मध्य कुछ मतभेद था कोई सिरे से इसका इंकार कि इनके बीच मतभेद है, कोई उसके संदर्भ में पूछताछ करता था की मात्र संदेह का प्रदर्शन। कुछ कहते हैं कि प्रश्न कर्ता ईमान वाले तथा काफ़िर दोनों थे। ईमान वालों का प्रश्न तो विश्वास की अधिकता तथा अधिक जानकारी के लिये था तथा काफ़िरों का उपहास एवं प्रतिहास स्वरूप।

(५) फिर निश्चित रूप से उन्हें अतिशीघ्र ज्ञात हो जायेगा ।[1] ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۝٥

(६) क्या हमने धरती को फ़र्श. नहीं बनाया ।[2] أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهَادًا ۝٦

(७) तथा पर्वतों को खूँटा नहीं बनाया ।[3] وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ۝٧

(८) तथा हमने तुम्हें जोड़े-जोड़े पैदा किये ।[4] وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ۝٨

(९) तथा हमने तुम्हारी निद्रा को तुम्हारे विश्राम का कारण बनाया ।[5] وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝٩

(१०) तथा रात्रि को हमनें पर्दा बनाया ।[6] وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ۝١٠

---

[1]यह डाँट फटकार है कि शीघ्र ही सब कुछ का ज्ञान हो जायेगा। आगे अल्लाह अपनी कारीगरी तथा महान सामर्थ्य की चर्चा कर रहा है। ताकि अद्वैत का तथ्य उनके आगे स्पष्ट हो तथा ईशदूत उन्हें जिस चीज़ का आमंत्रण दे रहा है। उस पर विश्वास करना उनके लिये सरल हो जाये।

[2] अर्थात फर्श के समान तुम धरती पर चलते-फिरते, उठते-बैठते, सोते-जागते तथा सब कामकाज करते हो। धरती को डोलती नहीं रहने दिया।

[3]أَوْتَاد यह وَتَد का बहुवचन है। खूँटे अर्थात पर्वतों को धरती के लिये खूँटे बनाये ताकि धरती स्थिर रहे, हिले नहीं। क्योंकि हिलने-डोलने की दशा में धरती रहने योग्य ही नहीं होती।

[4]पुरूष-स्त्री, नर-मादा, अर्थात أزواج का अर्थ प्रकार तथा वर्ण है अर्थात अनेक रूपों तथा रंगों में पैदा किया। सुरूप, कुरूप, लम्बा, छोटा, गोरा, काला, आदि।

[5] سُبَات का अर्थ काटना है, रात भी जीव-जन्तुओं की सारी गति विधियाँ कम कर देती है ताकि शान्ति हो जाये तथा वे आराम से सो सकें। अथवा अभिप्राय यह है कि रात्रि तुम्हारे कर्मों को समाप्त कर देती है। कार्य समाप्त होने का अर्थ आराम है।

[6]अर्थात रात का अंधेरा तथा तमस प्रत्येक वस्तु को अपने अंधकार मे ढाँक लेता है जैसे कपड़ा मनुष्य के शरीर को छिपा लेता है।

وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾

(११) तथा दिन को हमने जीविका उपार्जन का समय बनाया।[1]

وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾

(१२) तथा तुम्हारे ऊपर हमने सात सुदृढ़ आकाश बनाये।[2]

وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ﴿١٣﴾

(१३) तथा एक चमकता हुआ ज्योंति दीप पैदा किया।[3]

وَأَنزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾

(१४) तथा मेंघों से हमने अत्यधिक प्रवाहित जल बरसाया।[4]

لِّنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ﴿١٥﴾

(१५) ताकि उससे अन्न तथा वनस्पति उगायें।[5]

وَجَنَّاتٍ أَلْفَافًا ﴿١٦﴾

(१६) तथा घने बाग़ भी (उगायें)।[6]

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ﴿١٧﴾

(१७) नि:संदेह निर्णय का दिन निर्धारित है।[7]

---

[1]अभिप्राय यह है कि दिन को प्रकाशमान बनाया ताकि लोग जीविकोपार्जन के लिये परिश्रम कर सकें।

[2]इनमें प्रत्येक की दूरी पाँच सौ वर्ष के समान है। जो उसकी दृढ़ता का प्रमाण है।

[3]इससे तात्पर्य सूर्य है तथा جَعَلَ का अर्थ خَلَقَ है।

[4] مُعْصِرَات वह बदलियाँ जोजल से भरी हुई हो। किन्तु अभी बरसी न हों। जैसे الْمَرْأَةُ الْمُعْتَصِرَةُ उस स्त्री को कहते हैं जिसका रज: काल निकट हो। ثَجَّاجًا अधिक प्रवाहित जल।

[5] حَبّ (दाना) वह अन्न जिसे खाने के लिये ढेर कर लिया जाता है। जैसे गेहूँ, चावल, जौ, मकाई आदि तथा वनस्पतियाँ, तरकारियाँ एवं चारे आदि जो पशु खाते हैं।

[6] أَلْفَافًا शाखाओं की अधिकता के कारण एक-दूसरे से मिले पेड़ अर्थात घने बाग़।

[7]अथार्त आदि तथा अंत सब के एकत्र होने तथा वचन का दिन। इसे निर्णय का दिन इसलिये कहा कि उस दिन एकत्रित होने का उद्देश्य ही सभी इंसानों का उनके कर्मों के अनुसार निर्णय करना है।

يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ﴿١٨﴾

(१८) जिस दिन कि नरसिंघ फूँका जायेगा, फिर तुम सब दल के दल बन कर आओगे ।[1]

وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ﴿١٩﴾

(१९) तथा आकाश खोल दिया जायेगा, तो उसमें द्वार-द्वार हो जायेंगे ।[2]

وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾

(२०) तथा पर्वत चलाये जायेंगे तो वे सफेद बालू हो जायेंगे ।[3]

إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾

(२१) नि:संदेह नरक घात में है ।[4]

لِّلطَّاغِينَ مَآبًا ﴿٢٢﴾

(२२) उद्दण्डियों का स्थान वही है ।

---

[1]कुछ ने इस का भावार्थ यह वर्णन किया है कि प्रत्येक समुदाय अपने रसूल के साथ हश्र के मैदान में आयेगा यह दूसरा नफ़ख़ा (फूंक) होगी जिसमें सब लोग क़ब्रों से जीवित होकर निकल आयेंगे। अल्लाह (तआला) आकाश से पानी बरसायेगा जिससे इंसान खेती के सामान उग आयेंगे इंसान का प्रत्येक अंग सड़ जायेगा किन्तु रीढ़ की अस्थि का अन्तिम सिरा, उसी से प्रलय के दिन सृष्टि को पुन: बना दिया जायेगा। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरते अम्म)

[2]अर्थात फ़रिश्तों के उतरने के लिये मार्ग बन जायेंगे। तथा धरती पर उतर आयेंगे।

[3] سَـــرَابٌ वह रेत जो दूर से पानी लगे। पर्वत भी रेत के समान दूर से दिखने वाली वस्तु बनकर रह जायेंगे। तथा फिर सर्वथा लुप्त हो जायेंगे उनका चिन्ह तक नहीं रह जायेगा। कुछ कहते हैं कि क़ुरआन में पर्वतो की अनेक दशायें वर्णित की गई हैं। जिनमें अनुकूलता इस प्रकार है कि १-पहले उन्हें कण-कण कर दिया जायेगा ﴿فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً﴾ (*अलहाक्क:*-१४) २- वह धुनी रूई के समान हो जायेंगे ﴿كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ﴾ (*अल-कारिअ:*-५) ३- वह गर्द गुबार (धूल-धप्पड़) हो जायेंगे, ﴿فَكَانَتْ هَبَاءً مُّنبَثًّا﴾ (*अल-वाक़िअ:* -६) ४- उनको उड़ा दिया जायेगा । ﴿يَنسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا﴾ (*ताहा*-१०५) तथा पाँचवी स्थिति यह है कि वह मृगतृष्णा हो जायेगे अर्थात नहीं रह जायेंगे जैसाकि इस स्थान पर है। (फ़तहुल क़दीर)

[4]घात ऐसे स्थान को कहते हैं जहाँ छुपकर प्रतीक्षा की जाती है कि वहाँ से गुज़रे तो उस पर प्रहार कर दिया जाये। नरक के अधिकारी भी इसी प्रकार नरकवासियों की प्रतीक्षा में घात लगाये हुए हैं अथवा नरक स्वयं अल्लाह की आज्ञा से घात लगाये हुए काफ़िरों की प्रतीक्षा कर रही है।

لَّٰبِثِينَ فِيهَآ أَحْقَابًا ﴿٢٣﴾

(२३) उसमें वे कई युगों (एवं शताब्दियों) तक पड़े रहेंगे ।[1]

لَّا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾

(२४) न कभी उसमें ठंड का स्वाद चखेंगे न पानी का ।

إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾

(२५) अतिरिक्त गर्म पानी एवं बहती हुई पीप के ।[2]

جَزَآءً وِفَاقًا ﴿٢٦﴾

(२६) (उनको) पूर्णरूप से बदला मिलेगा ।[3]

إِنَّهُمْ كَانُوا۟ لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾

(२७) उन्हें तो हिसाब की संभावना ही न थी ।[4]

وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾

(२८) तथा मुकरा-मुकरा कर हमारी आयतों को झुठलाते थे ।

وَكُلَّ شَىْءٍ أَحْصَيْنَٰهُ كِتَٰبًا ﴿٢٩﴾

(२९) हमने प्रत्येक बात को लिखकर सुरक्षित रखा है ।[5]

---

[1] أَحْقَاب बहुवचन है حُقُب का, अर्थ है युग । अभिप्राय सदा तथा नित्य है, वह सदा के लिये नरक में रहेंगे । यह यातना काफ़िरों तथा मुशरिकों के लिये है ।

[2] जो नरकवासियों के शरीर से निकलेगी ।

[3] अर्थात यह यातना उनके कर्मों के अनुकूल है जो वह संसार में करते रहे ।

[4] यह पहले वाक्य का कारण बताया जा रहा है अर्थात वह उपरोक्त दण्ड के भागी इस कारण बने कि मौत के पश्चात वह पुर्नजीवन को मानते ही नहीं थे कि हिसाब-किताब की आशा रखते ।

[5] अर्थात लौह महफ़ूज़ में । अथवा वह लेख अभिप्रेत है जो फ़रिश्ते लिखते रहे । प्रथम भावार्थ अधिक सहीह है । जैसाकि (*यासीन*-१२) में फ़रमाया :

﴿ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُبِينٍ ﴾

(३०) अब तुम (अपने किये का) स्वाद चखो, हम तुम्हारी यातना ही बढ़ाते जायेंगे ।[1]

فَذُوقُوا فَلَن نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾

(३१) नि:संदेह सदाचारियों के लिये सफलता है ।[2]

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿٣١﴾

(३२) बाग़ात हैं तथा अंगूर हैं ।[3]

حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ﴿٣٢﴾

(३३) तथा नवयुवती कुँवारी सम आयु स्त्रियाँ हैं ।[4]

وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ﴿٣٣﴾

(३४) तथा छलकते हुए मदिरा के प्याले हैं ।[5]

وَكَأْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾

(३५) वहाँ न तो वे अश्लील बातें सुनेंगे तथा न असत्य बातें सुनेंगे ।[6]

لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّابًا ﴿٣٥﴾

---

[1]यातना बढ़ानें का अभिप्राय है कि अब यह यातना स्थाई है । जब उनके चमड़े गल जायेंगे तो दूसरे बदल दिये जायेंगे । (*अन-निसा-५६*) जब आग बुझने लगेगी तो फिर भड़का दी जायेगी । (*बनी इस्राईल-९७*)

[2]दुर्भाग्यशालियों की चर्चा के पश्चात अब यह सौभाग्यशालियों की चर्चा तथा उन उपहारों का वर्णन है जिनसे वह परलोकिक जीवन में सफल होंगे । यह सफलता एवं उपहार उन्हें सदाचार के कारण प्राप्त होंगे । सदाचार ईमान तथा आज्ञा पालन की माँगों को पूरा करने का नाम है । भाग्यशाली वह है जो ईमान लाने के बाद संयम तथा नेक कामों का प्रयोजन करते हैं ।

[3]यह مَفَازًا से बदल है ।

[4] كَوَاعِب वहुवचन है كَاعِبَة का, यह كَعْب (घुट्टी) से है जैसे घुट्टी उभरी होती है उनकी छातियों में भी ऐसा ही उभार होगा । जो उनकी शोभा तथा सुन्दरता का एक द्योतक है । أَتْرَاب समायु ।

[5] دِهَاقًا भरे हुए अथवा लगातार एक के बाद एक अथवा साफ तथा स्वच्छ كَأْس ऐसे प्याले को कहते हैं जो पूर्ण रूप से भरा हुआ हो ।

[6]अर्थात कोई व्यर्थ तथा बेकार बात वहाँ नहीं होगी, न एक-दूसरे से मिथ्या बात करेंगे ।

جَزَآءً مِّن رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾

(३६) (उनको) तेरे प्रभु की ओर से (उनके सत्कर्मों का) यह बदला मिलेगा। जो पर्याप्त उपहार होगा।[1]

رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾

(३७) (उस) प्रभु की ओर से मिलेगा जो कि आकाशों का धरती का तथा जो कुछ उसके मध्य है, उनका प्रभु है, तथा अत्यन्त दयालु है। किसी को उससे बातचीत करने का अधिकार नहीं होगा।[2]

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

(३८) जिस दिन आत्मा तथा फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध होकर खड़े होंगे,[3] तो कोई बात न कर सकेगा, परन्तु जिसे अत्यन्त दयालु आज्ञा दे तथा वह ठीक बात मुख से निकाले।[4]

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهِ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾

(३९) यह दिन सत्य है,[5] अब जो चाहे अपने प्रभु के पास (सत्कर्म करके) स्थान बना ले।[6]

---

[1] عَطَاءً के साथ حِسَابًا अतिश्योक्ति के लिये आता है अर्थात वहाँ अल्लाह के उपहारों का प्राचुर्य होगा।

[2] अर्थात उसकी बड़ाई, भय तथा प्रताप इतना होगा कि आरम्भ में उससे किसी को बात करने का साहस नहीं होगा। इसी लिये उसकी अनुमति के बिना कोई सिफ़ारिश (अभिस्तावना) के लिये मुँह भी नहीं खोलेगा।

[3] यहाँ जिब्रील सहित रूह के कई भावार्थ वर्णन किये गये हैं। इमाम इब्ने कसीर ने आदम के पुत्रों (इंसान) को أَشْبَه उचित माना है।

[4] यह अनुमति अल्लाह (तआला) फ़रिश्तों तथा ईशदूतों को प्रदान करेगा तथा वे जो बात करेंगे सत्य तथा ठीक ही होगी, अथवा यह अर्थ है कि अनुमति मात्र उसी के लिये दी जायेगी। जिसने सही बात कही हो अर्थात धर्मसूत्र अद्वैत को स्वीकार करता रहा हो।

[5] अवश्य आने वाला है।

[6] उस आगामी दिन को सामने रखते हुए ईमान तथा संयम का जीवन अपनाये ताकि उस दिन उसे वहाँ अच्छा स्थान मिल जाये।

إِنَّا أَنذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ يَا لَيْتَنِي كُنتُ تُرَابًا ﴿٤٠﴾

(४०) हमने तुम्हें निकट भविष्य में घटित होने वाली यातना से डरा दिया (तथा सावधान कर दिया) ।[1] जिस दिन मनुष्य अपने हाथों की कमाई को देख लेगा ।[2] तथा काफ़िर कहेगा कि काश मैं मिट्टी बन जाता ।[3]

सूरतुन नाज़िआत-७९

سُورَةُ النَّازِعَاتِ

यह सूरत मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें छियालीस आयतें एवं दो रूकूअ़ हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

وَالنَّازِعَاتِ غَرْقًا ﴿١﴾

(१) डूबकर कठोरता से खीचनें वालों की सौगन्ध ।[4]

---

[1]अर्थात क़ियामत के दिन की यातना से जो निकट ही है, क्योंकि उसका आना निश्चित है तथा प्रत्येक वस्तु समीप ही है । क्योंकि उसे आ कर ही रहना है ।

[2]अर्थात अच्छा व बुरा, कर्म जो भी उसने संसार में किया वह अल्लाह के यहाँ पहुँच गया है । क़ियामत (प्रलय) के दिन वह उसके समक्ष आ जायेगा तथा वह उसे देखेगा ।

﴿يُنَبَّؤُا الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ﴾ (अल-क़ियामह:-१३)

[3]जब वह अपने भयानक परिणाम का अवलोकन करेगा तोयह कामना करेगा । कुछ कहते हैं अल्लाह पशुओं के बीच भी न्यायोचित निर्णय करेगा । यहाँ तक की एक सींग वाली बकरी ने बिना सींग की बकरी पर कोई अत्याचार किया होगा तो उस का भी बदला दिलायेगा । इसके पश्चात अल्लाह पशुओं को आदेश देगा कि मिट्टी हो जाओ तो वह मिट्टी हो जायेंगे । उस समय काफ़िर भी कामना करेंगे कि काश वह भी पशु होते तथा आज मिट्टी बन जाते (इब्ने कसीर)

[4]**सूरतुन नाज़िआत** : نَزْعٌ का अर्थ है कड़ाई से खींचना । غَرْقًا डूबकर- यह प्राण निकालने वाले फ़रिश्तों का विशेषण है । फ़रिश्ते काफ़िरों का प्राण बड़ी कड़ाई से निकालते हैं । तथा शरीर में डूबकर ।

وَّالنّٰشِطٰتِ نَشۡطًا ۙ﴿۲﴾
(२) बंधन खोलकर छुड़ाने वालों की सौगन्ध[1]

وَّالسّٰبِحٰتِ سَبۡحًا ۙ﴿۳﴾
(३) तथा तैरने फिरने वालों की सौगन्ध ।[2]

فَالسّٰبِقٰتِ سَبۡقًا ۙ﴿۴﴾
(४) फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की सौगन्ध ।[3]

فَالۡمُدَبِّرٰتِ اَمۡرًا ۘ﴿۵﴾
(५) फिर कार्यों का उपाय करने वालों की सौगन्ध ।[4]

يَوۡمَ تَرۡجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ﴿۶﴾
(६) जिस दिन कंपित होने वाली काँपेंगी ।[5]

---

[1] نشطا का अर्थ है गाँठ खोलना अर्थात ईमान वालों की प्राण फ़रिश्ते सरलता से निकालते हैं । जैसे गाँठ खोल दी जाये ।

[2] سَبۡح का अर्थ तैरना है । फ़रिश्ते प्राण निकालने के लिये इंसान के शरीर में ऐसे तैरते फिरते हैं जैसे गोताखोर मोती निकालने के लिये समुद्र की गहराईयों में तैरता है अथवा यह अभिप्राय है कि अति तेज गति से अल्लाह का आदेश लेकर आकाशों से उतरते हैं । क्योंकि तेज़गामी घोड़े को भी سابح कहते हैं ।

[3]यह फ़रिश्ते अल्लाह की प्रकाशना ईशदूतों तक दौड़कर पहुँचाते हैं । ताकि शैतान को उनकी सुनगुन न मिले । अथवा ईमान वालों की आत्मायें स्वर्ग की ओर ले जाने में शीघ्रता करते हैं ।

[4]अर्थात अल्लाह (तआला) जो काम उनको सौंपता है वह उसकी व्यवस्था करते हैं । वास्तविक व्यवस्थापक तो अल्लाह (तआला) ही है । किन्तु जब अल्लाह (तआला) अपनी पूर्व तत्वदर्शिता से फ़रिश्तो द्वारा काम करवाता है तो उन्हें भी व्यवस्थापक कहा जाता है । इस आधार पर पाँचों विशेषताएं फ़रिश्तों की हैं तथा उन फ़रिश्तों की अल्लाह ने शपथ ली है । शपथ का उत्तर लुप्त है अर्थात ﴿لَتُبۡعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلۡتُمۡ﴾ तुम अवश्य जीवित किये जाओगे तथा तुम्हें तुम्हारे कर्मों के सम्बन्ध में सूचित किया जायेगा । क़ुरआन ने इस पुर्नजीवन तथा प्रतिकार के लिये कई स्थानों पर सौगन्ध खाई है । जैसे सूरतुत *तग़ाबुन-७* में भी अल्लाह (तआला) ने सौगन्ध खाकर उपरोक्त शब्दों में इस तथ्य का वर्णन किया है । यह पुर्नजीवन तथा प्रतिफल कब होगा ? इसे आगे स्पष्ट किया है ।

[5]यह प्रथम नफ़ख़ा (फूंक) होगी । जिसे विनाश की फूंक कहते हैं । जिस से पूरी धरती काँपने लगेगी तथा प्रत्येक वस्तु विनष्ट हो जायेगी ।

(७) उसके पश्चात एक पीछे आने वाली (पीछे-पीछे) आयेगी ।[1]

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ⑦

(८)(बहुत से) दिल उस दिन धड़कते होंगे ।[2]

قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ⑧

(९) जिनके नेत्र नीचे होंगे ।[3]

أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ⑨

(१०) कहते हैं कि क्या हम पहले जैसी स्थिति में फिर लौटाये जायेंगे ?[4]

يَقُولُونَ أَإِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ⑩

(११) क्या उस समय जब हम जीर्ण अस्थियों में हो जायेंगे ।[5]

أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ⑪

(१२) कहते हैं कि यह लौटना फिर हानिकारक है ।[6] (ज्ञात होना चाहिये)

قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ⑫

(१३) वह तो केवल एक (भयानक) फटकार है कि (जिसके उत्पन्न होते ही) ।

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ⑬

---

[1] यह दूसरा नफ़ख़ा होगा । जिससे सब जीवित हो जायेंगे तथा क़ब्रों से निकल आयेंगे । यह दूसरा नफ़ख़ा (फूँक) प्रथम फूँक के चालीस वर्ष पश्चात होगी इसे رادفة इसलिये कहा जाता है कि यह पहली फूँक के पश्चात ही होगी अर्थात दूसरा नफ़ख़ा पहले नफ़ख़े के पीछे होगा ।

[2] क़ियामत की भयानकता तथा भीषणता से ।

[3] अर्थात أَبْصَارُ أَصْحَابِهَا ऐसे भयभीत लोगों की निगाहें भी (अपराधियों के समान) झुकी होंगी ।

[4] حَافِرَة-पहली स्थिति को कहते हैं । यह क़ियामत का इंकार करने वालों का वचन है कि हम फिर उसी प्रकार जीवित कर दिये जायेंगे जैसे मृत्यु से पहले थे ?

[5] यह क़ियामत (प्रलय) के इंकार पर अधिक बल है । कि हम कैसे जीवित कर दिये जायेंगे जबकि हमारी अस्थियाँ सड़ जायेंगी तथा कण-कण हो जायेंगी ।

[6] यदि वास्तव में ऐसा हुआ जैसा कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कहता है तो यह पुर्नजीवन हमारे लिये बड़ा हानिकारक होगा ।

فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ⑭

(१४) वह तत्क्षण मैदान में एकीकृत हो जायेंगे ।[1]

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَىٰ ⑮

(१५) क्या मूसा (*अलैहिस्सलाम*) की कथा भी तुम्हें ज्ञात है ?

إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ⑯

(१६) जबकि उनके प्रभु ने उन्हें पवित्र मैदान तुवा में पुकारा ।[2]

اذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ⑰

(१७) कि तुम फ़िरऔन के पास जाओ उसने उद्दण्डता अपना ली है ।[3]

فَقُلْ هَل لَّكَ إِلَىٰ أَن تَزَكَّىٰ ⑱

(१८) उससे कहो कि क्या तू अपना सुधार तथा शोधन चाहता है ।[4]

---

[1] سَاهِرَةٌ से अभिप्राय धरती का उपरी भाग अर्थात मैदान है। धरती के ऊपरी भाग को سَاهِرَةٌ इस कारण कहा गया है कि सभी जीव का सोना-जागना इसी धरती पर होता है। कुछ कहते हैं कि चटियल मैदान तथा वनों में भय के कारण मनुष्य को नींद नहीं आती तथा वहाँ जागता रहता है इसलिये سَاهِرَةٌ कहा जाता है (फ़तहुल क़दीर) कुछ भी हो यह क़यामत का चित्ररण है फिर एक ही फूंक में सब मैदान में एकत्रित हो जायेंगे।

[2]यह उस समय की कथा है जब मूसा (*अलैहिस्सलाम*) मदयन से वापसी पर आग की खोज में तूर पर्वत पर पहुँच गये थे तो वहाँ एक पेड़ की आड़ से अल्लाह ने मूसा से बातचीत की। जैसा कि सविस्तार *सूरत ताहा* के प्रारम्भ में गुज़रा। طُوًى *तुवा* उस स्थान का नाम है। बात करने से अभिप्राय नबूअत तथा रिसालत (दूतत्व) से सम्मानित करना है। अर्थात मूसा (*अलैहिस्सलाम*) आग लेने गये तथा अल्लाह ने उन्हें संदेशवाहक नियुक्त कर दिया, जैसे कि आगे फ़रमाया :

[3]अर्थात कुफ़्र (इंकार) अवज्ञा तथा अभिमान में सीमा लाँघ गया है।

[4]अर्थात क्या ऐसा मार्ग तथा आचरण तू पसन्द करता है जिससे तेरा सुधार हो जाये तथा वह यह है कि मुसलमान तथा आज्ञाकारी बन जाये।

وَأَهْدِيَكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ﴿١٩﴾

(१९) तथा यह कि मैं तुझे तेरे प्रभु का मार्ग दिखाऊँ ताकि तू (उससे) डरने लगे ।[1]

فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ﴿٢٠﴾

(२०) तो उसे बड़ी निशानी दिखायी ।[2]

فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ﴿٢١﴾

(२१) तोउसने झुठलाया तथा अवहेलना की ।[3]

ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ﴿٢٢﴾

(२२) फिर पलटा प्रयत्न करते हुए ।[4]

فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ﴿٢٣﴾

(२३) फिर सबको एकत्रित करके[5] उच्च स्वर में पुकारा ।

فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ﴿٢٤﴾

(२४) कहा कि तुम सबका प्रभु मैं ही हूँ ।

فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ﴿٢٥﴾

(२५) तो (सबसे उच्च एवं महान) अल्लाह ने भी उसे परलोक तथा इस लोक की यातनाओं में घेर लिया ।[6]

---

[1]अर्थात उस की यकता तथा उपासना का मार्ग ताकि उसकी यातना से डरे । क्योंकि अल्लाह का डर उसी दिल में संचित होता है । जो संमार्ग पर चलने वाला होता है ।

[2]अर्थात अपनी सत्यता के वह प्रमाण प्रस्तुत किये जो अल्लाह की ओर से उन्हें प्रदान किये गये थे कुछ कहते हैं कि वह चमत्कार तात्पर्य है जो आदरणीय मूसा को दिये गये थे जैसे प्रकाशमय हाथ, तथा लाठी तथा कुछ के विचार से नौं निशानियाँ हैं ।

[3]किन्तु इन प्रमाणों एवं चमत्कारों का उस पर कोई प्रभाव नही हुआ तथा झुठलाने एवं अवैज्ञा के मार्ग पर अग्रसर रहा ।

[4]अर्थात उसने ईमान तथा आज्ञा पालन से इंकार ही नहीं किया । अपितु धरती में उपद्रव फैलाने का तथा मूसा के मुक़ाबले का प्रयास करता रहा । तथा जादूगरों को एकत्र करके मूसा (*अलैहिस्सलाम*) से मुक़ाबला कराया ताकि उनको झूठा सिद्ध किया जा सके ।

[5]अपने समुदाय को अथवा लड़ने के लिये अपनी सेना को, अथवा जादूगरों को मुक़ाबले के लिये एकत्र किया तथा दुराग्रह का प्रदर्शन किया एवं अपने महाप्रभु होने की घोषणा की ।

[6]अर्थात अल्लाह ने उसे ऐसे धर लिया कि दुनियाँ के आगामी उद्दण्डों के लिये शिक्षा का प्रतीक बना दिया तथा प्रलय की यातना इस पर अधिक है जो उसे वहाँ मिलेगी ।

(२६) नि:संदेह इसमें उस व्यक्ति के लिये शिक्षा है, जो डरे ।[1]

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ﴿٢٦﴾

(२७) क्या तुम्हारा पैदा करना कठिन है अथवा आकाश का ?[2] अल्लाह तआला ने उसे बनाया ।

أَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ﴿٢٧﴾

(२८) उसकी ऊँचाई बढ़ायी फिर उसे ठीक-ठाक कर दिया ।[3]

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ﴿٢٨﴾

(२९) तथा उसकी रात्रि को अंधकारमय तथा उसके दिन को निकाला ।[4]

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ﴿٢٩﴾

(३०) तथा उसके पश्चात धरती को (समतल) बिछा दिया ।[5]

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَاهَا ﴿٣٠﴾

---

[1]इसमें नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिये सांत्वना है तथा मक्का के काफ़िरों को चेतावनी है कि यदि उन्होंने विगत लोगों की घटनाओं से शिक्षा ग्रहण न की तो उनका अंत फ़िरऔन के समान हो सकता है ।

[2]यह काफ़िरों का सम्बोधन है । तथा उद्देश्य डाँट-फटकार है कि जोअल्लाह इतने विशाल आकाश तथा उसकी विचित्र वस्तुओं को पैदा कर सकता है उसे तुम्हें पुन: जीवित करना कौन सा कठिन है । क्या तुम्हें पुन: पैदा करना आकाश की रचना से अधिक कठिन है ?

[3]कुछ ने سَمْكَ का अर्थ छत भी किया है । ठीक-ठाक करने का अभिप्राय उसे ऐसे आकार में ढालना है जिसमें कोई अंतर, फटन तथा दोष शेष न रहे ।

[4] أَغْطَشَ का अर्थ है أَظْلَمَ,तथा أَخْرَجَ का अर्थ है أَبْرَزَ तथा نَهَارَهَا की जगह ضُحَاهَا इसलिए कहा कि दिन चढ़ जाने का समय सबसे अच्छा तथा उत्तम होता है । अभिप्राय है कि सूर्य के द्वारा प्रकाशित बनाया ।

[5] यह *हामीम अससजद: ९* में गुज़र चुका है कि خَلَقَ (पैदा करना) और चीज़ है तथा دَحَىٰ (समतल करना) अन्य विषय है । धरती की रचना आकाश से पहले हुई है । किन्तु इसको समतल आसमान की रचना के बाद किया गया है तथा यहाँ इसी वास्तविकता का वर्णन है तथा समतल करने एवं फैलाने का अभिप्राय धरती को रहने योग्य बनाने के लिये जिन चीज़ों की आवश्यकता है अल्लाह ने उनकी व्यवस्था की, जैसे धरती से जल

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ﴿٣١﴾

(३१) उसमें से पानी तथा चारा निकाला।

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ﴿٣٢﴾

(३२) तथा पर्वतों को (सुदृढ़) रूप से गाड़ दिया।

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾

(३३) ये सब तुम्हारे तथा तुम्हारे जानवरों के लाभ के लिये (हैं)।

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ ﴿٣٤﴾

(३४) तो जब वह बड़ी विपत्ति (क़ियामत)आ जायेगी।

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ مَا سَعَىٰ ﴿٣٥﴾

(३५) जिस दिन कि मनुष्य अपने किये हुए कर्मों को याद करेगा।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَرَىٰ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा (प्रत्येक) देखने वाले के समक्ष नरक प्रत्यक्ष कर दी जायेगी।[1]

فَأَمَّا مَن طَغَىٰ ﴿٣٧﴾

(३७) तो जिस (व्यक्ति) ने उद्दण्डता अपनायी (होगी)।[2]

وَآثَرَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾

(३८) तथा सांसारिक जीवन को वरीयता प्रदान की (होगी)।[3]

निकाला उसमें चारा तथा खाद्य पदार्थ पैदा किया। पर्वतों को कीलों के समान सुदृढ़ गाड़ दिया ताकि धरती न डोले जैसाकि यहाँ आगे भी यही वर्णन है।

[1]अर्थात काफ़िरों के समान कर दी जायेगी ताकि वह देख लें कि अब उनका स्थाई निवास स्थान यही नरक है। कुछ कहते हैं कि मोमिन तथा काफ़िर दोनों ही उसे देखेंगे। मोमिन उसे देखकर अल्लाह के कृतज्ञ होंगे कि उसने ईमान तथा पुण्य के कार्यों के कारण उन्हें उससे बचा लिया। तथा काफ़िर जो पहले ही भयभीत होंगे, उसे देखकर उनका शोक तथा पछतावा और बढ़ जायेगा।

[2]कुफ़्र (इंकार) तथा अवज्ञा में सीमा पार कर गया होगा।

[3]अर्थात संसार ही को सब कुछ समझा होगा तथा परलोक के लिये कोई तैयारी न की होगी।

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٣٩﴾

(३९) (उसका) स्थान नरक ही है।[1]

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾

(४०) परन्तु जो व्यक्ति अपने प्रभु के समक्ष खड़े होने से[2] डरता रहा होगा तथा अपने मन को इच्छाओं से रोका होगा।[3]

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٤١﴾

(४१) तो उसका स्थान स्वर्ग ही है।[4]

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ﴿٤٢﴾

(४२) लोग आपसे क़यामत (प्रलय) स्थापित होने का समय पूछते हैं।[5]

فِيمَ أَنتَ مِن ذِكْرَاهَا ﴿٤٣﴾

(४३) आपको उसके वर्णन करने से क्या सम्बन्ध ?[6]

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَاهَا ﴿٤٤﴾

(४४) उसके (ज्ञान का) अंत तो आपके प्रभु की ओर है।

إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرُ مَن يَخْشَاهَا ﴿٤٥﴾

(४५) आप तो केवल उससे डरते रहने वालों को सावधान करने वाले हैं।[7]

---

[1]इसके सिवा उसका कोई ठिकाना नहीं होगा जहाँ वह उससे बचकर शरण ले

[2]कि यदि मैंने पाप तथा अल्लाह की अवज्ञा की तो मुझे अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा। इसलिए वह पापों से बचता रहा हो।

[3]अर्थात मन को उन पापों तथा निषेधों से रोकता रहा हो जिनकी ओर मन का झुकाव होता था।

[4]जहाँ वह रहेगा बल्कि अल्लाह का अतिथि होगा।

[5]अर्थात प्रलय कब घटित तथा स्थापित होगी ? जिस प्रकार नवका अपने स्थान पर पहुँच कर लंगर डाल देती है इसी प्रकार प्रलय के घटित होने का नियत समय क्या है ?

[6]अर्थात आप को इस का निश्चित ज्ञान नहीं है। इसलिये आप का उसे वर्णन करने से क्या सम्बन्ध ? उसका निश्चित ज्ञान तो केवल अल्लाह ही के पास है।

[7]अर्थात आप का काम केवल إِنذَار (डराना) है, न कि परोक्ष की सूचनायें देना। जिसमें क़ियामत का ज्ञान है, जो अल्लाह ने किसी को नहीं दिया है। مَن يَخْشَاهَا इसलिए कहा कि

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوٓا۟ إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَىٰهَا ﴿٤٦﴾

(४६) जिस दिन ये उसे देख लेंगे, तो ऐसा प्रतीत होगा कि केवल दिन का अन्तिम भाग अथवा प्रथम भाग ही (संसार में) रहे हैं।[1]

सूरतु अबस-८०

سُورَةُ عَبَسَ

सूरतु अबस मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें बयालिस आयतें तथा एक रूकुअ़ है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

عَبَسَ وَتَوَلَّىٰٓ ﴿١﴾

(१) उसने खट्टा मुँह बनाकर मुख मोड़ लिया।

أَن جَآءَهُ ٱلْأَعْمَىٰ ﴿٢﴾

(२) (केवल इसलिये) कि उसके पास एक नेत्रहीन आया।[2]

चेतावनी तथा धर्म के प्रचार से वास्तविक लाभ उसी को मिलता है जिनके दिलों में अल्लाह का डर होता है। अन्यथा डराने तथा संदेश पहुँचाने का आदेश तो प्रत्येक के लिये है।

[1] عَشِيَّة जोहर से लेकर सूर्यास्त तक तथा ضُحَى सूर्योदय से दो पहर तक के लिये बोला जाता है। अर्थात जब काफ़िर नरक की यातना देखेंगे तो दुनियाँ का सुख-आनन्द तथा उनका स्वाद सब भूल जायेंगे तथा उन्हें ऐसा प्रतीत होगा वह दुनियाँ में पूरे एक दिन भी न रहे। दिन पूर्वाध अथवा परार्ध मात्र ही संसार में रहे हैं। अर्थात उन्हें सांसारिक जीवन इतना कम लगेगा।

[2] **सूरतु अबस** : इसके अवतरित होने के कारण में सभी भाष्यकार सहमत हैं कि यह अब्दुल्लाह पुत्र उम्मे मक़तूम के बारे में उतरी। एक बार नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* की सेवा में कुरैश के प्रमुख लोग उपस्थित बातें कर रहे थे कि अकस्मात इब्ने उम्मे मक़तूम जो अंधे थे उपस्थित हुए तथा नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* से धर्म की बातें पूछने लगे, नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने इसे बुरा माना तथा कुछ विमुखता वर्ती। इसलिए चेतावनी स्वरूप इन *आयतों* का अवतरण हुआ। (तिर्मिज़ी सूरतु *अबस*, सहहहहुल अलबानी)

(३) तुझे क्या पता शायद वह सुधर जाता ।[1]

وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ يَزَّكَّىٰ ③

(४) अथवा शिक्षायें सुनता तथा उसे शिक्षायें लाभ पहुँचाती ।

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنفَعَهُ الذِّكْرَىٰ ④

(५) (परन्तु) जो लापरवाही करता है ।[2]

أَمَّا مَنِ اسْتَغْنَىٰ ⑤

(६) उसकी ओर तो तू पूर्ण ध्यान दे रहा है ।[3]

فَأَنتَ لَهُ تَصَدَّىٰ ⑥

(७) यद्यपि कि उसके न सुधरने से तेरी कोई हानि नहीं ।[4]

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّىٰ ⑦

(८) तथा जो व्यक्ति तेरी ओर दौड़ता हुआ आता है ।[5]

وَأَمَّا مَن جَاءَكَ يَسْعَىٰ ⑧

(९) तथा वह डर (भी) रहा है ।[6]

وَهُوَ يَخْشَىٰ ⑨

---

[1]इब्ने उम्मे मक्तूम के आगमन से नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) के चेहरे पर अप्रियता के लक्षण उभर गये इसे عَبَسَ से तथा विमुखता को تَوَلَّى से व्यंजित किया ।

[2]अर्थात वह नेत्रहीन तुझ से धार्मिक निर्देश प्राप्त करके सदाचार करता जिससे उसका स्वभाव तथा कर्म संवर जाता उसके अन्त: करण का सुधार होता तथा तेरा सदुपदेश सुनने से उसको लाभ होता ।

[3]ईमान तथा उस ज्ञान से जो तेरी ओर अल्लाह के पास से आया है अथवा दूसरा अनुवाद है जो धनी तथा सम्पन्न है ।

[4]आप को अधिक ध्यान दिलाया गया कि नि:स्वार्थियों को छोड़कर विमुख लोगों की ओर ध्यान देना सही बात नहीं है ।

[5]क्योंकि तेरा काम तो मात्र संदेश पहुँचाना है । अत: इस प्रकार के काफ़िरों के पीछे पड़ने की आवश्यकता नहीं है ।

[6]इस बात का इच्छुक बनकर कि तू उस भलाई का मार्ग दिखाये तथा उसे शिक्षा-दीक्षा से सम्मानित करे ।

(१०) तो तू उससे विमुखता बर्तता है ।[1]　فَأَنتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ ۝١٠

(११) यह उचित नही[2] (क़ुरआन तो) शिक्षा की (वस्तु) है ।　كَلَّآ إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝١١

(१२) जो चाहे उससे शिक्षा ले ।[3]　فَمَن شَآءَ ذَكَرَهُۥ ۝١٢

(१३) यह तो सम्मानित पुस्तकों में है ।[4]　فِى صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝١٣

(१४) जो उच्च, महान तथा पवित्र एवं शुद्ध है ।[5]　مَّرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍۭ ۝١٤

(१५) ऐसे लिखने वालों के हाथों में है ।[6]　بِأَيْدِى سَفَرَةٍ ۝١٥

---

[1]अर्थात अल्लाह का भय भी उसके दिल में है । जिसके कारण यह आशा है कि तेरी बातें उसके लिए लाभ प्रद होंगी तथा वह उनको अपनायेगा एवं तदानुसार करेगा ।

[2]अर्थात ऐसे लोगों का तो सम्मान बढ़ाने की आवश्यकता है न कि उनसे विमुखता बर्तने की इस आयत से यह बात विदित हुई कि आमंत्रण तथा धर्म के प्रचार में किसी को विशेष नहीं करना चाहिये । बल्कि धनी-निर्धन स्वामी-दास, नर-नारी, छोटे-बड़े को एक समान समझा जाये तथा सब को एक साथ सम्बोधित किया जाये । अल्लाह जिसे चाहेगा अपनी तत्वदर्शिता से सुमार्ग से संम्मानित करेगा ।

[3]अर्थात ग़रीब से यह विमुखता तथा धनवानों की ओर विशेष ध्यान यह उचित नहीं । अभिप्राय यह है कि भविष्य में फिर ऐसा न हो ।

[4]अर्थात जो इसमें रूचि रखे तथा इससे शिक्षा ग्रहण करे इसे याद करे तथा इस की माँगों पर कार्यरत हो, तथा जो इस पर ध्यान न दे एवं विमुखता बर्ते । जैसे क़ुरैश के प्रमुखगण ने किया तो उनकी चिंता करने की ज़रूरत नही ।

[5] अर्थात (*लौह महफ़ूज़*) में क्यों कि वहीं से यह क़ुरआन उतरता है । अथवा यह तात्पर्य है कि यह पत्रिकाऐं अल्लाह के यहाँ अति सम्मानित हैं । क्योंकि वह ज्ञान तथा तत्वदर्शिता से भरपूर हैं ।

[6] مَرْفُوعَةٍ अल्लाह के यहाँ उच्चकोटि की हैं । अथवा संदेहों तथा परस्पर प्रतिरोध से उच्च हैं । مُطَهَّرَةٍ वह अत्यन्त शुद्ध हैं क्योंकि उन्हें पवित्र लोगों (फ़रिश्तों) के सिवा कोई स्पर्श ही नहीं करता है । अथवा न्यून्ता एवं अधिकता से पवित्र है ।

(१६) जो उच्चकोटि के पवित्र हैं। كِرَامٍ بَرَرَةٍ ⑯

(१७) अल्लाह की मार इंसान भी कितना कृतघ्न है।[1] قُتِلَ الْإِنسَانُ مَا أَكْفَرَهُ ⑰

(१८) उसे किस वस्तु से पैदा किया। مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ⑱

(१९) एक वीर्य से पैदा किया।[2] फिर उसको अंदाजा पर रखा।[3] مِن نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ⑲

(२०) फिर उसके लिये मार्ग सरल किया।[4] ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ⑳

(२१) फिर उसे मौत दी फिर क़ब्र में गाड़ दिया।[5] ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ㉑

(२२) फिर जब चाहेगा उसे जीवन प्रदान करेगा। ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنشَرَهُ ㉒

---

[1]इससे वह इंसान अभिप्रेत है जो बिना तर्क तथा प्रमाण के प्रलय का इंकार करते हैं قُتِلَ का अर्थ لُعِنَ तथा مَا أَكْفَرَهُ आश्चर्य वाची रूप है कितना कृतघ्न है। आगे इस कृतघ्न इंसान को चिन्तन-विचार का आमन्त्रण दिया जा रहा है ताकि संभवतः वह अपने कुफ़्र से रुक जाये।

[2]अर्थात जिसकी उत्पत्ति ऐसी तुच्छ पानी की बूंद से हुई है। क्या उसे घमंड शोभा देता है।

[3]इसका अभिप्राय यह है कि उसकी हितकारी वस्तुऐं उसे सुलभ कीं जैसे दो हाथ दो पैर तथा दो आँखें तथा अन्य अंग एवं संवेदन पत्र प्रदान किये।

[4]अर्थात अच्छाई-बुराई के मार्ग इसके लिये स्पष्ट कर दिये। कुछ कहते हैं कि कि इस से अभिप्राय मां के गर्भाशय से निकलने का मार्ग है। किन्तु प्रथम भावार्थ अधिक उचित है।

[5]अर्थात मौत के बाद उसे क़ब्रों में गाड़ने का आदेश दिया ताकि उसका सम्मान स्थित रह जाये अन्यथा जन्तु एवं पखेरू उसका शव नोच-नोच कर खाते जिससे उसका अपमान होता।

(२३) कदापि नहीं[1], उसने अब तक अल्लाह की आज्ञा का पालन नहीं किया। كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ أَمَرَهُۥ ﴿٢٣﴾

(२४) इन्सान को चहिए कि अपने आहार की ओर देख ले।[2] فَلْيَنظُرِ ٱلْإِنسَٰنُ إِلَىٰ طَعَامِهِۦٓ ﴿٢٤﴾

(२५) कि हमने ख़ूब पानी बरसाया। أَنَّا صَبَبْنَا ٱلْمَآءَ صَبًّا ﴿٢٥﴾

(२६) फिर धरती को भली प्रकार फाड़ा ثُمَّ شَقَقْنَا ٱلْأَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾

(२७-२८) फिर उसमें अन्न उपजाये तथा अंगूर एवं तरकारी فَأَنۢبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾ وَعِنَبًا وَقَضْبًا ﴿٢٨﴾

(२९) तथा ज़ैतून एवं खजूर وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ﴿٢٩﴾

(३०) तथा घने बाग़ وَحَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾

(३१) तथा शुष्क फल एवं (घास) चारा[3] भी وَفَٰكِهَةً وَأَبًّا ﴿٣١﴾

(३२) तुम्हारे प्रयोग तथा लाभ के लिये तथा तुम्हारे चौपाये के लिये مَّتَٰعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَٰمِكُمْ ﴿٣٢﴾

(३३) फिर जब कान बहरे करने वाली (प्रलय)[4] आ जायेगी فَإِذَا جَآءَتِ ٱلصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾

(३४) तो आदमी उस दिन अपने भाई से يَوْمَ يَفِرُّ ٱلْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ﴿٣٤﴾

(३५) अपनी माँ तथा बाप से وَأُمِّهِۦ وَأَبِيهِ ﴿٣٥﴾

---

[1]अर्थात बात ऐसी नहीं जैसे काफ़िर कहता है।

[2]कि उसे अल्लाह ने कैसे पैदा किया, जो उसके जीवन का कारण है तथा किस प्रकार उसके लिये जीवन हेतु उपलब्ध किये ताकि वह उनके द्वारा परलोक का सौभाग्य प्राप्त कर सके।

[3] أَبًّا वह घास चारा जो स्वयं उगता है जिसे पशु खाते हैं।

[4]क़ियामत (प्रलय) को صَاخَّةٌ बहरा करने वाली इसलिये कहा कि वह एक अत्यन्त चीख के साथ घटित होगी। जो कानों को बहरा कर देगी।

(३६) अपनी पत्नी तथा संतान से भागेगा	وَصَاحِبَتِهِۦ وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾
(३७) उनमें से प्रत्येक को उस दिन एक ऐसी प्रवृत्ति होगी जो उसे (प्रवृत्त रखने को) काफी होगी ।[1]	لِكُلِّ ٱمْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ﴿٣٧﴾
(३८) बहुत से चेहरे उस दिन प्रकाशमान होंगे ।[2]	وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾
(३९) (जो) हँसते हुए प्रसन्न होंगे ।	ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾
(४०) तथा बहुत से चेहरे उस दिन धूल मे अटे होंगे ।	وَوُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾
(४१) उन पर कलिमा चढ़ी होगी ।[3]	تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾
(४२) वे यही काफ़िर दुराचारी लोग होंगे ।[4]	أُولَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْكَفَرَةُ ٱلْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

---

[1] अथवा अपने समीपवर्ती सम्बन्धियों तथा मित्रों से निस्पृह तथा बेपरवाह कर देगा । हदीस में आता है कि नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने फरमाया : कि सब लोग *हश्र* के मैदान में नंगे शरीर नंगे पावों पैदल तथा बिना ख़तना के होंगे । हज़रत आईशा ने प्रश्न किया, इस प्रकार गुप्तांगों पर निगाह नहीं पड़ेगी । आपने इसके उत्तर में यही *आयत* पढ़ी अर्थात ﴿لِكُلِّ ٱمْرِئٍ مِّنْهُمْ﴾ संक्षिप्त आयत (तिर्मिज़ी तफ़सीर *सूरते अबस*, नसाई किताबुल जनायेज़, बाबुल बास) इसका कारण कुछ के विचार से यह है कि इंसान अपने घरों से इसलिये भागेगा ताकि वह उसका वह दुख था कष्ट न देखें जिस में वह ग्रस्त होगा । कुछ कहते हैं इसलिये कि उन्हें ज्ञान होगा कि वह किसी को लाभ नहीं पहुँचा सकते तथा उनके कुछ काम नहीं आ सकते (फ़तहुल क़दीर)

[2] यह ईमान वालों के चेहरे होंगे जिनको उनके कर्मपत्र उनके दायें हाथ में मिलेंगे । जिससे उन्हें अपने परलौकिक सौभाग्य तथा सफलता का विश्वास हो जायेगा जिससे उनके चेहरे प्रफुल्लता से दमक रहे होंगे ।

[3] अर्थात अपमान तथा यातना के अवलोकन से उनके चेहरे धुमिल-मैले पीले तथा काले होंगे जैसे शोक ग्रस्त तथा चिन्तित लोगों का चेहरा होता है ।

[4] अर्थात अल्लाह का, रसूलों का, क़ियामत का इंकार करने वाले थे, तथा दुराचारी, बदलचन भी ।

सूरतुत तकवीर-८१

سُوْرَةُ التَّكْوِيْرِ

सूरतुत तकवीर मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें उन्तीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ①

(१) जब सूर्य लपेट लिया जायेगा।[1]

وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ②

(२) तथा जब सितारे बिना प्रकाश के हो जायेंगे।[2]

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ③

(३) तथा जब पर्वत चलाये जायेंगे।[3]

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ④

(४) तथा जब गर्भवती उँटनियाँ छोड़ दी जायेंगी।[4]

सूरतुत तकवीर : इस सूरह में विशेष रूप से क़ियामत का चित्रण किया गया है। इसीलिये रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* का कथन है कि जो व्यक्ति चाहे कि क़ियामत को इस प्रकार देखे जैसे आँखों से देखा जाता है तो उसे चाहिए कि वह ﴿إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ﴾ तथा ﴿إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ﴾ ध्यान से पढ़े (तिर्मिज़ी तफ़सीर *सूरतित तकवीर*, मुसनद अहमद २\२७,३६, १०० जकरहुल अलबानी फिस सहीहः न॰ १०८१ भाग-३)

[1] अर्थात जिस प्रकार सिर पर पगड़ी लपेटी जाती है। उसी प्रकार सूर्य को लपेट दिया जायेगा। जिसके कारण उसका प्रकाश स्वयं समाप्त हो जायेगा। हदीस में है «الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ مُكَوَّرَانِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ».(सहीह बुख़ारी बदउल ख़ल्क़) "प्रलय के दिन चाँद तथा सूर्य लपेट दिये जायेंगे" कुछ हदीस से लगता है कि उनको लपेट कर नरक में फेंक दिया जायेगा ताकि जो मिश्रण वादी उनकी पूजा करते थे अधिक निरादर तथा अपमानित हों (फ़तहुल बारी, उपरोक्त बाब)

[2] दूसरा अनुवाद है झड़कर गिर जायेंगे अर्थात आकाश पर उनका अस्तित्व ही नहीं रहेगा।

[3] अर्थात उन्हें धरती से उखाडकर अन्तरिक्ष में चला दिया जायेगा तथा वह धुनी हुई रूई के समान उड़ेंगे।

[4] عِشَار बहुवचन है عُشَرَاء का गर्भवती अर्थात गाभिन ऊँटनियाँ जब उनका गर्भ दस महीनों का हो जाता है तो अरबों में यह अतिप्रिय एवं मूल्यवान मानी जाती थीं। जब

(५) तथा जब वन प्राणी एकत्रित किये जायेंगे ।[1] — وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۝٥

(६) तथा जब समुद्र भड़काये जायेंगे ।[2] — وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٦

(७) तथा जब प्राणें मिला दी जायेंगी ।[3] — وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝٧

(८) तथा जब जीवित गाड़ी गयी लड़कियों से प्रश्न किया जायेगा । — وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ ۝٨

(९) कि किस पाप के कारण उनकी हत्या की गयी ।[4] — بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۝٩

(१०) तथा जब कर्मपत्र खोल दिये जायेंगे ।[5] — وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝١٠

(११) तथा जब आकाश की खाल खींच ली जायेगी ।[6] — وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝١١

(१२) तथा जब नरक भड़कायी जायेगी । — وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝١٢

प्रलय व्याप्त होगी तो ऐसा भयावह दृश्य होगा कि यदि किसी के पास इस प्रकार की मूल्यवान ऊँटनियाँ होंगी तो उन्हें भी छोड़ देगा तथा उनकी परवाह नहीं करेगा ।

[1]अर्थात उन्हें प्रलय के दिन एकत्रित किया जायेगा ।

[2]अर्थात अल्लाह की आज्ञा से आग भड़क उठेगी ।

[3]इसके कई भावार्थ किये गये हैं अधिक उचित यह लगता है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके सहमत तथा सहधर्मी के साथ मिला दिया जायेगा । ईमान वालों को ईमान वालों के साथ, बुरों को बुरों के साथ, यहूदियों को यहूदियों के साथ, ईसाइयों को ईसाइयों के साथ । तथा इसी अनुसार ।

[4]इस तरह हत्यारे को धिक्कारा जायेगा, क्योंकि वास्तव में अपराधी तो वही होगा । न कि مَوْءُودَة (जीवित समाधि दी गई कन्या) जिस से प्रत्यक्ष रूप से प्रश्न किया जायेगा ।

[5]मौत के समय यह कर्म पत्र लपेट दिये जाते हैं । फिर प्रलय के दिन हिसाब के लिये खोल दिये जायेंगे । जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति देख लेगा बल्कि हाथों में पकड़वा दिये जायेंगे ।

[6]अर्थात वह इस प्रकार उधेड़ दिये जायेंगे जैसे छत उधेड़ दी जाती है ।

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾

(१३) तथा जब स्वर्ग निकट कर दिया जायेगा।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

(१४) तो उस दिन प्रत्येक व्यक्ति यह जान लेगा, जो कुछ लेकर आया होगा।[1]

فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾

(१५) मैं सौगन्ध खाता हूँ पीछे हटने वाले।

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾

(१६) चलने-फिरने वाले छिपने वाले सितारों की।[2]

وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾

(१७) तथा रात्रि की जब जाने लगे।[3]

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾

(१८) तथा प्रात: की जब चमकने लगे।[4]

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾

(१९) नि:संदेह यह एक महान सन्देष्टा का कथन है।[5]

---

[1]यह उत्तर है अर्थात जब उपरोक्त विषय प्रकाश में आ जायेंगे जिनमें से प्रथम छ: का सम्बन्ध संसार से है तथा दूसरे छ: का परलोक से उस समय प्रत्येक के आगे इसकी वास्तविकता आ जायेगी।

[2]इससे अभिप्राय सितारे हैं خُنَّس यह خَنَس से है। जिसका अर्थ पीछे हटना है यह सितारे दिन के समय अपने दर्शन से पीछे हट जाते हैं, तथा दिखाई नहीं देते। तथा यह शनिग्रह, वृहस्पति, मंगलग्रह, शुक्रग्रह, बुधग्रह है यद विशेष रूप से सूर्य की दिशा में होते हैं। कुछ कहते हैं कि सभी ग्रहें अभिप्राय हैं। क्योंकि सब अपने छिपने के स्थान पर छिप जाते हैं अथवा दिन में छुपे रहते हैं। الجوار चलने वाले, الكُنَّس छिप जाने वाले, जैसे हिरन अपने स्थान में छिप जाता है।

[3] عَسْعَس का दोनों अर्थ है आना तथा जाना। यह इन दोनों ही अर्थों में प्रयुक्त होता है। फिर भी यहाँ जाने के अर्थ में है।

[4]अर्थात उसका उदय हो जाये अथवा वह फट तथा निकल आये।

[5]इसलिये कि वह अल्लाह की ओर से लेकर आया है। तात्पर्य माननीय जिब्रील हैं।

ذِى قُوَّةٍ عِندَ ذِى ٱلْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢٠﴾

(२०) जो शक्तिशाली है[1] अर्श वाले (अल्लाह) के निकट सम्मानित है।

مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢١﴾

(२१) जिसका वहाँ (आकाशों पर आज्ञा का) पालन किया जाता है (वह) न्यासिक है।[2]

وَمَا صَاحِبُكُم بِمَجْنُونٍ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है।[3]

وَلَقَدْ رَءَاهُ بِٱلْأُفُقِ ٱلْمُبِينِ ﴿٢٣﴾

(२३) उसने उस (फ़रिश्ते) को आकाश के खुले किनारे पर देखा भी है।[4]

وَمَا هُوَ عَلَى ٱلْغَيْبِ بِضَنِينٍ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा यह परोक्ष की बातें बतानें में कंजूस भी नहीं हैं।[5]

---

[1]अर्थात जो काम उसको सौंपा जाये पूरी शक्ति से करता है।

[2]अर्थात फ़रिश्तों के बीच उसकी आज्ञा का पालन किया जाता है वह फ़रिश्तों का परिश्रय तथा अनुसरणीय है तथा प्रकाशना के संदर्भ में न्यासिक है।

[3]यह सम्बोधन मक्कावासियों को है तथा साथी से अभिप्राय रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* हैं अर्थात जो तुम सोंचते हो कि तुम्हारा सगोत्र सम देशी एवं साथी मोहम्मद *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* نَعُوذُ بِاللهِ दीवाना हैं तो ऐसा नहीं, तनिक क़ुरआन पढ़कर तो देखो क्या कोई पागल ऐसे ज्ञान तथा यर्थाथता का वर्णन कर सकता है तथा विगत समुदायों की सही-सही स्थिति बता सकता है जो इस क़ुरआन में वर्णित किये गये हैं।

[4]यह पहले गुज़र चुका है कि रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने माननीय जिब्रील को दो बार उनके मूल रूप में देखा है। जिनमें से एक की चर्चा यहाँ है। यह नबूअत के आरम्भिक समय की घटना है। उस समय जिबरील के छः सौ पर थे, जिन्होंने आकाश के किनारों (क्षितिज) को भर दिया दूसरी बार *'मेअराज'* के अवसर पर देखा। जैसाकि *सूरतुन नज्म* में विवरण गुज़र चुका।

[5]यह नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* के संदर्भ में स्पष्ट किया जा रहा है कि आप को जिन बातों की सूचना दी जाती है। जो आज्ञा तथा कर्तब्य आप को बतलाये जाते हैं इनमें से कोई बात आप अपने पास नहीं रखते, अपितु संदेश पहुँचाने के दायित्व का संवेदन करते हुए प्रत्येक बात तथा आदेश लोगों को पहुँचा देते हैं।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा यह (क़ुरआन) धिक्कृत शैतान का कथन नहीं ।[1]

فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) फिर तुम कहाँ जा रहे हो ।[2]

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

(२७) यह तो समस्त जगत वालों के लिए शिक्षापत्र है ।

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ﴿٢٨﴾

(२८) (विशेषरूप से उसके लिये,) जो तुममें से सीधे मार्ग पर चलना चाहे ।

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٩﴾

(२९) तथा तुम बिना समस्त जगत के प्रभु के चाहे कुछ नहीं चाह सकते ।[3]

सूरतुल इंफ़ितार-८२

سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ

सूरतुल इंफितार मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें उन्नीस आयतें हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ﴿١﴾

(१) जब आकाश फट जायेगा ।[4]

وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ﴿٢﴾

(२) तथा जब सितारे झड़ जायेंगे ।

---

[1]जिस प्रकार ज्योतिषयों के पास शैतान आते हैं तथा कुछ चोरी छिपे बातें अधूरे रूप में उन्हें वतला देते हैं क़ुरआन ऐसा नहीं है ।

[2]अर्थात क्यों इससे विमुख होते हो ? तथा उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते ?

[3]अर्थात तुम्हारी चाहत अल्लाह की दया पर निर्भर है जब तक तुम्हारी चाहत के साथ अल्लाह की इच्छा तथा दया भी सम्मिलित न हो उस समय तक तुम सीधा मार्ग नहीं अपना सकते । यह वही विषय है जो *आयत* ﴿اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ﴾ आदि में बयान हुआ है ।

[4]***सूरतुल इंफितार*** : अर्थात अल्लाह की आज्ञा तथा भय से फट जायेगा तथा फ़रिश्ते नीचे उतर आयेंगे ।

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝٣

(३) तथा जब समुद्र बह चलेंगे ।[1]

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۝٤

(४) तथा जब क़ब्रें (फाड़कर) उखाड़ दी जायेंगी ।[2]

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ۝٥

(५) उस समय प्रत्येक व्यक्ति अपने आगे भेजे हुए तथा पीछे छोड़े हुए (अर्थात अगले-पिछले कर्मों को) जान लेगा ।[3]

يَا أَيُّهَا الْإِنسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝٦

(६) हे मनुष्य ! तुझे अपने दयालु प्रभु से किस वस्तु ने बहकाया ।[4]

الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ۝٧

(७) जिस (प्रभु ने) तुझे पैदा किया[5] फिर

---

[1]तथा सब का जल एक ही समुद्र में एकत्रित हो जायेगा फिर अल्लाह पश्चिमी वायु को भेजेगा। जो इसमें आग भड़का देगी। जिससे आकाश तक विस्फोटक शोले उठेंगे।

[2]अर्थात समाधियों में से मुर्दे जीवित होकर बाहर निकल आयेंगे بُعْثِرَتْ उखेड़ दी जायेंगी अथवा उनकी मिट्टी पलट दी जायेगी।

[3]अर्थात जब उपरोक्त बातें घटित होंगी तो इंसान को अपने तमाम किये धरे का ज्ञान हो जायेगा । जो भी सत्कर्म अथवा कुकर्म उसने किया होगा वह आगे आ जायेगा पीछे छोड़े हुए कर्म से अभिप्राय अपने पीछे अपने कर्म तथा करतूत के अच्छे अथवा बुरे नमूने हैं । जो दुनियाँ में वह छोड़ आया। तथा लोग उस पर कार्यरत हैं। यह नमूने यदि अच्छे हैं तो उसके मरने के पश्चात जो भी उनके नमूने पर काम करेंगे। वह पुण्य उसे मिलता रहेगा । तथा यदि बुरे नमूने अपने पीछे छोड़ गया है तो जो भी उसे अपनायेगा उनका पाप भी उसे पहुँचता रहेगा। जिस के प्रयासोंसे वह बुरी नीति अथवा कार्य प्रचलित हुआ है।

[4]अर्थात किस चीज ने तुझे धोखे में डाल दिया कि तूने अपने प्रभु के साथ कुफ्र किया जिसने तुझे अस्तित्व प्रदान किया, तुझे समझ बूझ दी तथा जीवन हेतु तेरे लिए तैयार किये।

[5]अर्थात तुच्छ वीर्य से जबकि उससे पहले तेरा अस्तित्व नहीं था।

ठीक-ठाक किया[1] फिर (उचित रूप से) बराबर बनाया ।[2]

(८) जिस रूप में चाहा तुझे बना दिया तथा तुझे ढाला ।[3] — فِيٓ أَيِّ صُورَةٖ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ٨

(९) कदापि नहीं, अपितु तुम तो दण्ड तथा बदले के दिन को झुठलाते हो ।[4] — كَلَّا بَلۡ تُكَذِّبُونَ بِٱلدِّينِ ٩

(१०) नि:संदेह तुम पर रक्षक उच्चकोटि के — وَإِنَّ عَلَيۡكُمۡ لَحَٰفِظِينَ ١٠

(११) लिखने वाले निर्धारित (नियुक्त) हैं । — كِرَامٗا كَٰتِبِينَ ١١

(१२) जो कुछ तुम करते हो वे जानते हैं ।[5] — يَعۡلَمُونَ مَا تَفۡعَلُونَ ١٢

---

[1]अर्थात तुझे पूरा इंसान बना दिया । तू देखता है सुनता है समझ बूझ रखता है ।

[2]तुझे संतुलित, खड़ा तथा सुन्दर बनाया अथवा तेरे दोनों हाथों तथा पैरों एवं आँखों, कानों को बराबर बनाया । यदि तेरे अंगों में यह समानता एवं अनुकूलता न होती तो तेरा अस्तित्व बेढंगा होता । इसी रचना को अन्य स्थान पर أَحۡسَنِ تَقۡوِيمٖ से व्यंजित किया है ।

﴿لَقَدۡ خَلَقۡنَا ٱلۡإِنسَٰنَ فِيٓ أَحۡسَنِ تَقۡوِيمٖ﴾

[3]इसका एक भावार्थ तो यह है अल्लाह बच्चे को जिस समान चाहे कर दे । बाप के, माँ के अथवा मॉमू व चचा के । दूसरा अर्थ है वह जिस रूप में चाहे ढाल दे यहाँ तक की कुरूप जन्तु के समरूप भी पैदा कर सकता है । किन्तु यह उसका अनुग्रह तथा दया एवं कृपा है कि वह ऐसा नहीं करता तथा उत्तम मानवी रूप में ही पैदा करता है ।

[4] كَلَّا यह حَقًّا के अर्थ में भी हो सकता है । तथा काफिरों के उस आचरण का इंकार भी जो अल्लाह की दया तथा कृपा से धोके में लीन होने पर आधारित है । अर्थात इस अभिमान में ग्रस्त रहने का कोई औचित्य नहीं बल्कि मूल विषय यह है कि तुम्हारे दिलों में इस बात पर विश्वास नहीं है कि प्रलय होगी तथा वहाँ अच्छाई, बुराई का प्रतिकार (बदला) मिलेगा ।

[5]अर्थात तुम प्रतिफल तथा दण्ड का इंकार करते हो किन्तु तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम्हारा प्रत्येक कर्म तथा कथन अंकित किया जा रहा है । अल्लाह की ओर से फ़रिश्ते तुम पर निरीक्षक के रूप में नियुक्त हैं जो तुम्हारी प्रत्येक उस बात को जानते हैं जो

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿١٣﴾

(१३) नि:संदेह सदाचारी लोग (स्वर्ग के सुख-सुविधाओं तथा) उपलब्धियों से लाभान्वित होंगे।

وَإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ﴿١٤﴾

(१४) तथा निश्चित रूप से कुकर्मी लोग नरक में होंगे।[1]

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٥﴾

(१५) बदले वाले दिन उसमें जायेंगे।[2]

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ﴿١٦﴾

(१६) वे उसमें से कभी ग़ायब न हो पायेंगे।[3]

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿١٧﴾

(१७) तुझे कुछ पता भी है कि बदले का दिन क्या है ?

तुम करते हो मानो यह इंसान को चेतावनी है कि प्रत्येक कर्म तथा कथन से पहले तुम विचार कर लो। यह वही बात है जो पहले गुज़र चुकी है जैसे

﴿ إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ * مَا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴾

अर्थात एक फ़रिश्ता दायें तथा दूसरा उसके बायें बैठा हुआ है। मनुष्य जो बोलता है उसके पास निरीक्षक तैयार तथा उपस्थित है। (सूरत *क़ाफ़*-१७,१८) अर्थात लिखने के लिए। कहते हैं कि एक फ़रिश्ता नेकी तथा दूसरा बुराई लिखता है। तथा हदीसों एवं रिवायतों से विदित होता है कि दिन के दो फ़रिश्ते अलग तथा रात के दो फ़रिश्ते अलग हैं। आगे अच्छों तथा बुरों दोनों की चर्चा की जा रही है।

[1]जैसे (*अश्शूरा*-७) में फ़रमाया :

﴿ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ﴾

[2]अर्थात जिस पुण्य तथा दण्ड के दिन का वह इंकार कर रहे थे उसी नरक में अपने कर्मों के बदले प्रविष्ट होंगे।

[3]अर्थात कभी उससे विलग नहीं होंगे तथा उससे अनुपस्थित न होंगे बल्कि सदा उसी में रहेंगे।

ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿١٨﴾

(१८) मैं पुन: (कहता हूँ कि) तुझे क्या पता कि बदले (तथा दण्ड) का दिन क्या है ।[1]

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ۖ وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ ﴿١٩﴾

(१९) (वह है) जिस दिन कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के लिये किसी वस्तु का अधिकारी न होगा, तथा समस्त आदेश उस दिन अल्लाह के ही होंगे ।[2]

सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन-८३

سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ

सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन मक्का मे अवतरित हुई तथा इसमें छत्तीस आयतें हैं ।

---

[1]पुनरावृत्ति उसकी महानता तथा उस दिन की भयानकता को स्पष्ट करने के लिये है ।

[2]अर्थात संसार में तो अल्लाह ने सामियक रूप से इंसानों को कुछ कम तथा अधिक अधिकार के अंतर के साथ रखा है । किन्तु प्रलय के दिन सभी अधिकार पूर्णत: अल्लाह के पास होंगे । जैसे (सूरतुल *मोमिन*-१६) में फ़रमाया :

﴿ لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴾

इसी प्रकार नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी फूफी सफिया तथा पुत्री फ़ातिमा को कह दिया था । «لاَ أَملِكُ لَكُمْ مِنَ اللهِ شَيئًا»

(सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान)

तथा बनू हाशिम एवं बनू अब्दुल मुत्तलिब को भी फ़रमा दिया ।

« أَنْقِذُوا أَنفُسَكُم مِنَ النَّارِ وَاللهِ لَا أَملِكُ لَكُمْ مِنَ اللهِ شَيئًا »

(मुस्लिम उपरोक्त किताब, बुख़ारी, सूरतुश् शुअरा)

सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन : कुछ लोग इसे मक्की तथा कुछ मदनी क़रार देते हैं कुछ के विचार से मक्का तथा मदीना के बीच अवतरित हुई । इसके अवतरण के विषय में यह रिवायत है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मदीने में आये तो मदीना के लोग नाप-तौल में अति बुरे लोग थे अत: अल्लाह ने यह सूरत उतारा, जिसके बाद उन्होंने अपनी नाप-तौल सुधार ली (इब्ने माजा सर्ग व्यापार, नाप तथा तौल में पूरा देने का अध्याय)

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

وَيۡلٞ لِّلۡمُطَفِّفِينَ ١

(१) बड़ी बुराई है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिये।

ٱلَّذِينَ إِذَا ٱكۡتَالُواْ عَلَى ٱلنَّاسِ يَسۡتَوۡفُونَ ٢

(२) कि जब लोगों से नाप कर लेते हैं, तो पूरा-पूरा लेते हैं।

وَإِذَا كَالُوهُمۡ أَو وَّزَنُوهُمۡ يُخۡسِرُونَ ٣

(३) तथा जब उन्हें नाप कर अथवा तौल कर देते हैं, तो कम देते हैं।[1]

أَلَا يَظُنُّ أُوْلَٰٓئِكَ أَنَّهُم مَّبۡعُوثُونَ ٤

(४) क्या उन्हें अपने मरने के पश्चात जीवित हो उठने का विश्वास नहीं है।

لِيَوۡمٍ عَظِيمٖ ٥

(५) उस बड़े भारी दिन के लिए।

يَوۡمَ يَقُومُ ٱلنَّاسُ لِرَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ٦

(६) जिस दिन सभी लोग समस्त जगत के प्रभु के समक्ष खड़े होंगे।[2]

---

[1]अर्थात लेन तथा देन के अलग-अलग नाप रखना। इस प्रकार डाँडी मार कर नाप तथा तौल में कमी करना बहुत गंभीर नैतिक अपराध है। जिसका प्रभाव धर्म तथा परलोक में विनाश है। एक हदीस में है "जो समुदाय नाप-तौल में कमी करता है उस पर अकाल कड़ा परिश्रम तथा शासकों का अत्याचार आच्छादित कर दिया जाता है।" (इब्ने माजा न॰ ४०१९ इसे अलबानी ने अससहीह: में वर्णन किया है न॰ १०६)

[2]यह डंडी मार इस बात से नहीं डरते कि एक बड़ा भयानक दिन आने को है जिस में सभी लोग सर्वलोक के पालनहार के आगे खड़े होंगे जो सभी छिप्त बातों से अवगत है। अथवा अभिप्राय यह है कि यह काम वही लोग करते हैं जिन के दिलों में अल्लाह का भय तथा प्रलय का डर नहीं है। हदीसों में आता है कि जिस समय अल्लाह त्रिलोक के प्रभु के आगे खड़े होंगे तो पसीना इंसानों के आधे कानों तक पहुँचा होगा। (बुख़ारी व्याख्या *सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन*) एक अन्य रिवायत में है कि प्रलय के दिन सूर्य सृष्टि के इतने निकट होगा कि एक मील की मात्रा से भी कम दूरी होगी। (हदीस के रावी श्री सुलैम कहते हैं कि मील से धरती नापने का मील लिया है अथवा वह सलाई जिससे आँखों में सुरमा डाला जाता है अत: लोग अपने कर्मों के अनुसार पसीने में होंगे यह पसीना किसी की घुट्टियों तक किसी के घुटने तक किसी की कमर तक होगा तथा किसी के लिये यह

كَلَّآ إِنَّ كِتَٰبَ ٱلْفُجَّارِ لَفِى سِجِّينٍ ۝٧

(७) नि:संदेह कुकर्मियों का कर्म पत्र सिज्जीन में है।[1]

وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا سِجِّينٌ ۝٨

(८) तुझे क्या पता कि सिज्जीन क्या है ?

كِتَٰبٌ مَّرْقُومٌ ۝٩

(९) (यह तो) लिखी हुई किताब है।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ۝١٠

(१०) उस दिन झुठलाने वालों की बड़ी दुर्गति है।

ٱلَّذِينَ يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ ٱلدِّينِ ۝١١

(११) जो बदले एवं दण्ड के दिन को झुठलाते रहे।

وَمَا يُكَذِّبُ بِهِۦٓ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ۝١٢

(१२) उसे केवल वही झुठलाता है, जो सीमा उल्लंघन कर जाने वाला तथा पापी होता है।

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَٰتُنَا قَالَ أَسَٰطِيرُ ٱلْأَوَّلِينَ ۝١٣

(१३) जब उसके समक्ष हमारी आयतों का पाठ होता है, तो कह देता है कि यह पूर्वकालिक लोगों की कथायें हैं।[2]

كَلَّا ۖ بَلْ ۜ رَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّا كَانُوا۟

(१४) यह नहीं[3] ! अपितु उनके दिलों पर उनके

लगाम बना हुआ होगा अर्थात उसके मुँह तक होगा (सहीह मुस्लिम प्रलय तथा स्वर्ग का विशेषण, प्रलय के दिन की विशेषता का अध्याय)

[1] سِجِّين सिज्जीन कुछ कहते हैं कि سِجْن (कारागार) से है अर्थात जेल के समान एक तंग स्थान है। कुछ कहते हैं कि यह पाताल में एक स्थान है। जहाँ काफ़िरों बहुदेव वादियों तथा अत्याचारियों की आत्मायें तथा उनके कर्म पत्र एकत्रित तथा सुरक्षित होते हैं। इसलिए आगे उसे लिखित पुस्तक कहा है।

[2] अर्थात उसके पापों में तत्परता तथा सीमा का उल्लंघन इतना बढ़ गया है कि अल्लाह की आयतें सुनकर उस पर मनन-चिंतन की जगह उन्हें अगलों की कहानियाँ बतलाता है।

[3] अर्थात यह क़ुरआन कहानियाँ नहीं जैसाकि काफ़िर कहते तथा समझते हैं अपितु अल्लाह की वाणी तथा उसकी प्रकाशना है जो उसके रसूल पर जिब्रील अमीन द्वारा अवतरित हुई है।

يَكْسِبُونَ ⑭ कर्म के कारण मोरचा चढ़ गया है ।[1]

كَلَّآ إِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ⑮ (१५) यही नहीं, ये लोग उस दिन अपने प्रभु के दर्शन से भी वंचित रहेंगे ।[2]

ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ⑯ (१६) फिर ये लोग निश्चित रूप से नरक में झोंक दिये जायेंगे ।

ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ⑰ (१७) फिर कह दिया जायेगा यही है वह जिसे तुम झुठलाते रहे ।

كَلَّآ إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ⑱ (१८) अवश्य अवश्य सदाचारियों का कर्मपत्र इल्लीईन में है ।[3]

وَمَآ أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ⑲ (१९) तुझे क्या पता कि इल्लीईन क्या है ?

كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ⑳ (२०) (वह तो) लिखी हुई किताब है ।

يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ㉑ (२१) उसके निकट समीपवर्ती फ़रिश्ते उपस्थिति होते हैं ।

---

[1]अर्थात उनके दिल इस ईशवाणी के प्रति विश्वास इसलिये नहीं करते कि उनके दिलों पर पापों की अधिकता के कारण पर्दे पड़ गये हैं तथा मोरचे लग गये हैं । رَيْنٌ पापों की वह कलिमा है जो निरन्तर पाप करने के कारण उनके दिल पर छा जाता है । हदीस में है । बंदा जब पाप करता है तो उसके दिल पर एक काला धब्बा पड़ जाता है यदि तौबा (क्षमा याचना) कर लेता है तो वह कलिमा दूर कर दी जाती है तथा यदि तौबा के बजाये पाप पर पाप किये जाता है तो वह कलिमा बढ़ती जाती है यहाँ तक कि उसके पूरे दिल पर छा जाती है यह वह رَيْنٌ रैन है जिसकी चर्चा पवित्र क़ुरआन में है (तिर्मिजी *सूरतुल मुतफ़्फ़ेफ़ीन*, इब्ने माजा, किताबुज़ ज़ुहद, बाबु ज़िक्रिज़ जुनूबे, मुसनद अहमद २\२९७)

[2]इसके विपरीत ईमान वाले अल्लाह के दर्शन से सम्मानित होंगे ।

[3] عِلِّيِّين *इल्लीईन* عُلُوٌّ उलू (ऊँचाई) से है । यह *सिज्जीन* के विपरीत आकाशों में अथवा स्वर्ग या सिद्रतुल मुनतहा अथवा *अर्श* (अल्लाह के सिंहासन) के पास स्थान है जहाँ पुनीत लोगों की आत्मायें तथा उनके कर्मपत्र सुरक्षित होते हैं जिसके निकटवर्ती फ़रिश्ते उपस्थित रहते हैं ।

(२२) निश्चित रूप से सदाचारी लोग अति सुख में होंगे। إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾

(२३) मसहरियों पर (बैठे) देख रहे होंगे। عَلَى الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ﴿٢٣﴾

(२४) तो उनके मुख से ही सुखों की सुखदा को पहचान लिया जायेगा।[1] تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ﴿٢٤﴾

(२५) ये लोग अत्यन्त शुद्ध मदिरापान कराये जायेंगे।[2] يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ﴿٢٥﴾

(२६) जिसमें कस्तूरी की मुहर लगी होगी इच्छा करने वालों को उसी की ही इच्छा करनी चाहिये।[3] خِتَامُهُ مِسْكٌ ۚ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ﴿٢٦﴾

---

[1] जिस प्रकार दुनियाँ के सम्पन्न लोगों के चेहरे पर साधारणतः ताज़गी तथा हरियाली होती है जो उन सुख सुविधाओं का द्योतक होती है जो उन्हें प्रचुरता से प्राप्त होती है। इसी प्रकार स्वर्ग वासियों पर जो आदर-सम्मान तथा उपहारों की जो अधिकता होती होगी उसके प्रभाव उनके चेहरों पर भी दिखाई पड़ेंगे तथा अपनी सुन्दरता तथा शोभा तथा प्रकाश एवं ज्योंति से पहचान लिये जायेंगे कि वह स्वर्गीय हैं।

[2] رحيق *रहीक़* स्वच्छ था साफ मदिरा को कहते हैं जिसमें किसी वस्तु का मिश्रण न हो। مَخْتُوم मुद्रा लगी हुई। इसकी विशुद्धता की अधिक स्पष्टीकरण के लिये है। कुछ के विचार में यह मिश्रित के अर्थ में है अर्थात मदिरा में कस्तूरी का मिश्रण होगा जिससे उस का स्वाद दुगना तथा सुगन्ध अति स्फुर्ति दायक हो जायेगी, कुछ कहते हैं कि यह خَتْم *ख़त्म* से है अर्थात उसका अन्तिम घूँट कस्तूरी का होगा। कुछ خِتَام खिताम का अर्थ सुगन्ध करते हैं। ऐसी मदिरा जिसकी सुगन्ध कस्तूरी के समान होगी। (इब्ने कसीर) हदीस में भी यह शब्द आया है। नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने फ़रमाया : जिस मोमिन ने किसी प्यासे मोमिन को एक घूँट पानी पिलाया अल्लाह *(तआला)* क़ियामत के दिन उसे الرحيق المختوم पिलायेगा, जिसने किसी भूखे मोमिन को खाना खिलाया, अल्लाह *(तआला)* उसे स्वर्ग के फल खिलायेगा। जिसने किसी नंगे को वस्त्र पहनाया अल्लाह *(तआला)* उसे स्वर्ग का हरा वस्त्र पहनायेगा। (मुसनद अहमद ३\१३-१४)

[3] अर्थात सदाचारियों को ऐसे ही कर्मों में अग्रसर होना चाहिये जिसके बदले स्वर्ग तथा उसकी सुविधायें तथा सुख प्राप्त हैं जैसे *(अस्साफ़्फ़ात-६१)* में फ़रमाया :

﴿لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ﴾

وَمِزَاجُهُۥ مِن تَسْنِيمٍ ۝٢٧
(२७) तथा उसमें तस्नीम का मिश्रण होगा ।[1]

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۝٢٨
(२८) अर्थात वह जल श्रोत जिसका पानी निकटवर्ती लोग पीयेंगे ।

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ۝٢٩
(२९) नि:संदेह पापी लोग ईमान वालों का उपहास उड़ाया करते थे ।[2]

وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ۝٣٠
(३०) तथा उनके निकट से गुज़रते हुए कनखियों (एवं संकेत से) उनका अपमान करते थे ।[3]

وَإِذَا انقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انقَلَبُوا فَكِهِينَ ۝٣١
(३१) तथा जब अपनों की ओर लौटते तो दिल्लगी करते थे ।[4]

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ۝٣٢
(३२) तथा जब उन्हें देखते कहते कि नि:संदेह ये लोग गुमराह, (कुमार्ग) हैं ।[5]

---

[1] تَسْنِيم का अर्थ ऊँचाई है । ऊँट की कोहान जो उसके शरीर से ऊँची होती है उस سِنَام *सिनाम* कहा जाता है । क़ब्र के ऊँचा करने को भी تَسْنِيمُ الْقُبُور *तसनीमुल क़ुबूर* कहा जाता है । अर्थ यह है कि उसमें *तसनीम* नामक मदिरा का मिश्रण होगा । जो स्वर्ग के ऊपरी भागों से एक श्रोत द्वारा आयेगी यह स्वर्ग की सर्वोत्तम तथा उच्चतम मदिरा होगी ।

[2] यह उन्हें हीन समझकर उनका उपहास उड़ाते थे ।

[3] غَمْـز का अर्थ होता है पल्कों तथा भवों से संकेत करना अर्थात एक-दूसरे को पल्कों तथा भवों का इशारा करके उनकी अवहेलना तथा उनके धर्म पर व्यंग करते थे ।

[4] अर्थात ईमान वालों की चर्चा करके प्रसन्न होते तथा दिल्लगियाँ करते । दूसरा अभिप्राय इस का यह है कि जब अपने घरों को लौटते तो वहाँ सम्पन्नता तथा सुख-सुविधा उनका अभिनंदन करती तथा जो चाहते उन्हें मिल जाता इसके उपरान्त भी उन्होंने अल्लाह की कृतज्ञा नहीं दिखाई बल्कि ईमान वालों की अवहेलना तथा उन पर डाह करने में तत्पर रहे । (इब्ने कसीर)

[5] अर्थात एकेश्वरवादी बहुदेववादी की निगाह में तथा ईमान वाले काफ़िरों की दृष्टि में गुमराह (कुपथ) होते हैं। यही स्थिति आज भी है विपथ अपने को सत्यवादी तथा

وَمَآ أُرۡسِلُواْ عَلَيۡهِمۡ حَٰفِظِينَ ٣٣

(३३) ये उनपर रक्षक बनाकर तो नहीं भेजे गये ।[1]

فَٱلۡيَوۡمَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ مِنَ ٱلۡكُفَّارِ يَضۡحَكُونَ ٣٤

(३४) तो आज ईमानवाले उन काफ़िरों पर हँसेंगे ।[2]

عَلَى ٱلۡأَرَآئِكِ يَنظُرُونَ ٣٥

(३५) सिंहासन पर बैठे देख रहे होंगे ।

هَلۡ ثُوِّبَ ٱلۡكُفَّارُ مَا كَانُواْ يَفۡعَلُونَ ٣٦

(३६) कि अब इंकार करने वालों ने जैसा ये किया करते थे पूरा-पूरा बदला पा लिया ।[3]

सूरतुल इंशिक़ाक़-८४

سُورَةُ الانشِقَاق

सूरतुल इंशिक़ाक़ मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पच्चीस आयतें हैं ।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

إِذَا ٱلسَّمَآءُ ٱنشَقَّتۡ ١

(१) जब आकाश फट जायेगा ।[4]

सत्यवादी को कुमार्ग विश्वास कराते हैं यहाँ तक कि एक सर्वथा असत्य सम्प्रदाय अपने सिवा न किसी को मोमिन कहता है न समझता है ।

[1]अर्थात यह काफ़िर मुसलमानों पर निरीक्षक तो नहीं बनाकर भेजे गये है कि प्रत्येक समय मुसलमानों के कर्मों तथा स्थितियों को देखते रहें तथा उनपर टिप्पणी करते रहें । अर्थात जब इसके उत्तरदायी ही नहीं हैं तो फिर ऐसा क्यों करते हैं ।

[2]अर्थात जैसे काफ़िर दुनियाँ में ईमानवालों पर हँसते थे । क़यामत के दिन यह काफ़िर अल्लाह की पकड़ में होंगे तथा ईमान वाले उन पर हँसेंगे । उनको हँसी इस बात पर आयेगी कि यह कुमार्ग होने के उपरान्त हमको कुमार्ग समझते तथा हँसते थे । आज उनको पता चल गया कि कुमार्ग कौन थे ? तथा कौन इस योग्य था कि उस पर हँसा जाये ।

[3] ثُوِّبَ का अर्थ है أُثِيبَ बदला दिये गये । अर्थात क्या काफ़िरों को वह जो कुछ करते थे बदला दिया गया है ।

[4] **सूरतुल इंशिक़ाक़ :** अर्थात जब प्रलय घटित होगी ।

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝٢

(२) तथा अपने प्रभु के आदेश को सतर्क होकर सुनेगा ।[1] तथा उसी के योग्य वह है ।[2]

وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ۝٣

(३) तथा धरती (खींच कर) फैला दी जायेगी ।[3]

وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ۝٤

(४) तथा उसमें जो है उगल देगी तथा ख़ाली हो जायेगी ।[4]

وَ اَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝٥

(५) तथा अपने प्रभु के आदेश पर कान लगायेगी ।[5] तथा उसी के योग्य वह है।

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۝٦

(६) हे मनुष्य ! तू अपने प्रभु से मिलने तक यह प्रयत्न तथा समस्त कार्य एवं परिश्रम करके उससे मुलाकात करने वाला है ।[6]

---

[1]अर्थात अल्लाह उसकोफटने की आज्ञा देगा जिसे वह सुनेगा तथा उसका पालन करेगा।

[2]अर्थात उसको यही योग्य है कि सुने तथा पालन करे इसलिये कि वह सब पर प्रभुत्वशाली है तथा सब उसके आधीन हैं। उसकी आज्ञा से मुँह फेरने का किसका साहस हो सकता है ?

[3]अर्थात उसकी लम्बाई-चौड़ाई में अधिक विस्तार कर दिया जायेगा। अथवा अभिप्राय यह है कि उस पर जो पर्वत आदि हैं सब कण-कण करके धरती को साफ तथा समतल कर दिया जायेगा जिसमें कोई ऊँच-नीच नहीं रहेगा।

[4]अर्थात जो मुर्दे भूमि में गड़े हैं। सब जीवित होकर बाहर निकल आयेंगे। जो कोष उसके भीतर स्थित हैं वह उन्हें प्रकाशित कर देगी तथा स्वयं सर्वथा ख़ाली हो जायेगी।

[5]अर्थात फेंकने तथा खाली होने की जो आज्ञा दी जायेगी उसके अनुसार काम करेगी।

[6]यहाँ इंसान साधारण स्वरूप है जिसमें मुसलमान तथा काफ़िर सभी सम्मिलित हैं। كَدْح कद्‌ह, कड़े परिश्रम को कहते हैं वह श्रम अच्छे कामों के लिये हो अथवा बुरे के लिये । अभिप्राय यह है कि जब उपरोक्त चीज़े अस्तित्व मेआयेंगी अर्थात प्रलय आ जायेगी तो हे इंसान तूने जो भला अथवा बुरा काम किया होगा वह अपने सामनें पायेगा तथा तदानुसार तुझे भला व बुरा बदला मिलेगा। आगे उसका अधिक विवरण एवं स्पष्टीकरण है।

فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ ﴿٧﴾

(७) तो उस समय जिस व्यक्ति के दाहिने हाथ में कर्मपत्र दिया जायेगा।

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ﴿٨﴾

(८) उसका हिसाब तो अत्यन्त सरलता से लिया जायेगा।[1]

وَيَنقَلِبُ إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ مَسْرُورًا ﴿٩﴾

(९) तथा वह अपने परिवार वालों की ओर प्रसन्नता पूर्वक लौट आयेगा।[2]

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ وَرَآءَ ظَهْرِهِۦ ﴿١٠﴾

(१०) परन्तु जिस व्यक्ति का कर्मपत्र उसकी पीठ के पीछे से दिया जायेगा।

فَسَوْفَ يَدْعُوا۟ ثُبُورًا ﴿١١﴾

(११) तो वह मृत्यु को बुलाने लगेगा।[3]

---

[1]सरल हिसाब यह है कि मोमिन का कर्मपत्र प्रस्तुत किया जायेगा उसके दोष भी उसके सामने लाये जायेंगे फिर अल्लाह अपनी दयालुता एवं अनुग्रह से उसे क्षमा कर देगा। आदरणीया आयशा फ़रमाती हैं कि रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने फ़रमाया : जिसका हिसाब लिया गया वह बर्बाद हो गया। मैंनें कहा हे अल्लाह के रसूल ! अल्लाह मुझे आप पर बलिदान करे, क्या अल्लाह ने नहीं फ़रमाया कि जिसके दायें हाथ में कर्मपत्र दिया गया उसका हिसाब सहज होगा। (आदरणीय आयशा का प्रयोजन यह था कि इस आयत के अनुसार तो मोमिन का भी हिसाब होगा किन्तु वह विनाश से दोचार नहीं होगा)। आपने स्पष्ट किया "यह तो पेशी है" अर्थात मोमिन के साथ हिसाब का मामला नहीं होगा एक सरसरी पेशी होगी। मोमिन प्रभु के आगे प्रस्तुत किये जायेंगे जिससे पूछताछ हुई वह मारा गया। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूरतुल इंशिक़ाक़*) एक और रिवायत में है। आदरणीय आयशा फ़रमाती हैं, नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* अपनी कुछ नमाज़ में यह दुआ पढ़ते थे . «اللَّهُمَّ حَاسِبْنِي حِسَابًا يَسِيرًا» (अल्लाह मेरा हिसाब सहज करना) नमाज से अवकाश के समय में मैंने पूछा, हिसाबे यसीर (सहज हिसाब) का क्या अभिप्राय है ? फ़रमाया अल्लाह उसका कर्मपत्र देखेगा फिर उसे क्षमा कर देगा (मुसनद अहमद ६\४८

[2]अर्थात जो उसके घर वालों में से स्वर्गीय होंगे। अथवा उससे अभिप्राय हूरें (स्वर्ग की नारियाँ) तथा बालक हैं जो सेवा के लिये स्वर्ग में मिलेंगे।

[3] ثُبُورًا विनाश, हानि अर्थात वह चीखे पुकारेगा तथा हाय-हाय करेगा कि मैं तो मारा गया।

وَيَصۡلَىٰ سَعِيرًا ﴿١٢﴾

(१२) तथा भड़कते हुए नरक में प्रवेश करेगा।

إِنَّهُۥ كَانَ فِيٓ أَهۡلِهِۦ مَسۡرُورًا ﴿١٣﴾

(१३) यह व्यक्ति अपने सम्बन्धियों में (संसार में) प्रसन्न था।[1]

إِنَّهُۥ ظَنَّ أَن لَّن يَحُورَ ﴿١٤﴾

(१४) उसका विचार था कि अल्लाह की ओर लौटकर ही न जायेगा।[2]

بَلَىٰٓۚ إِنَّ رَبَّهُۥ كَانَ بِهِۦ بَصِيرًا ﴿١٥﴾

(१५) यह कैसे होसकता है।[3] यद्यपि उसका प्रभु उसे भली प्रकार देख रहा था।[4]

فَلَآ أُقۡسِمُ بِٱلشَّفَقِ ﴿١٦﴾

(१६) मुझे संध्या की लालिमा की सौगन्ध।[5]

وَٱلَّيۡلِ وَمَا وَسَقَ ﴿١٧﴾

(१७) तथा रात्रि की एवं उसकी एकत्रित[6] वस्तुओं की सौगन्ध।

---

[1]अर्थात दुनियाँ में अपनी आकांक्षाओं में मग्न था तथा अपने परिवार में बहुत प्रसन्न था।

[2]यह उसके प्रसन्न होने का कारण है अर्थात आख़िरत (परलोक) के प्रति उसका विश्वास नहीं था। حَـوْرٌ का अर्थ है लौटना जैसे नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* की दुआ (प्रार्थना) है «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْحَوْرِ بَعْدَ الْكَوْرِ». (सहीह मुस्लिम, अलहज्ज, बाबु मा यकूलु इज़ा रकिबा इला सफरिल हज्ज आदि तिर्मिज़ी, इब्ने माजा) मुस्लिम में शब्द कौन है, अभिप्राय है इस बात से मैं शरण चाहता हूँ कि ईमान के पश्चात कुफ्र तथा आज्ञा पालन के पश्चात अवज्ञा अथवा भलाई के बाद बुराई की ओर पलटूँ।

[3]एक अनुवाद उसका यह है कि यह कैसे हो सकता है कि वह न लौटे तथा पुन: जीवित न हो अथवा بَلَىٰ क्यों नहीं। यह अवश्य अपने प्रभु की ओर पलटेगा।

[4]उसका कोई कर्म छिपा नहीं था।

[5]*शफ़क़* उस लालिमा को कहते हैं जो सूर्यास्त के पश्चात आकाश में प्रकट होती है तथा ईशा का समय आरम्भ होने तक रहती है।

[6]अंधेरा होते ही प्रत्येक वस्तु अपने विश्रामस्थल तथा निवासस्थान की ओर एकत्र तथा सिमट जाती है अर्थात रात का अंधेरा चीज़ों को अपने दामन में समेंट लेता है।

وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾

(१८) तथा पूर्ण चन्द्रमा की सौगन्ध ।[1]

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ﴿١٩﴾

(१९) निःसंदेह तुम एक स्थिति से दूसरी स्थिति में पहुँचोगे ।[2]

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠﴾

(२०) उन्हें क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते ।

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ﴿٢١﴾

(२१) तथा जब उनके पास क़ुरआन पढ़ा जाता है तो सजदा नहीं करते ।[3]

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ ﴿٢٢﴾

(२२) बल्कि जिन्होंने कुफ़्र किया वह झुठला रहे हैं ।[4]

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा अल्लाह *(तआला)* भली प्रकार जानता है, जो कुछ ये दिलों में रखते हैं ।[5]

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٤﴾

(२४) उन्हें कष्टदायी यातनाओं की शुभसूचना सुना दे ।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿٢٥﴾

(२५) परन्तु ईमान वालों तथा सदाचारियों को अगणित एवं अनन्त बदला दिया जायेगा ।

---

[1] إِذَا اتَّسَقَ का अर्थ है जब वह पूर्ण हो जाये जैसे वह तेरहवीं की रात से सोलहवीं तिथि तक की रात में रहता है ।

[2] طَبَق का मूल अर्थ कठिनाई है यहाँ अभिप्राय वह कठिनाईयाँ हैं जो प्रलय के दिन घटित होंगी अर्थात उस दिन एक से बढ़कर एक अवस्था आयेगी (फ़तहुल बारी तफ़सीर सूरतिल इंशिक़ाक़) यह सौगन्ध का उत्तर है ।

[3] हदीसों से यहाँ नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* तथा सहाबा का सजदा करना सिद्ध है ।

[4] अर्थात ईमान लाने के विपरीत झुठलाते हैं ।

[5] अर्थात झुठलाया या जो कार्य वह छुपकर करते हैं ।

सूरतुल बुरूज-८५

سُورَةُ الْبُرُوجِ

सूरतुल बुरूज मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें बाईस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ①

(१) बुर्जों वाले आकाश की सौगन्ध।[1]

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ②

(२) वायदा किये हुए दिन की सौगन्ध।[2]

وَشَاهِدٍ وَمَشْهُودٍ ③

(३) उपस्थिति होने वाले तथा उपस्थिति किये गये की सौगन्ध।[3]

قُتِلَ أَصْحَابُ الْأُخْدُودِ ④

(४) (कि) खाई वाले मारे गये।[4]

सूरतुल बुरूज : नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* *जोहर* तथा *असर* में *सूरतुत्तारिक* तथा *सूरतुल बुरूज* पढ़ते थे। (तिर्मिजी)

[1] بُرُوج यह بُرْج (भवन का गुंबद) का बहुवचन है بُرْج का मूल अर्थ है प्रकटन, यह सितारों के गंतव्य हैं जिन्हें उनके भवन की हैसियत प्राप्त है प्रकट तथा प्रकाशित होने के कारण उन्हें बुरूज कहा जाता है विवरण के लिये देखिये अलफ़ुरक़ान ६१ का भाष्य। कुछ ने बुरूज से अभिप्राय सितारे लिये हैं अर्थात सितारों वाले आकाश की सौगन्ध। कुछ के विचार में इससे आकाश के द्वार अथवा चाँद के गंतव्य अभिप्राय है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] इसका सर्वसम्मति से प्रलय का दिन अभिप्राय है।

[3] شَاهِدٍ तथा مَشْهُود की व्याख्या में बड़ा मतभेद है। इमाम शौकानी ने हदीसों तथा लक्षणों के आधार पर कहा है कि शाहिद से अभिप्राय जुमआ (शुक्रवार) का दिन है। इस दिन जिसने जो कर्म किया होगा यह प्रलय के दिन उसकी गवाही देगा तथा मशहूद से अर्फा (९ जिल हिज्जा) का दिन है। जहाँ लोग हज के लिये एकत्र तथा उपस्थित होते हैं।

[4] अर्थात जिन लोगों ने खाईयाँ खोदकर उसमें प्रभु के मानने वालों का विनाश किया उनके लिये विनाश तथा बर्बादी है। قُتِلَ का अर्थ है لُعِنَ

(५) वह एक अग्नि थी ईंधन वाली ।[1] — النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ۝

(६) जबकि वह लोग उसके आसपास बैठे थे ।[2] — إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ۝

(७) तथा मुसलमानों के साथ जो कर रहे थे उसको अपने समक्ष देख रहे थे । — وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ۝

(८) ये लोग उन मुसलमानों से किसी अन्य पाप का बदला नहीं ले रहे थे, अतिरिक्त इसके कि वे अत्यन्त प्रभावशाली प्रशंसा योग्य अल्लाह की शक्ति पर ईमान लाये थे ।[3] — وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَن يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝

---

[1] الأخدود، النار से सम्बन्धित बदल है ذات الوقود यह النار का विशेषण है अर्थात यह खाईयाँ क्या थीं ? ईंधन वाली अग्नि थीं जो ईमान वालो को उसमें झोकनें के लिये दहकाई गयीं थीं ।

[2]काफिर राजा तथा उसके कार्यकर्ता आग के किनारे उपस्थित ईमान वालों के जलने का खेल देख रहे थे जैसाकि आगामी आयत में है ।

[3]अर्थात उन लोगों का अपराध जिनको आग में झोंका जा रहा था यह था कि वह प्रभुत्वशाली अल्लाह पर ईमान लाये थे इस वाक्य का विवरण जो सहीह हदीसों से सिद्ध है यह है ।

खाई वालों की कथा : विगत युग में एक राजा का एक जादूगर था । जब वह बूढ़ा हो गया तो राजा से कहा । मुझे एक चतुर बालक दो जिसे मैं अपना ज्ञान सिखा दूँ । राजा ने एक चतुर बालक खोज कर उसे सौंप दिया । बालक के मार्ग में एक राहिब (संत) का भी घर था यह बालक आते-जाते उसके पास भी जाता था और उसकी बातें सुनता जो उसे भली लगती । इसी प्रकार यह क्रम चलता रहा एक बार बालक जा रहा था कि मार्ग में एक वहुत बड़े जानवर (सिंह अथवा सर्प) लोगों का मार्ग रोके हुए था । बालक ने सोंचा आज मैं पता करता हूँ कि जादूगर सही है अथवा राहिब ? उसने एक पत्थर लिया तथा कहा हे अल्लाह ! यदि राहिब का मामला तेरे निकट जादूगर के मामले से उत्तम तथा प्रिय है तो इस जानवर को मार दे ताकि लोगों की यातायात चालू हो जाये । यह कहकर उसने पत्थर मारा तथा जानवर मर गया । बालक ने यह वाक्य राहिब को वताया राहिब ने कहा बेटा अब तुम निपुण हो गये हो अब तुम्हारी परीक्षा का आरम्भ होना है किन्तु इस परीक्षा के समय मेरा नाम न बतलाना । यह बालक जन्म से अंधे तथा

الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ؕ ⑨	(९) जिसके लिये आकाशों तथा धरती का राज्य है तथा अल्लाह (तआला) सर्वव्याप्त तथा भली प्रकार परिचित है।
اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ؕ ⑩	(१०) नि:संदेह जिन लोगों ने मुसलमान पुरूषों एवं महिलाओं को प्रताड़ित किया, फिर क्षमा भी न माँगी, उनके लिये नरक की यातना है तथा जलने की यातना है।
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ	(११) नि:संदेह ईमान स्वीकार करने वालों एवं पुण्यकारी कार्य करने वालों के लिए वे

कोढ़ी आदि का उपचार भी करता था किन्तु अल्लाह पर ईमान लाने की शर्त के साथ इसी शर्त पर उसने राजा के एक अन्धे साथी की आँखें भी अल्लाह से दुआ करके सही कर दी। यह बालक यही कहता था यदि तुम ईमान लाओगे तो मैं अल्लाह से प्रार्थना करूँगा, वह स्वस्थ कर देगा। तथा अल्लाह उसकी प्रार्थना से स्वस्थ कर देता। यह सूचना राजा को पहुँची तो वह बड़ा व्याकुल हुआ कुछ ईमान वालों को तो उसने हत कराया। इस बालक के विषय में कुछ लोगों से कहा कि इसे पर्वत की शिखा पर ले जाकर नींचे फेंक दो। उसने अल्लाह से दुआ की पहाड़ में कम्प उत्पन्न हुई। जिससे वह सब गिर कर मर गये तथा अल्लाह ने उसे बचा लिया। राजा ने उसे दूसरे लोगों को सौंपा। कहा कि एक नवका में ले जाकर इसे समुद्र के बीच फेंक दो। वहाँ भी इसकी दुआ से नवका उलट गई जिससे वे सब डूब गये तथा वह बच गया। उस बालक ने राजा से कहा यदि तू मुझे मारना चाहता है तो उसकी विधि यह है कि एक खुले मैदान में लोगों को एकत्र कर तथा بِسْمِ اللّٰهِ رَبِّ هٰذَا الْغُلَامِ कहकर मुझे तीर मार। राजा ने यही किया। जिससे बालक मर गया किन्तु सब लोग पुकार उठे कि हम बालक के प्रभु पर ईमान लाये। राजा और व्यग्र हुआ। तथा उसने खाइयाँ खुदवाई उनमें आग जलवाई तथा आदेश दिया कि जो ईमान से न फिरे उसे आग में फेंक दो। ऐसे ईमान वाले आते तथा आग में झोंके जाते रहे यहाँ तक की एक स्त्री आई जिसके साथ बच्चा था। वह कुछ झिझकी। बच्चा वोल पड़ा। माँ धैर्य रख तू सत्य पर है (सहीह मुस्लिम संक्षेपत:, किताबुज जुहद वर रिक़ाक़, बाबु क़िस्सते असहाबुल उखदूद) इमाम इब्ने कसीर ने और भी वाक्य वर्णित किये हैं जो इससे भिन्न हैं तथा कहा है संभव है यह भिन्न घटनायें भिन्न स्थानों पर हुई हों (विस्तार के लिए देखिये तफ़सीर इब्ने कसीर)

ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ۝١١

बाग़ हैं जिनके नीचे (शीतल जल की) सरितायें प्रवाहित हैं। यह बड़ी सफलता है।

اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ۝١٢

(१२) नि:संदेह तेरे प्रभु की पकड़ अत्यन्त शक्तिशाली है।[1]

اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ۝١٣

(१३) वही प्रथम बार पैदा करता है तथा वही पुन: जीवित करेगा।[2]

وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۝١٤

(१४) वह अत्यन्त क्षमाशील तथा अत्यधिक प्रेम करने वाला है।

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ۝١٥

(१५) अर्श का स्वामी महान है।[3]

فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝١٦

(१६) जो चाहे उसे कर देने वाला है।[4]

---

[1]जब वह अपने इन शत्रुओं की पकड़ करने पर आये जो उसके रसूलों को झुठलाते तथा उसकी आज्ञा का विरोध करते हैं तो फिर उसकी पकड़ से कोई उन्हें बचा नहीं सकता।

[2]अर्थात वही अपने सामर्थ्य तथा शक्ति से प्रथम बार पैदा करता है फिर प्रलय के दिन पुर्नजीवन प्रदान करेगा जैसे प्रथम पैदा किया था।

[3]अर्थात पूरी सृष्टि से महान तथा उच्चतम है। तथा अर्श जो सर्वोपरि है वह उसका आसन है जैसा कि सहाबा तथा ताबईन एवं मुहद्दिसीन का विश्वास है الْمَجِيد दयानिधि यह स्वर की मात्रा के साथ ذُو अर्थात स्वामी का विशेषण है अर्श का नहीं। यद्यपि कुछ लोग इसे अर्श का विशेषण मान कर इसे इ की मात्रा के साथ पढ़ते हैं अर्थ दोनों रूप में सहीह है। (इब्ने कसीर)

[4]अर्थात वह जो चाहे कर गुज़रता है उसकी आज्ञा तथा चाहत को कोई टाल नहीं सकता न उससे कोई पूछ सकता है। आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक़ से किसी ने उनके मृत्यु रोग के समय प्रश्न किया। क्या किसी वैद्य ने आप को देखा ? उन्होंने उत्तर दिया, हाँ-प्रश्न किया कि उसने क्या कहा ? फ़रमाया उसने कहा है"إِنِّي فَعَّالٌ لِّمَا أُرِيدُ" (मैं जो चाहूँ करूँ मेरे मामले में कोई हस्तक्षेप करने वाला नहीं। (इब्ने कसीर) अभिप्राय यह है कि अब मामला वैद्यों के हाथों में नहीं रहा मेरा अन्तिम समय आ गया है अब अल्लाह ही मेरा वैद्य है जिसकी चाहत को टालने की किसी में शक्ति नहीं।

هَلْ أَتٰىكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ﴿١٧﴾

(१७) तुझे सेनाओं की सूचना भी मिली है ।[1]

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ﴿١٨﴾

(१८) अर्थात फ़िरऔन तथा समूद की ।

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ﴿١٩﴾

(१९) (कुछ नहीं) अपितु काफ़िर तो झुठलाने में पड़े हुए हैं ।

وَاللَّهُ مِن وَرَائِهِم مُّحِيطٌ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा अल्लाह (तआला) भी उन्हें प्रत्येक ओर से घेरे हुए है ।[2]

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ﴿٢١﴾

(२१) बल्कि यह क़ुरआन है अत्यन्त महिमा वाला ।

فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ﴿٢٢﴾

(२२) सुरक्षित पुस्तक में लिखा है ।[3]

सूरतुत्तारिक़-८६

سُورَةُ الطَّارِقِ

सूरतुत्तारिक़ मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें सतरह आयतें हैं ।

---

[1]अर्थात जब उन पर मेरा प्रकोप आया तथा मैंने उन्हें अपनी पकड़ में ले लिया । जिसे कोई टाल नहीं सका ।

[2]यह ﴿إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ﴾ ही का प्रमाण तथा उसी पर बल है ।

[3]अर्थात लौहे महफ़ूज (सुरक्षित पट्टिका) में लिखा हुआ है जहाँ फ़रिश्ते उसकी सुरक्षा पर नियुक्त हैं अल्लाह (तआला) आवश्यकता तथा अभिपाचन के अनुसार उतारता है ।

सूरतुत्तारिक़ : आदरणीय ख़ालिद उदवी ने कहा कि मैंने रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सक़ीफ़ के बाज़ार में धनुष अथवा लाठी के सहारे खड़े देखा । आप उनके पास उनसे सहायता लेने आये थे । वहाँ मैंने आप से सूरतुत्तारिक़ सुनी । तथा मैंने उसे याद कर लिया । जब कि मैं अभी मुसलमान नहीं हुआ था फिर मुझे अल्लाह ने इस्लाम से सम्मानित किया तथा इस्लाम की अवस्था में मैंने उसे पढ़ा, (मुसनद अहमद ४\३३५ मजमउज़ ज़्वायेद ७\१३६) माननीय मुआज़ (रज़ी अल्लाहु अन्हु) एक बार नमाज़ में *सूरतुल बक़रः* तथा *अननिसा* पढ़ी । नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ख़बर मिली तो फ़रमाया तू लोगों को उपद्रव में डालता है, तुझे तोयही बहुत था कि وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ तथा وَالشَّمْسِ जैसी सूरतें पढ़ता (नसाई किताबुल इफ़तेताह, बाबुल किराअते फ़िल मग़रिब)

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है। بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

(१) सौगन्ध है आकाश की तथा अंधकार में प्रकाश प्रदान करने वाले की। وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۝١

(२) तुझे ज्ञात भी है कि वह रात्रि को प्रकट होने वाली वस्तु क्या है। وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۝٢

(३) वह प्रकाश वाला सितारा है।[1] النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝٣

(४) कोई ऐसा नहीं जिस पर रक्षक (फ़रिश्ते) न हों।[2] إِن كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝٤

(५) मनुष्य को देखना चाहिए कि वह किस वस्तु से बनाया गया है। فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝٥

(६) वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है।[3] خُلِقَ مِن مَّاءٍ دَافِقٍ ۝٦

---

[1]तारिक से क्या अभिप्राय है। क़ुरआन ने स्वयं स्पष्ट कर दिया प्रकाशमान सितारा। طَارِقٌबना है طُرُوقٌ से जिसका अर्थ खटखटाना है। किन्तु طَارِقٌ रात के आगंतुक के लिए प्रयुक्त होता है। तारों को भी तारिक इसी कारण कहा जाता है कि वह दिन को छुप जाते तथा रात को निकलते हैं।

[2]अर्थात प्रत्येक प्राणी पर अल्लाह की ओर से फ़रिश्ते नियुक्त हैं जो उसके भले-बुरे सभी कर्म लिखते हैं। कुछ कहते हैं कि यह इंसानों की सुरक्षा करने वाले फ़रिश्ते हैं जैसा कि *सूरतुर रअद* की आयत ११ से प्रतिपादित होता है कि इंसान की रक्षा के लिये भी उसके आगे-पीछे फ़रिश्ते होते हैं। जैसे कर्म तथा कथन लिखने वाले होते हैं।

[3]अर्थात वीर्य से। जो सहवास के अंत में तीव्रगति से निकलता है यही पानी की बूँदें (वीर्य) स्त्री के गर्भाशय में जाता है और जाकर यदि अल्लाह का आदेश होता है तो गर्भ का कारण बनता है।

يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ۝٧
(७) जो पीठ तथा छाती के मध्य से निकलता है ।[1]

اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ۝٨
(८) नि:संदेह वह उसे फेर लाने पर अवश्य सामर्थ्य रखने वाला है ।[2]

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۝٩
(९) जिस दिन गुप्त भेदों की जाँच पड़ताल होगी ।[3]

فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ۝١٠
(१०) तो न कोई ज़ोर चलेगा उसका तथा न कोई सहायक होगा ।[4]

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝١١
(११) वर्षा वाले आकाश की सौगन्ध ।[5]

---

[1]कहा जाता है कि पीठ पुरूष की तथा वक्ष स्त्री का, इन दोनों के पानी से मनुष्य की उत्पत्ति होती है, परन्तु उसे एक ही पानी इसलिये कहा कि यह दोनों मिलकर एक ही हो जाता है । تَرَائِبُ बहुवचन है । تَرِيبَةٌ का सीने का वह भाग जो हार पहनने की जगह है ।

[2]अर्थात इंसान के मरने के पश्चात वह उसे पुन: जीवित करने का सामर्थ्य है कुछ के विचार में इसका अभिप्राय यह है कि वह इस पानी की बूँद को पुन: अंग में लौटनें पर सामर्थ्य रखता है जहाँ से वह निकला था । पहले भावार्थ को इमाम शौकानी तथा इमाम इब्ने जरीर तबरी ने अधिक सही माना है ।

[3]अर्थात प्रकट हो जायेंगे । क्योंकि उन पर पुण्य तथा दण्ड मिलेगा । बल्कि हदीस में आता है प्रत्येक विश्वासघाती के कूल्हे के पास झंडा गाड़ दिया जायेगा तथा यह घोषणा कर दी जायेगी कि अमुक पुत्र अमुक के साथ विश्वासघात किया है (सहीह बुखारी किताबुल जिजिया बाबु इसमिल गादिर लिल बर्रे वल फ़ाजिर, मुस्लिम किताबुल जिहाद वाबु तहरीमिल गद्रे) अभिप्राय यह है कि वहाँ किसी का कोई कर्म गुप्त नहीं रह जायेगा ।

[4]अर्थात न स्वयं इंसान के पास इतनी शक्ति होगी कि वह अल्लाह की यातना से बच जाये न किसी अन्य ओर से उसे कोई सहायक मिल सकेगा जो उसे अल्लाह की यातना से वचा ले ।

[5] رَجْعٌ का शाब्दिक अर्थ है, लौटना तथा पलटना । वर्षा भी बार-बार पलट-पलट कर होती है । इसलिए वर्षा को رَجْعٌ के शब्द से व्यंजित किया गया है । कुछ कहते हैं कि बादल समुद्रों से पानी लेता है फिर वही पानी समुद्र को पलटा देता है । अत: वर्षा को

(१२) तथा फटने वाली धरती की सौगन्ध ।[1]	وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾
(१३) नि:संदेह यह (क़ुरआन) अवश्य दो टूक निर्णय करने वाली भाषा है ।[2]	إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾
(१४) तथा यह हँसी की (तथा व्यर्थ की) बात नहीं ।[3]	وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾
(१५) परन्तु वे (काफ़िर) दाँव-घात में हैं ।[4]	إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ﴿١٥﴾
(१६) तथा मैं भी एक दाँव चल रहा हूँ ।[5]	وَأَكِيدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾

رَجْــع कहा जाता है। कुछ कहते हैं कि शुभ शगुन के लिये अरब वर्षा को رَجْع कहते थे ताकि वह बार-बार होती रहे। (फ़तहुल क़दीर)

[1]अर्थात धरती फटती है तो उससे पौधा बाहर निकलता है। धरती फटती है तो स्रोत प्रवाहित हो जाता है। इसी प्रकार एक दिन आयेगा कि धरती फटेगी तथा मुर्दे जीवित होकर बाहर निकल आयेंगे इसलिये धरती को फटने वाली कहा गया है।

[2]यह सौगन्ध का उत्तर है अर्थात खोलकर वर्णन करने वाला। जिससे सत्योसत्य में विवेक हो जाता है।

[3]अर्थात आमोद-प्रमोद तथा उपहास की चीज नहीं है هَزْل विलोम है جِدّ का, अर्थात एक स्पष्ट लक्ष्य की पुस्तक है खेलकूद के समान व्यर्थ नहीं है।

[4] अर्थात नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* जो धर्म लेकर आये हैं उसे विफल करने का षडयंत्र रचते हैं। अथवा नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* को धोखा देते हैं तथा मुँह पर ऐसी बातें करते हैं कि दिल में उसके विपरीत होता है।

[5]अर्थात उनकी चालों तथा षडयंत्रों से अचेत नहीं हूँ। मैं भी उनके विरूद्ध उपाय कर रहा हूँ। अथवा उनकी चालों का तोड़ कर रहा हूँ। كَيْد गुप्त योजना को कहते हैं जो बुरे उद्देश्य के लिए हो तो बुरी है तथा लक्ष्य भला हो तो बुरा नहीं।

(१७) तू काफ़िरों को अवसर दे,[1] उन्हें थोड़े दिनों के लिए छोड़ दे। فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝

सूरतुल आला-८७

سُوْرَةُ الْاَعْلٰى

सूरतुल आला मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें उन्नीस आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है। بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(१) अपने सर्वोच्च प्रभु के नाम की पवित्रता का वर्णन कर।[2] سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۝

---

[1]अर्थात उनके लिए तुरन्त प्रकोप की माँग न कर। अपितु उन्हें कुछ अवसर दे दे رُوَيْدًا:قَلِيلًا अथवा قَرِيبًا यह अवसर तथा समय देना भी काफ़िरों के लिये अल्लाह की ओर से एक उपाय स्वरूप है। जैसे (*अल-आराफ़-१८२,१८३*) में फ़रमाया :

﴿سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۚ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ﴾

सूरतुल आला : रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* यह सूरत तथा *सूरतुल गाशिया* ईदैन एवं जुमआ में पढ़ते थे। इसी प्रकार वित्र की प्रथम रक़अत में *सूरतुल आला*, दूसरी में *अलकाफ़िरून* तथा तीसरी मे *सूरतुल इख़लास* पढ़ते थे।

माननीय मुआज़ को जिन सूरतों के पढ़ने का निर्देश दिया था उनमें एक यह भी थी (सिहाह में यह सभी विवरण मौजूद हैं)

[2]अर्थात ऐसी चीज़ों से अल्लाह की पवित्रता जो उसके योग्य नहीं है। हदीस में आता है कि नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* इसके उत्तर में पढ़ा करते थे। سُبْحَانَ رَبِّيَ الأَعْلَى (मुसनद अहमद १\२३२ अबू दाऊद किताबुस सलात, बाबुद दुआ फ़िस सलाते, अलबानी ने सहीह कहा है)

(२) जिसने पैदा किया तथा सही एवं स्वस्थ बनाया ।[1]	الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٢﴾
(३) तथा जिसने अनुमान लगा कर निर्धारित किया फिर मार्ग दिखाया ।[2]	وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَىٰ ﴿٣﴾
(४) तथा जिसने ताज़ी घास पैदा की ।[3]	وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَىٰ ﴿٤﴾
(५) फिर उसने उसको (सुखा कर) काला कूड़ा कर दिया ।[4]	فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَىٰ ﴿٥﴾
(६) हम तुझे पढ़ायेंगे, फिर तू न भूलेगा ।[5]	سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنسَىٰ ﴿٦﴾
(७) परन्तु जो कुछ अल्लाह चाहे वह प्रकट एवं गुप्त को जानता है ।[6]	إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَىٰ ﴿٧﴾

---

[1]देखिये *सूरतुल इंफितार* का भाष्य न०७।

[2]अर्थात पुण्य तथा पाप की। इसी प्रकार जीवन हेतु की। यह मार्ग दर्शन सभी जीवों को प्रदान किया। قَدَّرَ का अर्थ है चीज़ों के प्रकार तथा विशेषता का अनुमान लगाकर इंसान का भी उसका मार्ग दर्शा दिया। ताकि इंसान उससे लाभ प्राप्त कर सके।

[3]जिसे जानवर चरते हैं।

[4]घास सूख जाये तो उसको غُثَاءً कहते हैं। أَحْوَىٰ काली कर दिया। अर्थात हरी घास सुखाकर हम काला कूड़ा कर देते हैं।

[5]जिब्रील *(अलैहिस्सलाम)* प्रकाशना लेकर आते तो आप जल्दी-जल्दी पढ़ने लगते ताकि भूल न जायें। अल्लाह *(तआला)* ने फ़रमाया : ऐसे शीघ्रता न करें अवतरित प्रकाशना हम आप को पढ़वायेंगे। अर्थात आप की ज़बान पर चालू कर देंगे। फिर आप उसे भूलेंगे नहीं। परन्तु जिसे अल्लाह चाहेगा। किन्तु अल्लाह ने ऐसा नहीं चाहा इसलिये आपको सब कुछ याद ही रहा। कुछ ने कहा कि इसका भावार्थ यह है कि जिसे अल्लाह निरस्त करना चाहेगा उसे आप को भुलवा देगा। (फ़तहुल क़दीर)

[6]यह साधारण है جَهْر क़ुरआन का वह भाग भी है जिसे रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* याद कर लें। तथा जोआप के सीने से मिटा दिया गया वह गुप्त है। इस प्रकार جَهْر उच्च स्वर से पढ़े छुप कर काम करे तथा खुलकर इन सबको अल्लाह जानता है।

(८) हम आपके लिए सरलता उत्पन्न कर देंगे ।[1]

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَىٰ ⑧

(९) तो आप शिक्षा देते रहें यदि शिक्षा कुछ लाभ दे ।[2]

فَذَكِّرْ إِن نَّفَعَتِ الذِّكْرَىٰ ⑨

(१०) डरने वाला तो शिक्षा ग्रहण कर लेगा ।[3]

سَيَذَّكَّرُ مَن يَخْشَىٰ ⑩

(११) (परन्तु) दुर्भाग्य पूर्ण उससे दूर रह जायेगा ।[4]

وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ⑪

(१२) जो बड़ी आग में जायेगा ।

الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَىٰ ⑫

---

[1]यह भी साधारण है उदाहरणार्थ हम आप पर प्रकाशना (वह्यी) सहज कर देंगे ताकि उसे याद करना तथा तदानुसार कर्म करना सरल हो जाये । हम आपको उस विधि का मार्ग दर्शायेंगे जो सरल होगा । हम स्वर्ग के कार्य आप के लिये सहज कर देंगे । हम आप के लिये ऐसे कर्म तथा कथन सरल कर देंगे जिन में भलाई हो तथा हम आप के लिये ऐसा धर्म विधान नियुक्त करेंगे । जो सरल-सीधा तथा संतुलित होगा । जिसमे कोई टेढ़ापन, संकुचन तथा तंगी नहीं होगी ।

[2]अर्थात शिक्षा तथा सदुपदेश वहाँ दें जहाँ प्रतीत हो कि लाभ दायक होगा यह शिक्षा-दीक्षा तथा सदुपदेश का एक नियम एवं रीति बता दिया है (इब्ने कसीर) इमाम शौकानी के विचार में भावार्थ यह है कि आप सदुपदेश देते रहें । क्योंकि सावधान करना तथा धर्म का प्रचार दोनों अवस्था में आपके लिये आवश्यक थी अर्थात أَوْ لَمْ تَنْفَعْ यहाँ लुप्त है ।

[3]अर्थात आप की शिक्षा से वह अवश्य शिक्षा ग्रहण करेंगे । जिनके दिलों में अल्लाह का भय होगा । उनमें अल्लाह के डर तथा अपने सुधार की भावना अधिक शक्तिशाली हो जायेगी ।

[4]अर्थात इस शिक्षा से लाभ नहीं प्राप्त कर सकेंगे क्योंकि उनका कुफ्र पर दुराग्रह तथा अल्लाह की अवज्ञा में तत्पर्ता प्रचलित रहती है ।

(१३) जहां फिर न वह मर सकेगा न जियेगा,[1] (बल्कि प्राण निकलने की अवस्था में पड़ा रहेगा)।

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿١٣﴾

(१४) नि:संदेह उसने सफलता प्राप्त कर ली, जो पवित्र हो गया।[2]

قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ ﴿١٤﴾

(१५) तथा जिसने अपने प्रभु का नाम याद रखा तथा नमाज़ पढ़ता रहा।

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ﴿١٥﴾

(१६) परन्तु तुम तो साँसारिक जीवन को श्रेष्ठता देते हो।

بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾

(१७) तथा परलोक अत्यन्त सुखद एवं स्थाई है।[3]

وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ﴿١٧﴾

---

[1]इसके विपरीत जो लोग मात्र अपने पापों का दण्ड भोगने के लिये सामायिक रूप से नरक में रह गये होंगे उन्हें अल्लाह (*तआला*) एक प्रकार मौत दे देगा, यहां तक की वह आग में जलकर कोयला हो जायेंगे। फिर अल्लाह अम्बिया आदि की सिफ़ारिश से उनको गरोहों के रूप में नरक से निकालेगा उनको स्वर्ग की नहर में डाला जायेगा। स्वर्गीय भी उन पर पानी डालेंगे। जिससे वह इस प्रकार जीवित हो जायेंगे जैसे बाढ़ के कूड़े पर अन्न उग आता है। (सहीह मुस्लिम किताबुल ईमान)

[2]जिन्होंने अपने आप को नैतिक पतन से तथा दिलों को *शिर्क* तथा अवैज्ञा की मलिनता से पवित्र कर लिया।

[3]क्योंकि दुनियां तथा उसकी प्रत्येक वस्तु नश्वर है जबकि परलोक का जीवन स्थाई तथा नित्य है इसलिये चतुर व्यक्ति नश्वर वस्तु को शेष रहने वाली पर प्रधानता नहीं देता।

إِنَّ هَٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ ﴿١٨﴾

(१८) ये बातें पूर्व की पुस्तकों में भी हैं।

صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ ﴿١٩﴾

(१९) (अर्थात) इब्राहीम तथा मूसा की किताबों में।

سُورَةُ الْغَاشِيَةِ

सूरतुल ग़ाशिया-८८

सूरतुल ग़ाशिया मक्का में अवरतित हुई तथा इसमें छब्बीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एव अत्यन्त कृपालु है।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ﴿١﴾

(१) क्या तुझे भी छिपा लेने वाली [(प्रलय) (क़ियामत)] की सूचना पहुँची है।[1]

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿٢﴾

(२) उस दिन बहुत से मुख अपमानित होंगे।[2]

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾

(३) (तथा) दुखों से पीड़ित कष्टों में होंगे।[3]

सूरतुल ग़ाशिया : कुछ रिवायत में है कि रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* जुमअः की नमाज में *सूरतुल जुमअः* के साथ *सूरतुल ग़ाशिया* पढ़ते थे (मुअत्ता इमाम मालिक; बाबुल क़िराअते फी सलातिल जुमुअः)

[1] هَـلْ अर्थ में है قد के غَاشِيَةٌ ग़ाशिया, से अभिप्राय प्रलय है। क्योंकि उसकी भयानकता पूरी सृष्टि को ढाँक लेगी।

[2] अर्थात काफ़िरों के चेहरे خَاشِعَةٌ झुके हुए तथा अपमानित होंगे जैसा नमाज़ी नमाज़ की अवस्था में अल्लाह के सामने विनम्रता तथा विनय के साथ झुके हुए होते हैं।

[3] نَاصِبَةٌ का अर्थ है थक कर चूर हो जाना अर्थात उन्हें इतनी कड़ी यातना होगी कि उनकी बुरी दशा होगी। इसका एक दूसरा भावार्थ यह है कि दुनियाँ में कर्म कर करके थके हुए होंगे। अर्थात बहुत कर्म करते रहे होंगे। किन्तु वह कर्म असत्य धर्मानुसार अथवा बिदअत पर आधारित होंगे इसलिए उपासना तथा कड़े कर्मों के उपरान्त भी नरक में जायेंगे। जैसाकि इस भावार्थ के कारण माननीय इब्ने अब्बास ने ﴿عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ﴾ से अभिप्राय इसाई लिया है। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूरतिल ग़ाशिया*)

تَصْلَىٰ نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾
(४) वे दहकती हुई अग्नि में जायेंगे।

تُسْقَىٰ مِنْ عَيْنٍ آنِيَةٍ ﴿٥﴾
(५) तथा अत्यन्त गर्म (उबलते हुए) स्रोत का पानी उनको पिलाया जायेगा।[1]

لَّيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِن ضَرِيعٍ ﴿٦﴾
(६) उनके लिए मात्र काँटेदार वृक्षों के अन्य कुछ खाना न होगा।[2]

لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِن جُوعٍ ﴿٧﴾
(७) जो न शरीर में वृद्धि करेगा तथा न भूख मिटायेगा।

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾
(८) बहुत से मुख उस दिन प्रसन्न एवं प्रफुल्लित होंगे।

لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾
(९) अपने कर्मों के कारण प्रसन्न होंगे।

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾
(१०) उच्च स्वर्ग में होंगे।

لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ﴿١١﴾
(११) जहाँ कोई अश्लील बात कान में न पड़ेगी।

فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾
(१२) जहाँ (शीतल) जल स्रोत प्रवाहित होंगे।

فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ﴿١٣﴾
(१३) (तथा) उसमें ऊँचे-ऊँचे सिंहासन होंगे।

وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ﴿١٤﴾
(१४) तथा प्याले रखे हुए (होंगे)।

وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ﴿١٥﴾
(१५) तथा एक पंक्ति में रखे हुए तकिये होंगे।

---

[1]यहाँ वह अति खौलता पानी अभिप्राय है जिसकी गर्मी चरम सीमा को पहुँची हो। (फ़तहुल क़दीर)

[2]यह एक काँटेदार झाड़ी है जिसके सूखने पर जानवर उसे खाना पसन्द नहीं करते। जो भी हो यह भी ज़क्कूम की भाँति एक अत्यन्त कड़ूवा दुर्गंधित, स्वादहीन अपवित्र खाना होगा जो न शरीर का अंश बनेगा न क्षुधा ही जायेगी।

وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ⑯

(१६) तथा कोमल कालीनें बिछी होंगी।[1]

أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ⑰

(१७) क्या ये ऊँटों को नहीं देखते कि वे किस प्रकार पैदा किये गये हैं।[2]

وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ⑱

(१८) तथा आकाशों को किस प्रकार ऊँचा किया गया है।[3]

وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ⑲

(१९) तथा पर्वतों की ओर, कि किस प्रकार गाड़ दिये गये हैं।[4]

---

[1]यह स्वर्गवासियों की चर्चा है जो नरकवासियों के विपरीत अति सुखी तथा प्रत्येक प्रकार की सुविधाओं के भागी होंगे। عَيْنٌ साधारण संज्ञा स्वरूप है। अर्थात अनेक जलस्रोत होंगे نَمَارِقُ (तकिये) के अर्थ में है। زَرَابِيُّ(मसनदें) कालीन, गद्दे, बिस्तर مَبْثُوثَةٌ फैली हुई। अर्थात यह मसनदें जगह-जगह बिछी होंगी। स्वर्गवासी जहाँ आराम करना चाहेंगे करेंगे।

[2]ऊँट अरब में साधारणत: थे तथा इन अरबों की अधिकतर सवारी यही थी। इसलिये अल्लाह ने उन्हीं की चर्चा करके फ़रमाया कि इनकी रचना पर विचार करो। अल्लाह ने उसे कितना बड़ा अस्तित्व प्रदान किया है तथा कितनी शक्ति एवं बल उसमें रखा है इसके उपरान्त भी वह तुम्हारे लिये नर्म तथा वशीभूत हैं। तुम उस पर जितना चाहो बोझ लादो वह इंकार नहीं करेगा। तुम्हारे आधीन होकर रहेगा। इसके सिवा इस का मांस तुम्हारे खाने के तथा उसका दूध तुम्हारे पीने के एवं उसका ऊन गर्मी प्रप्त करने के काम आता है।

[3]अर्थात कितनी ऊँचाई पर आकाश है। पाच सौ वर्ष की यात्रा की दूरी पर फिर भी बिना स्तम्भ के खड़ा है। उसमें कोई कटाव तथा टेढ़ापन नहीं है। साथ ही हमने उसको सितारों से अलंकृत किया है।

[4]अर्थात किस प्रकार उन्हें धरती पर खूँटों के समान गाड़ दिया गया ताकि धरती न हिले। साथ ही उसमें खनिज तथा अन्य लाभ हैं जो इसके सिवा हैं।

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा धरती की ओर, कि किस प्रकार बिछायी गयी है ।[1]

فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾

(२१) तो आप शिक्षा दे दिया करें (क्योंकि) आप केवल शिक्षा देने वाले हैं ।[2]

لَّسْتَ عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾

(२२) आप कुछ उन पर दारोग़ा तो नहीं है ।[3]

إِلَّا مَن تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾

(२३) परन्तु जो व्यक्ति विमुख हो तथा कुफ़्र करे ।

فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ﴿٢٤﴾

(२४) उसे अल्लाह (*तआला*) अत्यन्त कठोर यातना देगा ।[4]

---

[1]अर्थात किस प्रकार उसको बराबर करके मनुष्य के रहने योग्य बनाया है। वह उस पर चलता फिरता, व्यापार करता तथा ऊँचे भवन निर्माण करता है।

[2]अर्थात आप का कर्तव्य केवल शिक्षा देना एवं धर्म का प्रचार तथा आमंत्रण है इसके सिवा अथवा इससे अधिक नहीं।

[3]कि उन्हें ईमान पर लाने पर बाध्य करें। कुछ कहते हैं कि यह हिजरत से पहले का आदेश है । जो सैफ़ की आयत से निरस्त है। क्योंकि उसके पश्चात नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने फ़रमाया :

«أُمِرتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا : (لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ) فَإِذَا قَالُوهَا، عَصَمُوا مِنِّي دِمَآءَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ إِلَّا بِحَقِّهَا؛ وَحِسَابُهُمْ عَلَى اللهِ» .

मुझे आदेश दिया गया है कि लोगों से लड़ूँ यहाँ तक कि वह *ला एलाहा इल्लल्लाह* को स्वीकार कर लें । जब वह यह मान लेंगे तो उन्होंने मुझसे अपने रक्तों तथा मालों को बचा लिया सिवाय इस्लाम के अधिकार के। (जो यदि हमारे ज्ञान में न आया तो) उसका हिसाब अल्लाह के ऊपर है। (सहीह अलबुख़ारी, बाबु वजुबिज ज़कात, मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबुल अम्रे बि कितालिन्नासे हत्ता यक़ूलु---)

[4]अर्थात नरक की स्थाई यातना।

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾

(२५) नि:संदेह हमारी ओर उनको लौटाना है।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ﴿٢٦﴾

(२६) फिर नि:संदेह उनसे हिसाब लेना हमारा दायित्व है।[1]

सूरतुल फ़ज्र-८९

سُورَةُ الْفَجْرِ

सूरतुल फ़ज्र मक्का में अवतरित हुई इसमें तीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾

(१) सौगन्ध है फ़ज्र की।[2]

وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾

(२) तथा दस रातों की।[3]

وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾

(३) तथा सम एवं विषम की।[4]

---

[1]प्रसिद्ध है कि इसके उत्तर में اللَّهُمَّ حَاسِبْنَا حِسَابًا يَسِيرًا पढ़ा जाये यह दुआ तो नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* से सिद्ध है जो आप अपनी कुछ नमाजों में पढ़ते थे जैसाकि *सूरतुल इंशिक़ाक़* में गुज़रा किन्तु इसके उत्तर में यह पढ़ना आप से सिद्ध नहीं है।

[2]**सूरतुल फ़ज्र** : इससे अभिप्राय साधारण फ़ज्र है किसी विशेष दिन की फ़ज्र नहीं।

[3]इससे अधिकांश व्याख्याकारों के विचार में *"ज़िल हिज्जा"* की आरम्भिक दस रातें अभिप्राय हैं। जिनकी प्रधानता हदीसों में प्रमाणित है। नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने फ़रमाया *"ज़िल हिज्जा"* के दस दिनों में किये गये सत्कर्म अल्लाह को सर्वाधिक प्रिय हैं यहाँ तक की अल्लाह के मार्ग में जिहाद भी इतना प्रिय नहीं सिवाय उस जिहाद के जिसमें इंसान शहीद (बलिदान) ही हो जाये। (अल बुख़ारी किताबुल ईदैन, बाबु फ़ज़लिल अमले फी अय्यामित तशरीक़)

[4]इससे अभिप्राय सम तथा विषम संख्या है अथवा वह वस्तुऐं जो सम तथा विषम होती हैं। कुछ कहते हैं कि वास्तव में यह सृष्टि की शपथ है। क्योंकि सृष्टि सम (जोड़ा) अथवा विषम (अकेला) है। इसके सिवा नहीं (ऐसरूत तफ़ासीर)

وَالَّيْلِ إِذَا يَسْرِ ۝

(४) तथा रात्रि की जब वह चलने लगे ।[1]

هَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ ۝

(५) क्या उनमें बुद्धिमानों के लिए पर्याप्त सौगन्ध है ?[2]

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝

(६) क्या आपने नहीं देखा कि आपके प्रभु ने आदियों के साथ क्या किया ?[3]

إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝

(७) स्तम्भों वाले इरम के साथ ।[4]

---

[1]अर्थात जब आये तथा जब जाये क्योंकि سَيْرٌ (चलना) दोनों अवस्था में होता है आने में भी तथा जाने में भी ।

[2] ذَلِكَ से जिन चीज़ों की सौगन्ध खाई गई है उनकी ओर संकेत है । अर्थात क्या इनकी सौगन्ध बुद्धिमानों के लिये काफी नहीं है ? حِجْرٌ का अर्थ होता है रोकना मना करना । इंसानी बुद्धि भी उसे गलत कामों से रोकती है । इसलिये बुद्धि को भी حِجْرٌ हिज्र कहा जाता है । जैसे इसी अर्थ के आधार पर उसे نُهْيَةٌ भी कहते हैं । सौगन्ध का उत्तर لَتُبْعَثُنَّ है, क्योंकि मक्की सूरतों में आस्था के सुधार पर अधिक बल दिया गया है । कुछ के विचार से सौगन्ध का उत्तर आगे के शब्द ﴿إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ﴾ हैं । आगे प्रमाण स्वरूप कुछ उन जातियों की चर्चा की जा रही है जो झूठ लाने तथा विरोध करने के कारण नाश तथा ध्वस्त की गई थीं । उद्देश्य मक्कावासियों को सावधान करना है कि यदि तुमने हमारे रसूल को झुठलाया तो तुम्हें भी इसी प्रकार पकड़ा जा सकता है जैसे विग्त जातियों को पकड़ा ।

[3]उनकी ओर माननीय हूद ईशदूत बनाकर भेजे गये थे उन्होंने झुठलाया अन्तत: अल्लाह ने तीव्र हवा का प्रकोप उनपर उतारा जो निरन्तर सात रातें तथा आठ दिन चलती रहीं और उन्हें ध्वस्त कर दिया । (*अल-हाक़्क़:*,७-१०)

[4] إِرَمَ यह عَادٍ का वर्णन है अथवा उससे बदल है । यह आद जाति के दादा का नामहै । उनका वंशक्रम है, आद पुत्र औस पुत्र एरम पुत्र साम पुत्र नूह (फ़तहुल क़दीर) इसका उद्देश्य यह बताना है कि यह प्रथम आद है ذَاتِ الْعِمَادِ (स्तम्भों वाले) से संकेत उनकी शक्ति, बल तथा अतिकाय होने की ओर है ।

इसके सिवा वह भवन निर्माण में भी दक्ष थे । तथा अति दृढ़ मूल पर भव्य भवन निर्माण करते थे । ذَاتِ الْعِمَادِ में दोनों ही भावार्थ सम्मिलित हो सकते हैं ।

الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾

(८) जिनके जैसे लोग (अन्य किसी नगर तथा) देशों में पैदा नहीं किये गये ।[1]

وَثَمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾

(९) तथा समूदियों के साथ जिन्होंने घाटियों में बड़े-बड़े पत्थर काटे थे ।[2]

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ﴿١٠﴾

(१०) तथा फ़िरऔन के साथ जो खूँटों वाला था ।[3]

الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ﴿١١﴾

(११) उन सभी ने नगरों में सिर उठा रखा था ।

فَأَكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾

(१२) तथा बहुत उपद्रव मचा रखा था ।

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ﴿١٣﴾

(१३) अन्त में तेरे प्रभु ने उन सब पर प्रकोप का कोड़ा बरसाया ।[4]

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾

(१४) नि:संदेह तेरा प्रभु घात में है ।[5]

---

[1]उन जैसी अतिकाय तथा शक्तिशाली जाति कोई पैदा नहीं हुई । यह कहा करते थे ﴿مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً﴾ (*हा॰मीम॰सजदा*-१५) हमसे अधिक शक्तिशाली कौन है ?

[2]यह माननीय सालेह की जाति थी । अल्लाह ने उसे पत्थर तराशने की विशेष कला तथा शक्ति प्रदान की थी । यहाँ तक कि यह लोग पर्वतों को तराश कर उनमें अपने आवास वना लेते थे जैसाकि क़ुरआन ने (*अशशुअरा*-१४९) में कहा है ।

﴿وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَارِهِينَ﴾

[3]इसका अभिप्राय यह है कि भारी सेनाओं वाला था । जिसके पास खेमों की अधिकता थी जिन्हें खूँटे गाड़ कर खड़ा किया जाता था । अथवा उसकी क्रूरता एवं अत्याचार की ओर संकेत है कि खूँटों द्वारा उन्हें यातनायें देता था । (फ़तहुल क़दीर)

[4]अर्थात उन पर आकाश से अपना प्रकोप उतार कर उन्हें नष्ट तथा बर्बाद कर दिया । अथवा उन्हें शिक्षाप्रद परिणाम से मिला दिया ।

[5]अर्थात सब सृष्टि के कर्म देख रहा है तथा तदानुसार वह दुनियाँ में अच्छा बुरा बदला देता है

فَأَمَّا الْإِنسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾

(१५) मनुष्य (का यह हाल है) कि जब उसका प्रभु उसकी परीक्षा लेता है तथा मान तथा उपहार देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे प्रभु ने मेरा सम्मान किया ।[1]

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ﴿١٦﴾

(१६) तथा जब वह उसकी परीक्षा लेते हुए उसकी जीविका को कम कर देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे प्रभु ने मेरा अपमान किया ।[2]

كَلَّا بَل لَّا تُكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ﴿١٧﴾

(१७) ऐसा कदापि नहीं, [3] अपितु (बात यह है कि) तुम (ही) लोग अनाथों का आदर नहीं करते ।[4]

---

[1]अर्थात जब अल्लाह किसी को आजीविका तथा धन प्राचुर्य प्रदान करता है तो वह अपने विषय में इस भ्रम में पड़ जाता है कि अल्लाह उसपर बड़ा दयालु है जबकि यह प्राचुर्य परीक्षा तथा परख के लिये होता है ।

[2]अर्थात वह तंगी में डाल देता हैं तथा परीक्षा लेता है तो अल्लाह के बारे में मिथ्या संदेह करने लगता है ।

[3]अर्थात बात इस प्रकार नहीं है । जैसे लोग समझते हैं । अल्लाह धन अपने प्रिय बन्दों को भी देता है तथा अप्रिय लोगों को भी । तंगी में भी अपनों तथा परायों दोनों को ग्रस्त करता है । जब अल्लाह धन दे तो उसकी कृतज्ञता दिखाये, दरिद्रता आये तो धैर्य धारण करे ।

[4]अर्थात उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते जिसके वह पात्र हैं । नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) का कथन है । वह घर सबसे उत्तम है जिसमें अनाथ के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये तथा वह घर सबसे बुरा है जिसमें अनाथ के साथ दुर्व्यवहार किया जाये । फिर अपनी उंगली की ओर संकेत करके फरमाया मैं तथा अनाथ का पोशक स्वर्ग में इस प्रकार साथ-साथ होंगे जैसे यह दो उंगलियां साथ मिली हैं । (अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाबुन फी जम्मिल यतीमें)

وَلَا تَحٰٓضُّوۡنَ عَلٰى طَعَامِ الۡمِسۡكِيۡنِ ۝١٨

(१८) तथा निर्धनों को खिलाने की एक-दूसरे को प्रेरणा नहीं देते।

وَتَاۡكُلُوۡنَ التُّرَاثَ اَكۡلًا لَّمًّا ۝١٩

(१९) तथा (मृतकों का) उत्तराधिकार समेट-समेट कर खाते हो।[1]

وَّتُحِبُّوۡنَ الۡمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝٢٠

(२०) तथा धन से जी भरकर प्रेम करते हो।[2]

كَلَّاۤ اِذَا دُكَّتِ الۡاَرۡضُ دَكًّا دَكًّا ۝٢١

(२१) नि:संदेह जिस समय[3] धरती कूट-कूटकर बिल्कुल (बराबर) समतल कर दी जायेगी।

وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالۡمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝٢٢

(२२) तथा तेरा प्रभु (स्वयं) आ जायेगा तथा फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध होकर आ जायेंगे।[4]

وَجِاْىٓءَ يَوۡمَئِذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوۡمَئِذٍ

(२३) तथा जिस दिन नरक भी लाया जायेगा,[5] उस दिन मनुष्य शिक्षा ग्रहण

---

[1]अर्थात जिस प्रकार प्राप्त हो वैधानिक रूप से अथवा अवैधानिक لَمًّا का अर्थ جَمْعًا है।

[2] جَمًّا का अर्थ है अत्यधिक।

[3]अथवा तुम्हारा कर्म ऐसा होना चाहिए जिसकी चर्चा हुई, क्योंकि एक समय आने वाला है जब -----

[4]कहा जाता है कि जब फ़रिश्ते क़ियामत के दिन नीचे उतरेंगे तो प्रत्येक आकाश के फ़रिश्तों की एक पंक्ति होगी। इस प्रकार सात पंक्तियाँ होंगी, जो धरती को घेर लेंगे।

[5]सत्तर हज़ार लगामों के साथ नरक जकड़ी होगी तथा प्रत्येक लगाम के साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते होंगे। जो उसे खींच रहे होंगे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्न:, बाबुन फी शिद्दते हर्रे नारे जहन्नम व बुअदे कअरिहा, तिर्मिजी, अबवाबु सिफ़ते जहन्नम, बाबु मा जाअ फी सिफातिन नार) उसे अर्श (सिंहासन) की बायीं दिशा में खड़ा कर दिया जायेगा। जिसे देखकर सभी समीपवर्ती फ़रिश्ते तथा अम्बिया घुटनों के बल गिर पड़ेंगे तथा يَـا رَبِّ ! نَفْسِي نَفْسِي पुकारेंगे (फ़तहुल क़दीर)

يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ﴿٢٣﴾

करेगा, परन्तु आज शिक्षा ग्रहण का लाभ कहाँ ?[1]

يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ﴿٢٤﴾

(२४) वह कहेगा कि काश, कि मैंने इस जीवन के लिए कुछ (पुण्य के कार्य) पहले से कर रखे होते ।[2]

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ﴿٢٥﴾

(२५) तो आज (अल्लाह) की यातनाओं जैसी यातना किसी की न होगी ।

وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ﴿٢٦﴾

(२६) न उसके बन्धन के जैसा किसी का बन्धन होगा ।[3]

يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾

(२७) ऐ सन्तावना वाली आत्मा ।

ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾

(२८) तू अपने प्रभु की ओर[4] लौट चल, इस प्रकार कि तू उससे प्रसन्न वह तुझसे प्रसन्न ।

---

[1]अर्थात यह भयावह दृश्य देखकर मनुष्य की आँखें खुलेंगी तथा अपने कुफ़्र एवं अवज्ञा पर लज्जित होगा, किन्तु उस दिन इस लज्जा तथा शिक्षा ग्रहण का कोई लाभ न होगा ।

[2]अर्थात यह पश्चाताप तथा खेद का प्रदर्शन इसी लज्जा का अंश है जो उस दिन लाभप्रद न होगी ।

[3]उस दिन सभी अधिकार केवल एक अल्लाह के हाथ में होंगे । दूसरे किसी को उसके आगे सांस लेने का साहस न होगा । यहाँ तक कि उसकी आज्ञा के बिना कोई किसी की सिफ़ारिश भी नहीं कर सकेगा । ऐसी दशा में काफ़िरों को जो यातना होगी तथा जिस प्रकार वह अल्लाह के बन्धन में जकड़े होंगे उसे यहाँ सोचा भी नहीं जा सकता कहाँ कि उसका कुछ अनुमान लगाया जा सकता हो । यह तो अपराधियों तथा अत्याचारियों की दशा होगी । किन्तु ईमान वालों तथा आज्ञा पालकों की स्थिति इससे सर्वथा विभिन्न होगी जैसाकि आगामी आयतों में है ।

[4]अर्थात उनके प्रतिफलों तथा उन उपहारों की ओर जो उसने स्वर्ग में अपने बन्दों के लिए तैयार किये हैं । कुछ कहते हैं कि क़ियामत के दिन कहा जायेगा । कुछ कहते हैं कि मौत के साथ भी फ़रिश्ते शुभ सूचना देते हैं । इसी प्रकार क़ियामत के दिन भी उससे

(२९) मेरे विशेष दासों में सम्मिलित हो जा। فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ﴿٢٩﴾

(३०) तथा मेरे स्वर्ग में चली जा। وَادْخُلِي جَنَّتِي ﴿٣٠﴾

सूरतुल बलद-९० سُورَةُ الْبَلَدِ

सूरतुल बलद मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें बीस आयते हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है। بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

(१) मैं इस नगर की सौगन्ध खाता हूँ।[1] لَا أُقْسِمُ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾

(२) तेरे लिए इस नगर में युद्ध मान्य होने वाला है।[2] وَأَنتَ حِلٌّ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾

कहा जायेगा जो यहाँ चर्चित है। हाफ़िज इब्ने कसीर ने इब्ने असाकिर के हवाले से नकल किया है कि नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने एक व्यक्ति को यह दुआ पढ़ने का आदेश दिया।

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ نَفْسًا، بِكَ مُطْمَئِنَّةً، تُؤْمِنُ بِلِقَائِكَ، وَتَرضَى بِقَضَائِكَ وَتَقْنَعُ بِعَطَائِكَ» .

(इब्ने कसीर)

[1] **सूरतुल बलद** : इससे अभिप्राय मक्का नगर है जिसमें इस सूरत के अवतरण के समय माननीय नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) का निवास था। आप की जन्मभूमि भी यही नगर था। अर्थात अल्लाह आप की जन्मभूमि तथा निवासस्थान की शपथ ली है जिससे उसकी प्रतिष्ठा का अधिक स्पष्टीकरण होता है।

[2] यह संकेत है उस समय की ओर जब मक्का विजय हुआ। उस समय इस पवित्र नगरी में अल्लाह ने लड़ाई को वैध कर दिया था। जबकि उसमें लड़ाई की अनुमति नहीं। जैसे हदीस है नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने कहा इस नगर को अल्लाह ने उस समय से आदरणीय बनाया है जबसे आकाश तथा धरती बनाई। फिर यह अल्लाह का निर्धारित सम्मान के कारण प्रलय तक आदरणीय है, न इसका वृक्ष काटा जाये न उसके काँटे उखाड़े जायें। मेरे लिए इसे केवल एक पल के लिए वैध (हलाल) किया गया था आज उसका आदर फिर उसी प्रकार लौट आया जैसे कल था ----- यदि यहाँ कोई लड़ाई के

(३) तथा सौगन्ध है मानवीय पिता तथा सन्तान की ।[1]

وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۝

(४) नि:संदेह हमने मनुष्य को (अत्यन्त) परिश्रम में पैदा किया है ।[2]

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ۝

(५) क्या यह विचार करता है कि यह किसी के वश में ही नहीं ?[3]

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ۝

(६) कहता (फिरता) है कि मैंने तो अत्यधिक माल ख़र्च कर डाला ।[4]

يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۝

लिए प्रमाण स्वरूप मेरी लड़ाई पेश करे तो उससे कहो कि अल्लाह के रसूल को इसकी अनुमति अल्लाह ने दी थी । जबकि उसने तुमको यह अनुमति नहीं दी । (सहीह अलबुख़ारी, किताबुल इल्म, बाबु लियो बल्लिगश शाहिदु मिनकुम अल गाइबा, मुस्लिम किताबुल हज्ज)

इस आधार पर अर्थ होगा कि. وَأَنْتَ حِلٌّ بِهٰذَا الْبَلَدِ فِي الْمُسْتَقْبَلِ कुछ ने इस का अर्थ यह किया है कि तू इस नगर का निवासी है । किन्तु इमाम शौकानी फ़रमाते हैं यह अर्थ उसी समय सही होगा जब अरब की भाषा से यह सिद्ध हो कि حِلٌّ *हिल्लुन* (उतरना तथा रहना) के अर्थ में होता है । यह मध्यवर्ती वाक्य है ।

[1]कुछ ने इसका अर्थ आदरणीय आदम तथा उनकी सन्तान लिया है तथा कुछ के विचार से यह साधारण है प्रत्येक बाप तथा सन्तान इसमें सम्मिलित हैं ।

[2]अर्थात उसका जीवन कष्टों, आपत्तियों तथा दुखों से भरपूर है । इमाम तब्री ने यही अर्थ लिया है । यह सौगन्ध का उत्तर है ।

[3]अर्थात कोई उसकी पकड़ करने पर सामर्थ्य नहीं ?

[4] لُبَدًا अत्यधिक ढेर, अर्थात दुनियाँ के विषय में तथा बेकार वस्तु के लिए ख़ूब पैसा उड़ाता है । फिर गर्व से लोगों से कहता फिरता है ।

أَيَحْسَبُ أَن لَّمْ يَرَهُۥٓ أَحَدٌ ۝٧

(७) क्या (इस प्रकार) समझता है कि किसी ने उसे देखा (ही) नहीं ?[1]

أَلَمْ نَجْعَل لَّهُۥ عَيْنَيْنِ ۝٨

(८) क्या हम ने उसकी दो आँखें नहीं बनायीं ?[2]

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۝٩

(९) तथा एक जीभ एवं दो होंठ (नहीं बनाये) ?[3]

وَهَدَيْنَٰهُ ٱلنَّجْدَيْنِ ۝١٠

(१०) तथा उसको दोनों मार्ग दिखा दिये ।[4]

فَلَا ٱقْتَحَمَ ٱلْعَقَبَةَ ۝١١

(११) तो उससे न हो सका की घाटी में प्रवेश करता ।[5]

---

[1]इस प्रकार अल्लाह की अवज्ञा में धन ख़र्च करता है तथा समझता है कि कोई देख नहीं रहा है ? जबकि अल्लाह सब देख रहा है । जिस पर वह बदला देगा । आगे अल्लाह अपने कुछ पुरस्कारों की चर्चा कर रहा है ताकि ऐसे लोग शिक्षा लें ।

[2]जिनसे वह देखता है ।

[3]वह अपने मुख (ज़बान) से बोलता तथा अपने मन की बात व्यक्त करता है होंठों से बोलने तथा खाने में सहायता लेता है । इसके सिवा वह उसके चेहरे मुँह के लिये शोभा का भी कारण है ।

[4]अर्थात भलाई की भी तथा बुराई की भी, कुफ्र की भी ईमान की भी, सौभाग्य की भी दुर्भाग्य की भी, जैसे (अद्दहर-३) में फ़रमाया :

﴿ إِنَّا هَدَيْنَٰهُ ٱلسَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ﴾

نَجْدٌ का अर्थ ऊँचा स्थान है । इसलिए कुछ ने यह अनुवाद किया है हमने मनुष्य को (माँ की) दो छातियां बता दीं कि वह स्तन से बाल्यकाल में उससे अपना खाद्य प्राप्त करे किन्तु प्रथम भावार्थ अधिक सही है ।

[5] عَقَبَة घाटी को कहते हैं । अर्थात वह मार्ग जो पर्वत में हो । यह साधारणतय: दुर्गम होता है । यह वाक्य नकारत्मक प्रश्न के भाव में है अर्थात क्या वह घाटी में प्रवेश नहीं किया ? अर्थ है, नहीं किया । यह एक उदाहरण है उस परिश्रम तथा प्रयास का जो पुण्य के कर्म के लिए एक इंसान को शैतानी संदेहों तथा मनोकामनाओं के विरूद्ध करना

(१२) तथा तू क्या समझा कि घाटी है क्या ? | وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا ٱلْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾

(१३) किसी गर्दन (दास-दासी) को स्वतन्त्र करना। | فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾

(१४) अथवा भूख वाले दिन खाना खिलाना। | أَوْ إِطْعَٰمٌ فِى يَوْمٍ ذِى مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾

(१५) किसी निकट सम्बन्धी अनाथ को। | يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾

(१६) अथवा भूमि पर पड़े दरिद्र को।[1] | أَوْ مِسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾

(१७) फिर उन लोगों में से हो जाता जो ईमान लाये[2] तथा एक-दूसरे को धैर्य की एवं दया करने की वसीयत करते हैं।[3] | ثُمَّ كَانَ مِنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَتَوَاصَوْا۟ بِٱلصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا۟ بِٱلْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾

(१८) यही लोग हैं दायें हाथ वाले। | أُو۟لَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾

पड़ता है। जैसे घाटी पर चढ़ने के लिये कड़े परिश्रम की आवश्यकता होती है। (फ़तहुल क़दीर)

[1] مَسْغَبَةٍ، مَجَاعَـةٍ भूक يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ भूक का दिन ذَا مَتْرَبَةٍ (धूलवाला) अर्थात जो दरिद्रता तथा ग़रीबी के कारण धूल (धरती) पर पड़ा हो। उसका घरबार भी न हो। अभिप्राय यह है किसी दास-दासी को मुक्त करा देना, किसी भूखे को, सम्बन्धी अनाथ अथवा ग़रीब को खाना खिला देना। यह दुष्पार घाटी में प्रवेश करना है। जिसके द्वारा इंसान नरक से बच कर स्वर्ग में जा पहुँचेगा। अनाथ का पोषण वैसे ही बड़े पुण्य का कार्य है किन्तु यदि सम्बन्धी भी है तो उसके पालन-पोषण का दुगना पुण्य है। एक दान का दूसरा सम्बन्ध जोड़ने का। इसी प्रकार दास मुक्त करने की भी बड़ी प्रधानता हदीसों में आयी है। वर्तमान युग में किसी ऋणी को ऋण से मुक्त कर देना उसका एक रूप हो सकता है यह भी एक प्रकार فَكُّ رَقَبَةٍ है।

[2] इससे विदित हुआ कि उपरोक्त कर्म उसी समय लाभप्रद तथा परलौकिक सौभाग्य का कारण होंगे जब उनका करने वाला ईमान रखता होगा।

[3] ईमान वालों की विशेषता है कि वह एक-दूसरे को धैर्य तथा दया का निर्देश देते हैं।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ﴿١٩﴾

(१९) तथा जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र किया, वही लोग हैं बायें हाथ वाले।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾

(२०) उन्हीं पर अग्नि होगी जो चारों ओर से घेरे हुए होगी।[1]

सूरतुश शम्स-९१

سُوْرَةُ الشَّمْسِ

सूरतुश शम्स मक्का में अवतरित हुई तथा इसमे पन्द्रह आयते हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ﴿١﴾

(१) सौगन्ध है सूर्य की एवं उसकी धूप की।[2]

وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ﴿٢﴾

(२) सौगन्ध है चन्द्रमा की जब उसके पीछे आये।[3]

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ﴿٣﴾

(३) सौगन्ध है दिन की जब सूर्य को प्रकट करे।[4]

---

[1] مُؤْصَدَةٌ का अर्थ مُغْلَقَةٌ है (बंद) अर्थात उनको आग में डालकर चारों ओर से बंद कर दिया जायेगा। ताकि एक तो आग की पूरी तपन उनको पहुँचे, दूसरे वह कहीं भाग कर जा न सकें।

[2] ***सूरतुश शम्स*** : अथवा उसके प्रकाश की अथवा ضُحٰى से अभिप्राय दिन है अर्थात सूर्य एवं दिन की सौगन्ध।

[3] अर्थात जब सूर्यास्त के पश्चात वह उदय हो। जैसा पहले आधे महीने में ऐसा होता है।

[4] अथवा अंधेरे को दूर करे। अंधकार की चर्चा यद्यपि नहीं है। परन्तु पूर्व वाक्य इस की ओर संकेत करता है। (फ़तहुल क़दीर)

وَالَّيْلِ إِذَا يَغْشٰهَا ۝

(४) सौगन्ध है रात्रि की जब उसे ढाँक ले।[1]

وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنٰهَا ۝

(५) सौगन्ध है आकाश की तथा उसके बनाने की।[2]

وَالْأَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۝

(६) सौगन्ध है धरती की तथा उसे समतल करने की।[3]

وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۝

(७) सौगन्ध है आत्मा की तथा उसका सुधार करने की।[4]

فَأَلْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوٰىهَا ۝

(८) फिर समझ दी उसने पाप की तथा उससे बचने की।[5]

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝

(९) जिसने उसे पवित्र किया वह सफल हो गया।[6]

---

[1]अर्थात सूर्य को ढाँप ले तथा प्रत्येक दिशा में अंधेरा छा जाये।

[2]अथवा उस सत्ता की जिसने उसे बनाया। प्रथम अर्थ के आधार पर ما धातु के अर्थ के लिये है तथा दूसरे अर्थ के आधार पर ما का अर्थ مَنْ है।

[3]अथवा जिसने उसे समतल बनाया।

[4]अथवा जिसने उसे सुधारा। सुधारने का अभिप्राय है उसके अंगों को संतुलित बनाया। बेढव तथा बेढंगा नहीं बनाया।

[5] إِلْهَام का अभिप्राय यह है कि उन्हें भली प्रकारे समझा दिया तथा नबियों एवं आकाशीय ग्रंथों के द्वारा भलाई-बुराई से परिचित करा दिया। अर्थात अर्थ यह है कि उनकी प्रकृति तथा समझ में भलाई-बुराई तथा पुण्य एवं पाप का बोध रख दिया ताकि वह पुण्य को अपनायें तथा पाप से बचें।

[6]शिर्क से पाप से तथा नैतिक पतन से पाक किया। वह परलौकिक सौभाग्य से तथा सफलता से अलंकृत होगा।

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ﴿١٠﴾

(१०) तथा जिसने उसे मिट्टी में मिला दिया वह असफल हो गया ।[1]

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ﴿١١﴾

(११) समूदियों ने अपनी उद्दण्डता के कारण झुठलाया ।[2]

إِذِ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا ﴿١٢﴾

(१२) जब उनमें का बड़ा दुर्भाग्यशाली उठ खड़ा हुआ ।[3]

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ﴿١٣﴾

(१३) उन्हें अल्लाह के सन्देष्टा ने कह दिया था कि अल्लाह (*तआला*) की ऊँटनी तथा उसके पीने की बारी की (सुरक्षा करो) ।[4]

فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا فَدَمْدَمَ

(१४) उन लोगों ने अपने संदेष्टा को झूठा समझ कर उस ऊँटनी को मार डाला,[5] तो

---

[1]अर्थात जिसने उसे गुमराह कर लिया वह हानि में रहा। دَسٌّ यह تَدْسِيسٌ से बना है। जिसका अर्थ है, एक चीज को दूसरी चीज़ से छुपा देना। دَسَّاهَا का अर्थ होगा जिसने अपनी आत्मा को छुपा दिया उसे बेकार छोड़ दिया तथा उसे अल्लाह की आज्ञाकारिता तथा पुण्य के कर्मों के साथ प्रसिद्ध नहीं किया।

[2] طُغْيَانٌ वह उद्दण्ता जो सीमा पार कर जाये, इसी उद्दण्ता ने उन्हें झुठलाने पर उत्साहित किया।

[3]जिस का नाम व्याख्याकारों ने केदार बिन सालिफ़ बताया है उसने ऐसा कुकर्म किया कि हतभागों का प्रमुख बन गया। सबसे बड़ा हत भागा।

[4]अर्थात उस ऊँटनी को हानि पहुँचाये। इसी प्रकार जो उसके पानी पीने का दिन हो उसमें गड़बड न की जाये। ऊँटनी तथा समूद जाति दोनों के लिए पानी का एक-एक दिन निर्धारित कर दिया गया था । उस की रक्षा पर बल दिया गया था। किन्तु इन अत्याचारियों ने चिंता न की।

[5]यह कुकर्म एक ही व्यक्ति केदार ने किया था। किन्तु उसके कुकर्म में सम्पूर्ण जाति भी उसके साथ थी इसलिए इन सबको बराबर का दोषी माना गया तथा झुठलाने एवं ऊँटनी के मारने को पूरी जाति से सम्बन्धित किया गया। जिससे यह नियम विदित हुआ कि एक कुकर्म यदि कदाचित व्यक्ति करें किन्तु पूरा समुदाय उस कुकर्म का इंकार न करे।

عَلَيْهِمْ رَبُّهُم بِذَنبِهِمْ فَسَوَّىٰهَا ﴿١٤﴾

उनके प्रभु ने उनके पाप के कारण [1] उन पर विनाश डाल दिया तथा फिर विनाश को जनसामान्य के लिए कर दिया तथा उस बस्ती को बराबर कर दिया ।[2]

وَلَا يَخَافُ عُقْبَٰهَا ﴿١٥﴾

(१५) वह इस प्रकोप के परिणाम से निर्भय है ।[3]

सूरतुल लैल-९२

سُورَةُ اللَّيْلِ

सूरतुल लैल मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें इक्कीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ ﴿١﴾

(१) सौगन्ध है रात्रि की जब छा जाये ।[4]

अपितु उसे प्रिय समझे तो पूरी जाति इस कुकर्म की दोषी मानी जायेगी तथा इस अपराध अथवा कुकर्म में बराबर की भागी समझी जायेगी।

[1] دَمْدَمَ عَلَيْهِمْ उनको विनष्ट कर दिया तथा उनपर घोर प्रकोप उतारा।

[2]सार्वजनिक कर दिया ।अर्थात इस यातना में सबको समान कर दिया किसी को नहीं छोड़ा । छोटे, बड़े सबको नष्ट ध्वस्त कर दिया गया। अथवा धरती को उनपर बराबर कर दिया, अर्थात सबको धरती के भीतर कर दिया।

[3]अर्थात अल्लाह को यह भय नहीं है कि उसने उन्हें दण्ड दिया है तो कोई बड़ी शक्ति उससे बदला लेगी। वह परिणाम से निर्भीक है क्योंकि कोई ऐसी शक्ति नही है जो उससे बढ़कर अथवा उसके बराबर ही हो जो उससे प्रतिकार लेने का सामर्थ्य रखती हो।

[4] ***सूरतुल लैल*** : अर्थात क्षितिज में छा जाये, जिस से दिन का प्रकाश समाप्त तथा अंधकार हो जाये।

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّىٰ ﴿٢﴾

(२) तथा सौगन्ध है दिन की जब प्रकाशित हो जाये।[1]

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٣﴾

(३) तथा सौगन्ध है उस (शक्ति) की जिसने नर-मादा को पैदा किया।[2]

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ﴿٤﴾

(४) निःसंदेह तुम्हारा प्रयत्न विभिन्न प्रकार का है।[3]

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَىٰ وَاتَّقَىٰ ﴿٥﴾

(५) तोजो व्यक्ति देता रहा तथा डरता रहा।[4]

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَىٰ ﴿٦﴾

(६) तथा उत्तम बातों की पुष्टि करता रहा।[5]

فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَىٰ ﴿٧﴾

(७) तो हम भी उसके लिये सरलता उत्पन्न कर देंगे।[6]

---

[1]अर्थात रात का अंधकार समाप्त तथा दिन का उजाला फैल जाये।

[2]यह अल्लाह ने अपनी सौगन्ध खाई है क्योंकि नर-नारी दोनों का रचयिता अल्लाह ही है यहाँ مَا-الَّذِى के अर्थ में है।

[3]अर्थात कोई अच्छा कर्म करता है, जिसका बदला स्वर्ग है तथा कोई बुरे कर्म करता है जिसका बदला नरक है। यह सौगन्ध का उत्तर है شَتَّى बहुवचन है شَتِيتٌ का जैसे مَرْضَى का مَرِيضٌ।

[4]अर्थात भलाई के कामों में ख़र्च करेगा तथा अवैध से बचेगा।

[5]अथवा अच्छे प्रतिकार की पुष्टि करेगा। अर्थात इस बात के प्रति विश्वास रखेगा कि दान तथा संयम का अल्लाह की ओर से उत्तम बदला मिलेगा।

[6] يُسْرَى का अभिप्राय नेकी तथा الْخَصْلَةُ الْحُسْنَى है अर्थात हम पुण्य तथा आज्ञा पालन की उसे योग्यता देते तथा उनको उसके लिये सहज कर देते हैं। व्याख्याकार कहते हैं कि यह आयत आदरणीय अबूबक्र सिद्दीक के बारे में उतरी है जिन्होंने छः दास मुक्त किये जिन्हें मुसलमान होने के कारण मक्कावासी कड़ी यातनायें देते थे। (फ़तहुल क़दीर)

(८) परन्तु जिसने कंजूसी की तथा निश्चिन्तता व्यक्त किया ।[1]

وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَىٰ ﴿٨﴾

(९) तथा पुण्यकारी बातों को झुठलाया ।[2]

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَىٰ ﴿٩﴾

(१०) तो हम भी उस पर संकीर्णता तथा कठिनाई का साधन उपलब्ध करा देंगे ।[3]

فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَىٰ ﴿١٠﴾

(११) तथा उसका माल उसके (मुख के बल) गिरते समय कोई काम न आयेगा ।[4]

وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّىٰ ﴿١١﴾

(१२) नि:संदेह मार्ग दिखा देना हमारा दायित्व है ।[5]

إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ﴿١٢﴾

---

[1]अर्थात अल्लाह के मार्ग में व्यय न करेगा न अल्लाह की आज्ञा की परवाह ही करेगा ।

[2]अथवा परलोक के बदले तथा हिसाब-किताब का इंकार करेगा ।

[3] عُسْرَىٰ (तंगी) से अभिप्राय कुफ्र, अवज्ञा तथा दुराचार है, अर्थात हम उस के लिये अवज्ञा का मार्ग सरल कर देंगे । जिससे उसके लिये भलाई तथा सौभाग्य के मार्ग कठिन हो जायेंगे । पवित्र क़ुरआन में यह विषय कई स्थान पर वर्णित हुआ है । कि जो भलाई तथा सत्य का मार्ग अपनाता है अल्लाह उसके लिए भलाई का मार्ग सहज कर देता है तथा जो उपद्रव एवं पाप को अपनाता है अल्लाह उसको उसकी दशा पर छोड़ देता है । तथा यह उस भाग्य के अनुकूल ही होता है जो अल्लाह ने अपने ज्ञान से लिख रखा है । (इब्ने कसीर) यह विषय हदीस में भी वर्णन किया गया है नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने फ़रमाया तुम कर्म करो प्रत्येक व्यक्ति जिस कर्म के लिये पैदा किया गया है वह उसके लिये सहज कर दिया जाता है । जो भाग्यशाली है उसे सौभाग्य के कर्म की सुविधा दे दी जाती है । तथा जोहतभागा होता है उसके लिये हतभागोके कर्म सहज कर दिये जाते हैं । (सहीह अल-बुख़ारी तफ़सीर *सूरतुल लैल*)

[4]अर्थात जब नरक में गिरेंगे तो यह धन जिसे वह ख़र्च नहीं करता था कुछ काम न आयेगा ।

[5]अर्थात वैध-अवैध, भला-बुरा, मार्गदर्शन-पथभ्रष्टा को स्पष्ट तथा वर्णित करना हमारा दायित्व है (जो कि हम ने कर दिया है)

وَإِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَىٰ ⑬

(१३) तथा हमारे ही हाथ परलोक एवं यह लोक है।[1]

فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ⑭

(१४) मैंने तो तुम्हें शोले मारती अग्नि से डरा दिया है।

لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ⑮

(१५) जिसमें केवल वह दुर्भाग्यशाली ही प्रवेश करेगा।

الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ⑯

(१६) जिसने झुठलाया तथा (उसके अनुकरण से) मुख फेर लिया।[2]

وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ⑰

(१७) तथा उससे ऐसा व्यक्ति दूर रखा जायेगा जो सदाचारी होगा।[3]

---

[1]अर्थात दोनों के स्वामी हम हैं। इनमें जैसे चाहें जो चाहें करें अत: इन दोनों के अथवा इनमें से किसी एक के अभिलाषी हम से ही माँगें क्योंकि प्रत्येक इच्छुक को अपनी इच्छानुसार हम ही देते हैं।

[2]इस आयत से मुर्जिया सम्प्रदाये ने जो एक ग़लत सम्प्रदाय गुज़रा है यह तर्क निकाला है कि नरक में केवल काफ़िर ही जायेंगे कोई मुसलमान चाहे, कितना पापी हो नरक में नहीं जायेगा किन्तु यह आस्था उन स्पष्ट सूत्रों के प्रतिकूल है जिनसे प्रतिपादित होता है कि बहुत से मुसलमान भी जिनको अल्लाह दण्ड देना चाहेगा कुछ समय के लिये नरक में जायेंगे फिर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रिश्तों तथा अन्य पवित्रात्माओं की सिफ़ारिश से निकाल लिये जायेंगे। यहाँ सीमित करने की शैली में जो कहा गया है। उससे अभिप्राय यह है कि जो लोग पक्के काफ़िर तथा अत्यन्त हतभाग हैं नरक वास्तव में उन्हीं के लिए बनाई गयी है जिसमें वे अवश्य तथा नित्य के लिये प्रवेश करेंगे। यदि कुछ अवज्ञाकारी मुसलमान नरक में जायेंगे तो वह आवश्यक रूप से सदा के लिये नहीं जायेंगे। अपितु दण्ड स्वरूप उनका यह प्रवेश सामयिक होगा। (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात नरक से दूर रहेगा तथा स्वर्ग में प्रवेश करेगा।

(१८) जो शुद्धता प्राप्त करने के लिए अपना माल देता है ।[1]

ٱلَّذِى يُؤْتِى مَالَهُۥ يَتَزَكَّىٰ ﴿١٨﴾

(१९) किसी का उस पर कोई उपकार नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो ।[2]

وَمَا لِأَحَدٍ عِندَهُۥ مِن نِّعْمَةٍ تُجْزَىٰٓ ﴿١٩﴾

(२०) अपितु केवल अपने महान सर्वोच्च प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त करना होता है ।[3]

إِلَّا ٱبْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ ٱلْأَعْلَىٰ ﴿٢٠﴾

(२१) नि:संदेह वह (अल्लाह भी) शीघ्र ही प्रसन्न हो जायेगा ।[4]

وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ﴿٢١﴾

---

[1]अर्थात जो अपना धन अल्लाह की आज्ञानुसार ख़र्च करेगा ताकि उसका मन तथा धन पवित्र हो जाये ।

[2]अर्थात बदला उतारने के लिये न ख़र्च करता हो ।

[3]अपितु शुद्ध मन से अल्लाह की प्रसन्नता तथा स्वर्ग में उसके दर्शन के लिये ख़र्च करता है ।

[4]अथवा वह प्रसन्न हो जायेगा । अर्थात जो इन विशेषताओं से युक्त होगा । अल्लाह (तआला) उसे स्वर्ग की अनुकम्पायें तथा आदर-भाव प्रदान करेगा जिससे वह प्रसन्न हो जायेगा । अधिकांश व्याख्याकारों ने कहा है बल्कि कुछ ने सम्पूर्ण सहमति तक नकल किया है कि यह आयतें माननीय अबूबक्र सिद्दीक की शान में उतरीं हैं फिर भी अर्थ तथा भावार्थ के आधार पर साधारण है । जो भी इन उच्च गुणों से युक्त होगा वह अल्लाह के सदन में इसका चरितार्थ होगा ।

सूरतुददुहा-९३

سُورَةُ الضُّحَىٰ

सूरतुददुहा मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें ग्यारह आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَالضُّحَىٰ ①

(१) सौगन्ध है चाश्त (सूर्य के ऊँचे हो जाने) के समय की।[1]

وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ②

(२) तथा सौगन्ध है रात्रि की जब छा जाये।[2]

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ③

(३) न तो तेरे प्रभु ने तुझे छोड़ा है, न विमुख हो गया है।[3]

وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ④

(४) निःसंदेह तेरे लिए अन्त आरम्भ से उत्तम है।[4]

सूरतुददुहा : एक बार नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) रोग ग्रस्त हो गये दो-तीन रातें आप ने तहज्जुद की नमाज नहीं पढ़ी। एक स्त्री आप के पास आई तथा कहने लगी। हे मोहम्मद (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) लगता है तेरे शैतान ने तुझे छोड़ दिया है। दो-तीन रातों से देख रही हूँ कि वह तेरे पास नहीं आया। जिस पर अल्लाह ने यह आयत अवतरित की। (सहीह अल-बुख़ारी, तफ़सीर *वददुहा*) यह स्त्री अबूलहब की पत्नी उम्मे जमील थी। (फ़तहुल बारी)

[1]चाश्त (दुहा) उस समय को कहते हैं जब सूर्य ऊँचा होता है। यहाँ अभिप्राय पूरा दिन है।

[2] سَجَىٰ का अर्थ سَكَنَ है जब शान्त हो जाये अर्थात जब अंधकार पूर्णतः छा जाये। क्योंकि उस समय प्रत्येक वस्तु शान्त हो जाती है।

[3]जैसाकि काफ़िर समझ रहे हैं।

[4]अथवा परलोक (आख़िरत) संसार से उत्तम है दोनों भावार्थ अर्थानुसार उचित है।

وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ⑤

(५) तुझे तेरा प्रभु अतिशीघ्र (पुरस्कार) देगा तथा तू प्रसन्न हो जायेगा।[1]

أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ⑥

(६) क्या उसने तुझे अनाथ पाकर स्थान नहीं दिया ?[2]

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ⑦

(७) तथा तुझे पथ भूला पाकर मार्गदर्शन नहीं दिया ?[3]

وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ⑧

(८) तथा तुझे निर्धन पाकर धनी नहीं बना दिया ?[4]

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ⑨

(९) तो अनाथ पर तू भी कठोरता न किया कर।[5]

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ⑩

(१०) तथा माँगने वाले को न डाँट-डपट।[6]

---

[1]इससे सांसारिक विजय तथा परलोक की सफलता अभिप्राय है इसमें वह सिफ़ारिश का अधिकार भी सम्मिलित है जो आप को अपने समूह के पापियों के लिये मिलेगा।

[2]अर्थात बाप के सहारे से भी वंचित था। हमने तेरी सहायता की तथा उपचार किया।

[3]अर्थात तुझे धर्म तथा धर्मविधान एवं ईमान का पता नहीं था। हमने तुझे मार्ग दर्शन दिया। नबूअत (दूतत्व) प्रदान किया तथा शास्त्र अवतरित किया। अन्यथा तू इससे पूर्व तो मार्ग दर्शन के लिये प्रयत्नशील था।

[4]धनी का अभिप्राय है अपने सिवा सबसे निस्पृह कर दिया। फिर तू भूख में धैर्यवान तथा धन में कृतज्ञ रहा। जैसे स्वयं नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* का कथन है कि धनी होना संसाधन की अधिकता का नाम नहीं है। वास्तविक धन सम्पन्नता दिल की सम्पन्नता है। (सहीह मुस्लिम किताबुज़ ज़कात, बाबुन लैसल गिना अन कसरतिल अर्ज़)

[5]अपितु उसके साथ कोमलता तथा उपकार का मामला कर।

[6]अर्थात उससे कड़ाई तथा घमन्ड न कर। न कड़ी-कड़वी बात कर। बल्कि जवाब भी देना हो तो प्रेम तथा प्यार से दो।

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾

(११) तथा अपने प्रभु के उपकारों का वर्णन करता रह ।[1]

सूरतु अलम नश्ररह-९४

سُورَةُ الشَّرْحِ

सूर: अलम नशरह मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें आठ आयतें हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿١﴾

(१) क्या हमने तेरे लिए तेरा सीना नहीं खोल दिया ।[2]

---

[1]अर्थात अल्लाह ने तुझ पर जो उपकार किये हैं । जैसे मार्ग दर्शन तथा रिसालत एवं नबूअत से सम्मानित किया । अनाथ होने के उपरान्त तेरे पालन-पोषण तथा संरक्षण की व्यवस्था की तुझे धैर्य तथा धन प्रदान किया । उन्हें कृतज्ञता तथा अनुगृहिता की भावना के साथ वर्णन कर । इससे विदित हुआ कि अल्लाह की अनुकम्पाओं की चर्चा तथा उनका प्रदर्शन अल्लाह को प्रिय है । किन्तु घमन्ड तथा गर्व स्वरूप नहीं अपितु अल्लाह की दयालुता एवं अनुग्रह का आभारी होते हुए उसकी शक्ति तथा सामर्थ्य से डरते हुए कि वह कहीं हमको इन अनुकम्पाओं से वंचित न कर दे ।

[2] विगत सूरत में तीन पुरस्कारों का वर्णन था । इस सूरत में अधिक तीन अनुग्रह की चर्चा है । प्रथम सीना खोल देना, इससे अभिप्राय है वक्ष का प्रकाशित तथा विस्तृत हो जाना । ताकि सत्य भी स्पष्ट हो जाये तथा दिल में समा जाये । इस भावार्थ में क़ुरआन (*सूरतुल अनआम*-१२५) की यह आयत है ।

﴿فَمَن يُرِدِ اللَّهُ أَن يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ﴾

जिसे अल्लाह मार्ग दर्शाना चाहे उसका वक्ष (सीना) इस्लाम के लिये खोल देता है । अर्थात वह इस्लाम को सत्य धर्म के रूप में पहचान लेता है तथा उसे स्वीकार कर लेता है । इस सीना फैलाने में वह वक्ष चीरना भी आ जाता है जो विश्वसनीय रिवायतों से दो बार रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* का किया गया । एक बार बाल्य अवस्था में जब आप की आयु चार वर्ष थी जिब्रील (फ़रिश्ता) आये तथा आप का दिल चीरा तथा उससे वह शैतानी भाग निकाल दिया जो प्रत्येक व्यक्ति के दिल में है । फिर उसे धोकर

(२) तथा तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया ।[1] وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝٢

(३) जिसने तेरी पीठ तोड़ दी थी । الَّذِي أَنقَضَ ظَهْرَكَ ۝٣

(४) तथा हमने तेरा चर्चा उच्च कर दिया ।[2] وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤

(५) तो अवश्य कठिनाई के साथ सरलता है । فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٥

(६) नि:संदेह कठिनाई के साथ सरलता है ।[3] إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝٦

बंद कर दिया । (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबुल इस्रा) दूसरी बार मेराज के अवसर पर, आपका दिल निकाला गया । उसे ज़मज़म के जल से धुलकर अपने स्थान पर रख दिया गया । तथा उसे ईमान एवं तत्व दर्शिता से भर दिया गया (सहीहैन अबवाबुल मेराज तथा किताबुस सलात)

[1]यह बोझ चालीस वर्षीय नुबूअत से पूर्व का बोझ है । इस युग में आप को यदि अल्लाह ने पापों से सुरक्षित रखा । किसी मूर्ति को आपने सजदा नहीं किया कभी मदिरा पान नहीं किया तथा अन्य पापों से भी विलग रहे । फिर भी अल्लाह की उपासना न आप जानते थे न की, इसलिये इस चालीस वर्ष उपासना एवं आज्ञा पालन न करने का बोझ आप पर था जो वास्तव में तो नहीं था किन्तु आपके संवेदन तथा प्रबोध ने उसे बोझ बना रखा था । अल्लाह ने उसे उतार देने की घोषणा करके आप पर अनुग्रह किया । यह मानों वही अर्थ है जो ﴿لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِن ذَنبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ﴾ (अल-फ़त्ह) का है । कुछ कहते हैं कि यह नबूअत (दूतत्व) का बोझ था जिसे अल्लाह ने हल्का कर दिया । अर्थात उसके मार्ग की कठिनाईयाँ सहन करने का साहस तथा धर्म के प्रचार एवं आमन्त्रण में सुविधायें पैदा कर दीं ।

[2]अर्थात जहाँ अल्लाह का नाम आता है, जैसे नमाज, अज़ान तथा अन्य बहुत से स्थानों पर आप का नाम भी आता है । आदि ग्रंथों में आप की चर्चा तथा गुणों का विवरण है । फ़रिश्तों में आप की शुभ चर्चा है । आपके आज्ञा पालन को अल्लाह ने अपना आज्ञा पालन कहा है तथा अपनी आज्ञाकारिता के साथ आप की आज्ञाकारिता का भी आदेश दिया है । इत्यादि

[3]जो आप तथा सहाबा के लिये शुभसूचना है कि तुम इस्लाम की राह में जो कठिनाईयाँ सहन करोगे । घबराने की आवश्यकता नहीं उसके पश्चात ही अल्लाह तुम्हें सुख-सुविधा प्रदान करेगा । तथा ऐसा ही हुआ जिसे समस्त संसार जानता है ।

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۝٧

(७) तो जब तू ख़ाली हो तो (इबादत में) परिश्रम कर ।[1]

وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝٨

(८) तथा अपने प्रभु की ओर दिल लगा ।[2]

सूरतुत्तीन-९५

سُورَةُ التِّينِ

सूरतुत्तीन मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें आठ आयतें हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है ।

وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ۝١

(१) सौगन्ध है इंजीर की तथा ज़ैतून की ।

وَطُورِ سِينِينَ ۝٢

(२) तथा सनायी के तूर (पर्वत) की ।[3]

وَهَٰذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝٣

(३) तथा इस शान्ति वाले नगर की ।[4]

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝٤

(४) नि:संदेह हमने मनुष्य को अति उत्तम रूप में पैदा किया ।[5]

---

[1]अर्थात नमाज़ से या धर्मप्रचार से तथा जिहाद से, तू दुआ में परिश्रम कर अथवा इतनी ईबादत कर कि तू थक जाये ।

[2]अर्थात उसी से स्वर्ग की आशा रख । उसी से अपनी ज़रूरतें माँग तथा सभी विषय में उसी पर विश्वास तथा भरोसा कर ।

[3]यह वही तूर पर्वत है जहाँ अल्लाह ने मूसा (*अलैहिस्सलाम*) से बात की थी ।

[4]इससे अभिप्राय पवित्र नगर मक्का है जिसमें लड़ाई अवैध है । इसके सिवा जो इसमें प्रवेश कर जाये उसको शान्ति प्राप्त हो जाती है । कुछ व्याख्याकारों का कहना है कि वास्तव में तीन स्थानों की सौगन्ध है । जिनमें से प्रत्येक में मर्यादा धर्म विधान वाहक ईशदूत भेजे गये । इंजीर तथा ज़ैतून से अभिप्राय वह क्षेत्र है जहाँ इसकी उपज है । तथा वह *बैतुल मोक़द्दस* है जहाँ माननीय ईसा पैग़म्बर (ईशदूत) बनकर आये । सिना पर्वत अथवा सीनीन पर आदरणीय मूसा को नुबूअत (दूतत्व) प्रदान किया गया । तथा मक्का में ईशदूतों के प्रमुख आदरणीय मोहम्मद रसूल अल्लाह(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेजा गया । (इब्ने कसीर)

[5]यह शपथ का उत्तर है । अल्लाह ने प्रत्येक सृष्टि को ऐसे रचा है कि उनका मुख नीचे को झुका हुआ है केवल मनुष्य को लम्बा तथा सीधा आकार दिया है जो अपने हाथों से खाता तथा पीता है फिर उसके अंगों को संतुलित बनाया है । उसमें जानवरों के समान बेढगापन नहीं है प्रत्येक महत्वपूर्ण अंग दो दो बनाये तथा उनमें अति उचित दूरी रखी ।

(५) फिर उसे नीचों से नीचा कर दिया ।[1]

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۝

(६) परन्तु जो लोग ईमान लाये तथा फिर पुण्य के कर्म किये, तो उनके लिए ऐसा बदला है। जो कभी समाप्त न होगा ।[2]

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝

(७) तो तुझे अब बदले के दिन को झुठलाने पर कौन-सी बात उत्साहित करती है ।[3]

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝

(८) क्या अल्लाह (तआला) समस्त हाकिमों का हाकिम नहीं है ?[4]

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝

फिर उसमें बोध विचार समझ आँख, कान रख दिये जो वास्तव में अल्लाह के गुण हैं। मानों इन गुणों के आधार पर इंसान अल्लाह के गुणों द्योतक तथा उसका प्रतिबिम्ब है। कुछ विद्वानों ने इस हदीस को भी इसी अर्थ तथा भावार्थ में लिया है।

«إِنَّ اللهَ خَلَقَ آدَمَ عَلَى صُورَتِهِ» .

(मुस्लिम किताबुल बिर्रे वस सिला वल आदाब) अल्लाह ने आदम को अपने रूप पर पैदा किया । इन्सान की रचना में इन सब चीज़ों की व्यवस्था ही أَحْسَنِ تَقْوِيم (उत्तम संरचना) है जिसका वर्णन अल्लाह ने तीन सौगन्धों के पश्चात किया है। (फ़तहुल क़दीर)

[1]यह संकेत मनुष्य की अर्ज़ल आयु (बहुत अधिक आयु की ओर, जिसमें जवानी तथा यौवन के बाद बुढ़ापा तथा क्षीणता आ जाती है तथा इंसान की समझ बालक के समान हो जाती है। कुछ ने इससे कर्म का वह पतन लिया जिसमें लीन होकर इंसान अति पतित तथा साँप-बिच्छू से भी अधिक नीच बन जाता है तथा इससे कुछ ने वह अपमानित तथा हीनता की यातना ली है जो नरक में काफ़िरों के लिये है मानों मनुष्य अल्लाह तथा रसूल की आज्ञाकारिता से फिरकर अपने को उत्तम रचना के समान से गिराकर नरक की सबसे नीची श्रेणी में डालता है।

[2]पूर्व की आयत के प्रथम भावार्थ के आधार पर यह वाक्य वर्णन के लिये है जोमोमिनों की स्थिति का वर्णन कर रहा है। तथा दूसरे तीसरे भावार्थ के आधार पर पूर्व पर बल देने के लिये है कि इस परिणाम से उसने मोमिनों को अलग कर दिया है। (फ़तहुल क़दीर)

[3]यह इंसान से सम्बोधन है फटकार के लिए कि अल्लाह ने तुझे उत्तम रूप में बनाया तथा इसके विपरीत वह तुझे अपमान के गड़हे में भी गिरा सकता है इसका अभिप्राय है कि पुर्नजीवन प्रदान करना कठिन नहीं इसके पश्चात भी तू प्रलय तथा प्रतिकार का इंकार करता है।

[4]जो किसी पर अत्याचार नहीं करता उसके न्याय ही की माँग है कि प्रलय की स्थापना करे तथा उससे न्याय करे जिस पर अत्याचार हुआ है। पहले गुज़र चुका है कि एक जीर्ण हदीस इसका उत्तर .«بَلَى وَأَنَا عَلَى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِينَ» आया है (तिर्मिज़ी)

سُوْرَةُ الْعَلَقِ

सूरतुल अलक़-९६

सूरतुल अलक मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें उन्नीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ①

(१) अपने प्रभु का नाम लेकर पढ़ जिसने पैदा किया।[1]

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ②

(२) जिसने मनुष्य को रक्त के लोथड़े से पैदा किया।[2]

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ③

(३) तू पढ़ता रह तेरा प्रभु बड़ा उदार है।[3]

الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ④

(४) जिसने क़लम के द्वारा (ज्ञान) सिखाया।[4]

---

[1] **सूरतुल अलक :** यह सर्वप्रथम प्रकाशना है जो नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) पर उस समय आई जब आप हिरा पर्वत की गुफा में उपासना में लीन थे। फ़रिश्ते ने आकर कहा पढ़ आपने फ़रमाया मैं तो पढ़ा हुआ नहीं हूँ। फ़रिश्ते ने आप को ज़ोर से भींचा तथा कहा पढ़ आपने फिर वही उत्तर दिया इस प्रकार तीन बार आप को भींचा (विवरण के लिये देखिए सहीह अलबुख़ारी बाब बदउल वह्यी -मुस्लिम अलईमान बाबु बदइल वह्यी) जो तेरी ओर प्रकाशना की जाती है वह पढ़ خَلَقَ जिसनें समस्त सृष्टि को रचा।

[2] सृष्टि में विशेषत: मनुष्य की उत्पत्ति की चर्चा की जिससे उसकी श्रेष्ठता स्पष्ट है।

[3] यह बल देने का स्वरूप है तथा इसमें बड़े प्रभावी ढंग से उस विवशता का निवारण फ़रमा दिया जो आप ने प्रस्तुत किया कि मैं तो पढ़ा ही नहीं हूँ, अल्लाह ने फ़रमा दिया अल्लाह बड़ा दयालु है पढ़। अर्थात मनुष्य की त्रुटियों को क्षमा करना उसका विशेष गुण है।

[4] قَلَمٌ का अर्थ है काटना, छीलना। क़लम (लेखनी) भी प्राचीन युग में छीलकर ही बनाया जाता था इसलिए लिखने के यंत्र को क़लम से व्यांजित किया। कुछ ज्ञान तो मनुष्य की बुद्धि में होता है। कुछ मुख से व्यक्त करता है। कुछ क़लम से काग़ज पर लिख लेता है। जो बुद्धि तथा स्मरण शक्ति में होता है वह मनुष्य के साथ ही चला जाता है। हाँ क़लम

عَلَّمَ الْإِنسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ⑤

(५) जिसने मनुष्य को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था।

كَلَّا إِنَّ الْإِنسَانَ لَيَطْغَىٰ ⑥

(६) वास्तव में मनुष्य तो आपे से बाहर हो जाता है।

أَن رَّآهُ اسْتَغْنَىٰ ⑦

(७) इसलिए कि वह अपने आप को निश्चिन्त (अथवा धनवान) समझता है।

إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ⑧

(८) निःसंदेह लौटना तेरे प्रभु की ओर है।

أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ⑨

(९) (भला) उसे भी तूने देखा, जो (एक बन्दे को) रोकता है।

عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ⑩

(१०) जबकि वह बन्दा नमाज़ अदा करता है।[1]

أَرَأَيْتَ إِن كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ ⑪

(११) भला बताओ तो यदि वह सीधे मार्ग पर हो।[2]

से लिखा यदि किसी कारण से बर्बाद न हो तो सदा सुरक्षित रहता है। इसी क़लम द्वारा विगत लोगों के इतिहास तथा पूर्वजों के ज्ञान का कोष सुरक्षित है। यहाँ तक की आकाशीय धर्म शास्त्रों की सुरक्षा का साधन भी यही है। इससे क़लम का महत्व स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं रह जाती। इसलिये अल्लाह ने सबसे पहले क़लम को पैदा किया तथा उसे पूरी सृष्टि का भाग्य लिखने का आदेश दिया।

[1]व्याख्याकार कहते हैं कि रोकने वाले से अभिप्राय अबूजहल है जो इस्लाम का कड़ा विरोधी था عَبْدًا (एक भक्त) से अभिप्राय नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) हैं।

[2]अर्थात यह जिसे नमाज़ पढ़ने से रोक रहा है वह संमार्ग पर हो।

(१२) अथवा परहेज़गारी की अनुदेश देता हो ।[1] أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۝١٢

(१३) भला देखो तो यदि यह झुठलाता हो तथा मुँह फेरता हो तो ।[2] أَرَأَيْتَ إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝١٣

(१४) क्या यह नहीं जानता कि अल्लाह (तआला) उसे भली प्रकार देख रहा है ।[3] أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۝١٤

(१५) नि:संदेह यदि ये नहीं रूका तो हम उसके ललाट के बाल पकड़कर घसीटेंगे ।[4] كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۝١٥

(१६) ऐसा ललाट जो झूठा तथा पापी है ।[5] نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝١٦

(१७) वह अपने सभा वालों को बुला ले । فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۝١٧

---

[1]अर्थात शुद्धता, तौहीद (एकेश्वरवाद) तथा पुण्य के कर्मों की शिक्षा। जो नरक की अग्नि से मनुष्य बच सकता है। तो क्या यह चीजे नमाज़ पढ़ना तथा संयम की शिक्षा को देना) ऐसी बातें हैं कि उनका विरोध किया जाये तथा उस पर उसे धमकियाँ दी जायें ?

[2]अर्थात यह अबु जहल अल्लाह के पैग़म्बर को झुठलाता हो तथा ईमान से मुख फेरता हो। أَرَأَيْتَ यह أَخْبِرْنِي के अर्थ में है (मुझे बताओ)।

[3]अभिप्राय यह है कि यह जो उपरोक्त गतिविधियाँ कर रहा है, क्या नहीं जानता कि अल्लाह (तआला) सब कुछ देख रहा है। वह इसका उसको बदला देगा। अर्थात أَلَمْ تَعْلَمْ उपरोक्त शर्तों ﴿إِن كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ ۝ أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ﴾ ، ﴿إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ﴾ की जज़ा है।

[4]अर्थात नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विरोध तथा शत्रुता से एवं आप को नमाज़ पढ़ने से जो रोकता है इससे रूका नहीं। نَسْفَعًا का अर्थ है لَنَأْخُذَنَّ हम उसका ललाट पकड़कर घसीटेंगे । हदीस में आता है कि अबू जहल ने कहा था कि, यदि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) काबा के पास नमाज़ पढ़ने से नहीं रूका तो उसकी गर्दन पर पांव रख दूंगा । (अर्थात उसे रौंद दूंगा। तथा इस प्रकार अपमानित करूँगा) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को यह सूचना मिली तो आप ने फ़रमाया यदि वह ऐसा करता तो फ़रिश्ते उसे पकड़ लेते। (सहीह अलबुख़ारी तफ़सीर *सूरतिल अलक़*)

[5]ललाट के यह गुणका अर्थ है कि वह झूठी है अपनी बात में, पापी है अपने कर्म में।

(१८) हम भी नरक के रक्षकों को बुला लेंगे ।[1]

سَنَدۡعُ ٱلزَّبَانِيَةَ ١٨

(१९) सावधान ! उसका कहना कदापि न मानना तथा सजदा करो एवं समीप हो जाओ ।

كَلَّا لَا تُطِعۡهُ وَٱسۡجُدۡ وَٱقۡتَرِب ١٩

सूरतुल क़द्र-९७

سُورَةُ القَدۡرِ

सूरतुल क़द्र मक्का में अवतरित हुई तथा

---

[1]हदीस में आता है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के घर काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे अबू जहल गुज़रा तो कहा हे मोहम्मद ! मैंने तुझे नमाज़ पढ़ने से नहीं रोका था ? तथा आप से धमकी भरी बातें कीं, आप ने भी कड़ा उत्तर दिया। तो कहने लगा हे मोहम्मद ! तू मुझे किस चीज़ से डराता है ? अल्लाह की सौगन्ध, इस वादी में सबसे अधिक मेरे समर्थक हैं जिस पर यह आयत अवतरित हुई । माननीय इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं । यदि वह अपने समर्थकों को बुलाता तो तत्क्षण यातना के फ़रिश्ते उन्हें पकड़ लेते । (तिर्मिजी तफ़सीर सूरते इक़्रा, मुसनद अहमद १\३२९, तफ़सीर इब्ने जरीर) तथा सहीह मुस्लिम के शब्द हैं कि उसने आगे बढ़कर आप की गर्दन पर पैर रखने का इरादा किया कि तत्क्षण उलटे पाँव पीछे हटा, तथा अपने हाथों से अपना बचाव करने लगा, उससे कहा गया कि क्या बात है ? उसने कहा, मेरे तथा मोहम्मद के बीच आग की खाईं भयावह दृश्य तथा बहुत से पंख हैं । रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया । यदि वह मेरे समीप होता तो फ़रिश्ते उसकी बोटी-बोटी नोच लेते, (किताबु सिफ़ातिल क़यामह, बाबु इन्नल इंसाना ल यतगा) الزَّبَانِيَةَ अधिकारी पुलिस, अर्थात शक्तिशाली सेना । जिसका कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता ।

सूरतुल क़द्र : इस सूरत के मक्की तथा मदनी होनें में मतभेद है इसका नाम रखने के कारण में विभेद है । क़द्र का अर्थ आदर-मान भी है । इसी कारण क़द्र की रात कहते हैं । इसका अर्थ अनुमान लगाना तथा निर्णय करना भी है । इसमें पूरे वर्ष का निर्णय किया जाता है । इसीलिये इसे لَيْلَةُ الْحُكْمِ भी कहते हैं । इसका अर्थ संकीर्णता भी है । इस रात इतनी अधिकता से फ़रिश्ते उतरते हैं कि धरती तंग हो जाती है । क़द्र की अर्थात संकीर्ण रात । अथवा इसलिये यह नाम रखा गया कि इस रात जो उपासना की जाती है अल्लाह के हाँ उसका बड़ा आदर है । तथा इस पर बड़ा पुण्य है । इस के निर्धारण में भी बड़ा मतभेद है । (फ़तहुल क़दीर) फिर भी हदीसों तथा सहाबा के कथनों से यह सिद्ध है कि यह रमज़ान महीने की अन्तिम दस विषम रातों में से कोई एक रात होती है । इस को स्पष्ट न करनें में यही मतभेद है कि लोग पाँचों ही रातों में इसका शुभ प्राप्त करनें के लोभ में अल्लाह की अत्यधिक इबादत करें ।

इसमें पाँच आयतें हैं।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

إِنَّآ أَنزَلۡنَٰهُ فِي لَيۡلَةِ ٱلۡقَدۡرِ ١

(१) नि:संदेह हमने उसे क़द्र (शुभ) की रात्रि में अवतरित किया ।[1]

وَمَآ أَدۡرَىٰكَ مَا لَيۡلَةُ ٱلۡقَدۡرِ ٢

(२) तू क्या समझा कि क़द्र (शुभ) की रात्रि क्या है ?[2]

لَيۡلَةُ ٱلۡقَدۡرِ خَيۡرٞ مِّنۡ أَلۡفِ شَهۡرٖ ٣

(३) क़द्र की रात्रि एक हज़ार महीनों से श्रेष्ठ है ।[3]

تَنَزَّلُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ

(४) इसमें (प्रत्येक कार्य को पूर्ण करने के लिये) अपने प्रभु के आदेश से फ़रिश्ते एवं

---

[1]अर्थात उतारना आरम्भ किया अथवा लौहे महफ़ूज से बैतुल इज़्जत में जो पहले आकाश पर है उतारा । तथा वहाँ से आवश्यकतानुसार नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* पर उतारता रहा । यहाँ तक कि लगभग २३ वर्ष में पूरा हो गया, तथा *लैलतुल क़द्र* रमज़ान ही में होती है। जैसाकि क़ुरआन की आयत ﴿شَهۡرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِيٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلۡقُرۡءَانُ﴾ से स्पष्ट है ।

[2]इस प्रश्न से इस रात की श्रेष्ठता तथा महत्व स्पष्ट करना है। मानो लोग उसके गूढ़ता तक पूर्ण रूप से पहुँच नहीं सकते। यह केवल अल्लाह ही है जो उसे जानता है।

[3]अर्थात इस एक रात की उपासना हज़ार महीनों से उत्तम है। तथा हज़ार महीने ८३ वर्ष ४ महीने बनते हैं। यह मोहम्मद *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* के अनुयाईयों पर अल्लाह का कितना महान अनुग्रह है कि लघु आयु में अधिक से अधिक पुण्य प्राप्त करने के लिये कैसी सरलता प्रदान कर दी है।

فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ۝

रूह (जिब्रील) उतरते हैं ।[1]

سَلَٰمٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

(५) यह रात्रि साक्षात् शान्ति की होती है,[2] तथा फ़ज्र के उदय होने तक (होती है) ।

सूरतुल बय्यिनः-९८

سُورَةُ الْبَيِّنَةِ

सूरतुल बय्यिनः मदीनें में अवतरित हुई तथा इसमे आठ आयतें हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَٰبِ

(१) अहले किताब के काफ़िर[3] तथा

---

[1]रूह से अभिप्राय आदरणीय जिब्रील हैं । अर्थात फ़रिश्ते आदरणीय जिब्रील सहित इस रात धरती पर उतरते हैं तथा उन कामों को पूरा करते हैं जिनका निर्णय इस वर्ष में अल्लाह (*तआला*) फ़रमाता है ।

[2]अर्थात इस में बुराई नहीं अथवा इस अर्थ में शान्ति की रात है कि मोमिन इस रात शैतान के उपद्रव से सुरक्षित रहते हैं । अथवा फ़रिश्ते ईमान वालों को सलाम करते हैं । अथवा फ़रिश्ते परस्पर सलाम करते हैं । *क़द्र* की रात के लिये रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने विशेष रूप से यह दुआ बताई है اللَّهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ العفو فاعْفُ عَنِّي (तिर्मिजी, अववावुद दावात, इब्ने माजा किताबुददुआ)

सूरतुल बय्यिनः इसका दूसरा नाम सूरत لَم يَكُن है । हदीस में है, नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने आदरणीय उबय्य बिन काब से फ़रमाया अल्लाह ने मुझे आज्ञा दी है कि, मैं सूरत ﴿لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا﴾ तुझे पढ़कर सुनाऊँ । माननीय उबय्य ने पूछा, क्या अल्लाह ने आप के सामने मेरा नाम लिया है । आप ने फ़रमाया हाँ । जिस पर (अपार हर्ष से) उबय्य की आँखों में अश्रू आ गये । (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर *सूरत लम यकुन*)

[3]इससे अभिप्राय यहूद तथा ईसाई हैं ।

وَالْمُشْرِكِينَ مُنفَكِّينَ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ①

मूर्तिपूजक[1] लोग, जब तक कि उनके पास स्पष्ट निशानी न आ जाये रूकने वाले न थे (वह निशानी यह थी कि)

رَسُولٌ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ②

(२) अल्लाह (तआला) का एक [2] सन्देष्टा, जो पवित्र पुस्तक पढ़े ।[3]

فِيهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ③

(३) जिसमें ठीक एवं उचित आदेश हों ।[4]

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ④

(४) अहले किताब अपने पास स्पष्ट निशानी आ जाने के पश्चात ही (मतभेद में पड़कर) विभाजित हो गये ।[5]

---

[1]मुशरिक से अभिप्राय अरब तथा अन्य देशों के वे लोग हैं जो मूर्तियों तथा अग्नि के पुजारी थे । مُنفَكِّين रूकने वाले بَيِّنَة (प्रमाण) से अभिप्राय आदरणीय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं । अर्थात यहूद, ईसाई तथा अरब एवं अन्य देशों के मुशरिकीन मानेंगे नहीं यहाँ तक कि उनके पास मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) क़ुरआन लायें तथा उनकी मूर्खता एवं कुमार्ग को बतायें तथा उन्हें ईमान का आमन्त्रण दें ।

[2]अर्थात माननीय मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ।

[3]अर्थात क़ुरआन मजीद जो लौह महफ़ूज़ में पाक (पवित्र) पृष्ठों पर अंकित है ।

[4]यहाँ كُتُب पुस्तकों से अभिप्राय धर्म विधान तथा قَيِّمَة संतुलित एवं सीधे ।

[5]अर्थात ग्रन्थ धारी यहूदी एवं ईसाई माननीय नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आने से पहले एकमत थे । यहाँ तक की आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नबी बनकर आ गये । तत्पश्चात यह विभक्त हो गये उनमें से कुछ मोमिन हो गये किन्तु अधिकाँश ईमान से वंचित ही रहे । नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की (नुबूवत) तथा पैग़म्बरी का प्रमाण कहनें में यह बिन्दू कि आप की सत्यता स्पष्ट थी जिससे इंकार असम्भव था । किन्तु इन्होंने आप को केवल ईर्ष्या तथा शत्रुता के कारण झुठलाया । यही कारण है कि यहाँ विभेद करने वालों में मात्र अहले किताब का नाम लिया है जब कि दूसरों ने भी यह काम किया था । क्योंकि यह लोग जानते थे तथा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आने की चर्चा उनकी किताबों में विद्यमान थी ।

وَمَآ أُمِرُوٓا۟ إِلَّا لِيَعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ حُنَفَآءَ وَيُقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤْتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ ۚ وَذَٰلِكَ دِينُ ٱلْقَيِّمَةِ ۝٥

(५) उन्हें इसके अतिरिक्त कोई आदेश नहीं दिया गया[1] कि केवल अल्लाह की इबादत करें उसी के लिए धर्म को शुद्ध कर रखें। इब्राहीम एकेश्वरवादी[2] के धर्म पर, तथा नमाज को स्थापित रखें तथा ज़कात देते रहें। यही धर्म सत्य तथा शाश्वत का है।[3]

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ مِنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ وَٱلْمُشْرِكِينَ فِى نَارِ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَآ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ ٱلْبَرِيَّةِ ۝٦

(६) नि:संदेह जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हुए तथा मूर्तिपूजक, वे नरक की अग्नि (में जायेंगे) जहाँ वे सदैव रहेंगे, ये लोग निम्न श्रेणी की सृष्टि हैं।[4]

إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ ٱلْبَرِيَّةِ ۝٧

(७) नि:संदेह जो लोग ईमान लाये तथा पुण्य के कार्य किये, ये लोग सर्वोच्च श्रेणी की सृष्टि हैं।[5]

---

[1]अर्थात उनकी किताबों में यह आदेश तो उन्हें दिया गया था।

[2] حَنِيف का अर्थ है झुकना, एकाग्र होना, حُنَفَاء बहुवचन है अर्थात बहुदेववाद से एकेश्वरवाद की ओर तथा सभी मतों से कटकर इस्लाम धर्म की ओर झुकते तथा एकाग्र होते हुए। जैसे माननीय इब्राहीम ने किया।

[3] القَيِّمَة विशेष्य लुप्त का विशेषण है دِينُ المِلَّةِ القَيِّمَةِ यही इस मिल्लत एवं उम्मत का धर्म है जो सीधा-संतुलित है। अधिकाँश विद्वानों ने इस आयत से यह भाव निकाला है कि कर्म ईमान में प्रविष्ट है। (इब्ने कसीर)

[4]यह अल्लाह के रसूलों तथा उसके शास्त्रों का इंकार करने वालों का परिणाम है। तथा उन्हें पूरी सृष्टि से अवाक्षनीय कहा गया है।

[5]जो दिल से ईमान लाये तथा अंगों से कर्म किये वह पूरी सृष्टि से उत्तम तथा प्रधान हैं। जो विद्वान यह मानते हैं कि मोमिन बंदे फ़रिश्तों से उत्तम तथा प्रतिष्ठित है उनका तर्क यह आयत भी है। البَرِيَّة यह بَرَأَ (خَلَق) से है जिसका अर्थ पैदा करना है। इसी से

جَزَآؤُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۖ رَّضِىَ ٱللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْهُ ۚ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِىَ رَبَّهُۥ ﴿٨﴾

(८) उनका बदला उनके प्रभु के पास स्थायी रहने वाले स्वर्ग हैं जिनके नीचे (शीतल जल की) सरितायें प्रवाहित हैं जिनमें वे सदैव रहेंगे। अल्लाह (तआला) उनसे प्रसन्न हुआ[1] तथा ये उससे ।[2] ये है उसके लिये जो अपने प्रभु से डरे।[3]

सूरतुज़ ज़िल्ज़ाल-९९

سُورَةُ الزَّلْزَالِ

सूरतुज़ ज़िल्ज़ाल मदीने में अवतरित हुई तथा इसमें आठ आयतें हैं।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

अल्लाह का विशेषण البَارِي है। इसलिये بَرِيَّة वास्तव में بَرِيئَة है हमज़ा को या से बदल दिया फिर या की या में संधि कर दिया।

[1]उनके ईमान, पुण्य के कर्म तथा अनुज्ञा के कारण तथा अल्लाह की प्रसन्नता सबसे महान है। ﴿وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ﴾ (*अततौबः-७२*)

[2]इसलिये कि अल्लाह ने उन्हें ऐसे उपहारों से सम्मानित कर दिया जिसमें उनकी आत्मा तथा शरीर दोनों का सौभाग्य है।

[3]अर्थात यह बदला तथा प्रसन्नता उन लोगों के लिये है। जो दुनिया में अल्लाह से डरते रहते हैं तथा इस डर के कारण अल्लाह की अवज्ञा से बचते हैं। यदि किसी समय मानवीय अभियाचना के कारण अल्लाह की अवज्ञा हो गई तो तुरन्त क्षमा याचना कर ली। तथा भविष्य के लिये अपना सुधार कर लिया यहाँ तक कि उनकी मौत इसी आज्ञा पालन पर हुई न कि अवज्ञा पर। इसका अर्थ यह है कि जो अल्लाह का डर रखता है वह अवज्ञा पर दुराग्रह नहीं करता न उस पर स्थिर रहता। तथा जो ऐसा करता है वास्तव में उसका दिल अल्लाह के भय से शून्य है।

सूरतुज़ ज़िल्ज़ाल : इसके मक्की तथा मदनी होनें में मतभेद है। इसकी प्रधानता में अनेकों रिवायतें हैं, किन्तु उनमें से कोई भी सही नहीं है।

(१) जब धरती पूर्णरूप से कंपित कर दी जायेगी ।[1] — إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿١﴾

(२) तथा अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी ।[2] — وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ﴿٢﴾

(३) तथा मनुष्य कहने लगेगा कि उसे क्या हो गया ?[3] — وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ﴿٣﴾

(४) उस दिन धरती अपनी सभी सूचनायें वर्णन कर देगी ।[4] — يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ﴿٤﴾

(५) इसलिए कि तेरे प्रभु ने उसे आदेश दिया होगा ।[5] — بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ﴿٥﴾

---

[1]इसका अभिप्राय यह है कि प्रचण्ड भूंचाल से पूरी धरती कांप जायेगी । तथा प्रत्येक चीज़ टूट-फूट जायेगी । यह समय होगा जब पहला नफ़ख़ा (फूँक) होगी ।

[2]अर्थात धरती में जितने इंसान गड़े हुए हैं वह धरती का बोझ हैं । जिन्हें धरती क़ियामत के दिन निकाल फेंकेगी । अर्थात अल्लाह के आदेश से सब जीवित होकर बाहर निकल आयेंगे यह दूसरे नफ़ख़े (फूँक) में होगा । इस प्रकार धरती के कोष भी बाहर निकल आयेंगे ।

[3]अर्थात भयभीत होकर कहेगा इसे क्या हो गया है ? यह क्यों इस प्रकार हिल रही है तथा अपने कोष उगल रही है ।

[4]यह शर्त का उत्तर है । हदीस में है नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह आयत पढ़ी तथा प्रश्न किया, जानते हो धरती की सूचनाऐं क्या हैं ? सहाबा ने उत्तर दिया अल्लाह तथा उसके रसूल उचित प्रकार जानते हैं । आपने फ़रमाया : उसकी सूचनायें यह हैं कि जिस बन्दे अथवा बन्दी ने धरती के ऊपर जो कुछ किया होगा उसकी गवाही देगी कहेगी अमुक-अमुक व्यक्ति ने अमुक-अमुक कर्म अमुक-अमुक दिन किया था । (तिर्मिज़ी अबवाबु सिफ़ातिल क़ियाम: तथा तफ़सीर इज़ा ज़ुलज़िलत, मुसनद अहमद २\३७४)

[5]अर्थात धरती को यह बोलने की शक्ति अल्लाह प्रदान करेगा । इलसिये इसमें आश्चर्य की बात नही । (जैसे इंसानी अंगों में यह शक्ति पैदा कर देगा) धरती को भी अल्लाह (तआला) बोलने वाली बना देगा, तथा वह उसकी आज्ञा से बोलेगी ।

(६) उस दिन लोग विभिन्न समूहों में होकर लौटेंगे[1] ताकि उन्हें उनके कर्म दिखा दिये जायें।[2]

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ⑥

(७) तो जिसने कण के समतुल्य भी पुण्य किया होगा वह उसे देख लेगा।[3]

فَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ⑦

(८) तथा जिसने कण के समतुल्य भी पाप किया होगा, वह उसे देख लेगा।[4]

وَمَن يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ⑧

---

[1] يَصْدُرُ (लौटेंगे) यह وُرُود का विलोम है। अर्थात क़ब्रों से निकलकर हिसाब के स्थान की ओर अथवा हिसाब के पश्चात स्वर्ग तथा नरक की ओर लौटेंगे أَشْتَاتًا अलग-अलग समूहों में कुछ भयभीत होंगे कुछ निर्भय। कुछ के रंग सफेद होंगे जैसे स्वर्ग वासियों के होंगे। कुछ के काले जो उनके नरकीय होने का चिन्ह होगा। कुछ का मुख दाईं ओर होगा कुछ का बाईं ओर, अथवा वह विभिन्न गरोह धर्मों तथा मतों एवं कर्मों को आधार पर होंगे।

[2]इसका सम्बन्ध يَصْدُرُ से है अथवा أَوْحَىٰ لَهَا से है अर्थात धरती अपनी सूचनायें इसलिये देगी ताकि मनुष्यों को उनके कर्म दिखा दिये जायें।

[3]तथा वह उससे प्रसन्न होगा।

[4]वह इस पर अति लज्जित तथा व्याकुल होगा। ذَرَّة कुछ के विचार मे चींटी से भी छोटी चीज़ कुछ के विचार से धरती पर हाथ मारने सें जो धूल हाथ में लग जाती है वह ذَرَّة है। कुछ के निकट छिद्र से जो सूर्य की किरण आती है उसमें जो धूल के कण दिखाई देते हैं वह ذَرَّة है। परन्तु इमाम शौकानी ने प्रथम अर्थ को उत्तम माना है। इमाम मुकातिल कहते हैं कि यह आयत उन दो व्यक्तियों के विषय में उतरी है जिनमें से एक मंगन को थोड़ा दान देने में संकोच करता तथा दूसरा छोटा पाप करनें में कोई भय न खाता था। (फ़तहुल क़दीर)

सूरतुल आदियात-१००

سُورَةُ العَادِيَاتِ

सूरतुल आदियात मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें ग्यारह आयतें हैं।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَٱلۡعَٰدِيَٰتِ ضَبۡحٗا ١

(१) हाँपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की सौगन्ध।[1]

فَٱلۡمُورِيَٰتِ قَدۡحٗا ٢

(२) फिर टाप मारकर आग झाड़ने वालों की सौगन्ध।[2]

فَٱلۡمُغِيرَٰتِ صُبۡحٗا ٣

(३) फिर प्रातः काल में धावा बोलने वालों की सौगन्ध।[3]

فَأَثَرۡنَ بِهِۦ نَقۡعٗا ٤

(४) तो उस समय धूल उड़ाते हैं।[4]

---

[1] ***सूरतुल आदियात*** : عَادِيَاتٌ यह عَادِيَةٌ का बहुवचन है। यह عَدوٌ से है जैसे غَزوٌ है غَازِيَاتٌ के समान उसके "वाव" को भी याँ से बदल दिया गया। वेगगामी घोड़े ضَبۡحٌ का अर्थ कुछ ने हाँपना लिया तथा कुछ ने हिनहिनाना। तात्पर्य वह घोड़े हैं जो हाँपते अथवा हिनहिनाते हुए धर्मयुद्ध में शत्रु की ओर दौड़ते हैं।

[2] مُورِيَاتٌ बना है إِيرَاءٌ से आग निकालने वाले قَدۡحٌ का अर्थ صَكٌّ है चलने में घुटनों अथवा एड़ियों का टकराना अथवा टाप मारना। इसी से قَدۡحٌ بِالزِّنَاد है। चकमा से आग निकलना अर्थात उन घोड़ों की सौगन्ध है जिनकी टापों की रगड़ से पत्थरों से आग निकलती है। जैसे चकमाक से निकलती है।

[3] مُغِيرَاتٌ लिया गया है أَغَارَ يُغِيرُ से रात में आक्रमण करने अथवा धावा बोलने वाले صُبۡحًا भोर के समय अरब में साधारणतः आक्रमण इसी समय किया जाता था। निशाक्रमण तो वह करते हैं जो सैनिक घोड़ों पर सवार होते हैं परन्तु इसे घोड़ों से सम्बन्धित इसलिये किया है कि धावा बोलने में यह सैनिकों के बहुत काम आते हैं।

[4] أَثَارَ उड़ाना نَقۡعٌ धूल। अर्थात जिस समय यह घोड़े तेज़ी से दौड़ते अथवा धावा बोलते हैं तो उस स्थान पर धूल छा जाती है।

فَوَسَطْنَ بِهِۦ جَمْعًا ۝٥	(५) फिर उसी के साथ सेनाओं के मध्य घुस जाते हैं ।[1]
إِنَّ الْإِنسَانَ لِرَبِّهِۦ لَكَنُودٌ ۝٦	(६) नि:संदेह मनुष्य अपने प्रभु का अति कृतघ्न है ।[2]
وَإِنَّهُۥ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ۝٧	(७) तथा निश्चित रूप से वह स्वयं भी उस पर गवाह है ।[3]
وَإِنَّهُۥ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۝٨	(८) तथा ये माल के प्रेम में भी अति कठोर है ।[4]
أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۝٩	(९) क्या उसे वह समय ज्ञात नहीं, जब क़ब्रों में जो कुछ है निकाल दिये जायेंगे ।[5]
وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ۝١٠	(१०) तथा सीनों में छिपी बातों को प्रकट कर दिया जायेगा ।[6]

---

[1] فَوَسَطْنَ मध्य में घुस जाते हैं, उस समय अथवा धूल की अवस्था में جَمْعًا शत्रु की सेना अभिप्राय है कि उस समय अथवा जब वातावरण धूल-धप्पड़ से अटा होता है। यह घोड़े शत्रु की सेना में घुस जाते हैं तथा घमसान की लड़ाई लड़ते हैं।

[2] यह सौगन्ध का उत्तर है। इंसान से अभिप्राय काफ़िर, अर्थात कुछ लोग है كَنُودٌ का अर्थ كَفُورٌ(कृतघ्न) है।

[3] अर्थात इंसान स्वयं अपनी कृतघ्नता का साक्षी है। कुछ لَشَهِيدٌ का कर्ता अल्लाह को मानते हैं। परन्तु इमाम शौकानी ने प्रथम अर्थ को प्रधानता दिया है। क्योंकि बाद की आयतों में सर्वनाम इंसान ही की ओर फिरता है, इसलिये यहाँ भी इंसान होना अधिक सही है।

[4] خَيْرٌ से तात्पर्य धन है। जैसे ﴿إِن تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ﴾ (*अलबक़र:-१८०*) में है, अर्थ स्पष्ट है। एक अन्य भावार्थ यह है कि अति कृपण तथा लोभी है जो धन के प्रेम का अनिवार्य परिणाम है।

[5] بُعْثِرَ نُثِرَ و بُعِثَ अर्थात क़ब्रों के मुर्दों को जीवित करके खड़ा कर दिया जायेगा।

[6] حُصِّلَ مُيِّزَ وبُيِّنَ अन्त:करण की बातों को खोलकर व्यक्त कर दिया जायेगा।

إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ ⑪

(११) नि:संदेह उनका प्रभु उस दिन उनके हाल से पूर्णरूप से परिचित होगा ।[1]

सूरतुल क़ारिअ:-१०१

سُورَةُ الْقَارِعَةِ

सूरतुल क़ारिअ: मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें ग्यारह आयतें हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

الْقَارِعَةُ ①

(१) खड़खड़ा देने वाली ?[2]

مَا الْقَارِعَةُ ②

(२) क्या है वह खड़खड़ा देने वाली ?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ③

(३) तुझे क्या पता कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है ?

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ④

(४) जिस दिन मनुष्य बिखरे हुए पतिंगों की भाँति हो जायेंगे ।[3]

---

[1]अर्थात जो प्रभु उन्हें क़ब्रों से निकालेगा उनके मन की बातें प्रकाश में लायेगा । वह कितना जानकार हो सकता है । फिर वही प्रत्येक को उसके कर्मानुसार बदला देगा । यह मानो उनको चेतावनी है जो प्रभु के उपकारों की कृतघ्नता करते तथा माल के प्रेम में दूसरों का अधिकार पूरा नहीं करते जो अल्लाह ने दूसरों के लिये रखे हैं ।

[2]*सूरतुल क़ारिअ:* : यह भी प्रलय के नामों में से एक नाम है जैसे इससे पूर्व इसके अनेक नाम गुज़र चुके हैं जैसे الْحَاقَّةُ *अलहाक्क:* الطَّامَّةُ *अत्ताम्म:,* الصَّاخَّةُ *अस्साख़्ख़:,* الْغَاشِيَةُ *अलग़ाशिय:,* السَّاعَةُ *अस्साअ:* الْوَاقِعَةُ *अलवाक़िअ:* आदि । *अलक़ारिअ:* इसे इसलिये कहते हैं कि यह अपनी भयानकता के कारण दिलों को भयभीत तथा अल्लाह के शत्रुओं को यातना से सूचित करेगी जैसे द्वार खटखटाने वाला करता है ।

[3] فَرَاشٌ दीप के पास भ्रमित पतंगे, आदि مَبْثُوثٌ फैले तथा बिखरे हुए । अर्थात क़ियामत के दिन मनुष्य भी पतंगों की भाँति फैले तथा बिखरे हुए होंगे ।

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ ۝ (५) तथा पर्वत धुने हुए रंगीन ऊन की भाँति हो जायेंगे ।[1]

فَأَمَّا مَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝ (६) फिर जिसके पलड़े भारी होंगे ।[2]

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝ (७) वह तो अत्यन्त सुखदायी जीवन में होगा ।[3]

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝ (८) तथा जिसके पलड़े हल्के होंगे ।[4]

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝ (९) उसका ठिकाना 'हाविया' है ।[5]

---

[1] عِهْنٌ उस ऊन को कहते हैं जो अनेक रंगों के रंगे हुये हों مَنفُوش धुने हुए। यह पर्वतों की स्थिति बताई गई है जो प्रलय के दिन उनकी होगी। पवित्र क़ुरआन में पर्वतों की यह स्थिति अनेक रूपों से वर्णन की गई है। जिसका विवरण पहले गुज़र चुका है। अब आगे दो गरोहों का संक्षिप्त वर्णन किया जा रहा है। जो प्रलय के दिन कर्मानुसार होंगे।

[2] مَوَازِين बहुवचन مِيزَان का है तराज़ू (तुला) जिसमें कर्मपत्र तौले जायेंगे। जैसाकि इस की चर्चा *सूरतुल आराफ़* (आयत-८) *सूरतुल कहफ़* (१०५) तथा *सूरतुल अम्बिया* (४७) में भी गुज़री है। कुछ कहते हैं कि यह मीज़ान नहीं मौज़ून का बहुवचन है अर्थात ऐसे कर्म जिनका अल्लाह के यहाँ कोई महत्व तथा विशेष वज़न होगा (फ़तहुल क़दीर) किन्तु पहला अर्थ उचित तथा सही है। अभिप्राय यह है कि जिनके पुण्य अधिक होंगे तथा कर्मों को तोलने के समय उनका पलड़ा भारी होगा।

[3] अर्थात ऐसा जीवन जिसे जीवित व्यक्ति प्रिय मानेगा।

[4] अर्थात जिसकी बुराईयाँ-भलाईयों से अधिक होंगी तथा बुराईयों का पलड़ा भारी एवं पुण्य का हल्का होगा।

[5] هَاوِيَة नरक का नाम है। उसको हाविया इस कारण कहते हैं कि नरकीय उसकी गहराई में गिरेगा। तथा उसे أُمٌّ (माँ) इसलिये व्यंजित किया गया जिस प्रकार माँ बच्चों के लिए शरणागार होती है इसी प्रकार नरकियों का शरणागर नरक होगी। कुछ कहते हैं कि أُمٌّ अर्थ दिमाग होता है। नरकीय नरक में सिर के बल डाले जायेंगे (इब्ने कसीर)

وَمَآ أَدۡرَىٰكَ مَا هِيَهۡ ⑩ (१०) तुझे क्या पता कि वह क्या है ।[1]

نَارٌ حَامِيَةٌ ⑪ (११) वह अति तीब्र भड़कती हुई अग्नि है ।[2]

सूरतुत तकासुर-१०२

سُورَةُ التَّكَاثُرِ

सूरतुत तकासुर मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें आठ आयतें हैं ।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

أَلۡهَىٰكُمُ ٱلتَّكَاثُرُ ① (१) अधिकता के प्रेम ने तुम्हें अचेत कर दिया ।[3]

---

[1]यह प्रश्न उसकी गंभीरता तथा भयानकता दिखाने के लिये है, कि वह मानवी विचार एवं कल्पना से उच्च है । मानव ज्ञान उसे घेर नहीं सकते न उसकी यथार्थता जान सकते हैं ।

[2]जैसे हदीस में है कि मनुष्य संसार में जो आग जलाता है यह नरक की आग का सत्तरवाँ भाग है । नरक की आग दुनियाँ की आग से उनहत्तर गुना अधिक है (सहीह अलबुख़ारी, किताबु बदइल ख़ल्क, बाबु सिफातिन्नारे व अन्नहा मख़लूकह, मुस्लिम किताबुल जन्नते, बाबुन फी शिद्दति हर्रे नारे जहन्नम) एक अन्य हदीस में है कि आग ने अपने प्रभु से शिकायत की कि मेरा एक भाग दूसरे भाग को खाये जा रहा है अल्लाह ने उसे दो साँस लेने की अनुमति प्रदान कर दी एक साँस गर्मी में एक साँस जाड़े में । अतः जो कड़ी शीत होती है वह उसकी शीतल साँस है तथा जो कड़ी गर्मी पड़ती है वह उसकी गर्म साँस है (बुख़ारी उपरोक्त अध्याय) एक अन्य हदीस में नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने फ़रमाया : जब गर्मी अधिक कड़ी हो तो नमाज़ ठंडी करके पढ़ो । इसलिये की कड़ी गर्मी नरक के उबाल के कारण पैदा होती है । (उपरोक्त हवाला, मुस्लिम किताबुल मसाजिद)

[3]***सूरतुत तकासुर*** : أَلْهَىٰ يُلْهِي का अर्थ है निश्चिन्त कर देना । تَكَاثُر अधिक की अभिलाषा, यह सामान्य है । धन, संतान, सहायक, समर्थक, परिवार, जाति सबको सम्मिलित है । प्रत्येक वह वस्तु जिसकी अधिकता मनुष्य को प्रिय हो । तथा अधिकता की प्राप्ति का

(२) यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तान जा पहुँचे ।[1] حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝٢

(३) कदापि -नही[2] तुम शीघ्र ही ज्ञात कर लोगे । كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٣

(४) फिर कदापि नहीं तुम्हें शीघ्र ही ज्ञात हो जायेगा ।[3] ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٤

(५) कदापि नहीं यदि तुम निश्चित रूप से जान लो ।[4] كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝٥

(६) तो निःसंदेह तुम नरक देख लोगे ।[5] لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝٦

(७) तो तुम उसे विश्वास के नेत्र से देख लोगे ।[6] ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝٧

प्रयास तथा आकांक्षा उसे अल्लाह के आदेशों एवं परलोक से विमुख कर दे । यहाँ अल्लाह मनुष्य की कमज़ोरी बता रहा है जिसमें अधिकाँश मनुष्य प्रत्येक युग में ग्रस्त रहे हैं ।

[1]इसका अर्थ यह है प्राचुर्य प्राप्त करने के लिए परिश्रम करते-करते तुम्हें मौत आ गई तथा तुम समाधि स्थलों (क़ब्रों) में जा पहुँचे ।

[2]तुम जिस अधिकता की आकांक्षा तथा परस्पर गर्व में लीन हो यह सही नहीं ।

[3]इसका परिणाम तुम शीघ्र ही जान लोगे, यह बल देने के लिये दोबार फ़रमाया ।

[4]इसका उत्तर छिप्त है । अभिप्राय यह है कि तुम इस विमुखता का परिणाम इस प्रकार निश्चित रूप से जान लो । जिस प्रकार दुनियाँ की किसी देखी-भाली वस्तु का तुम्हें विश्वास होता है । तो तुम इस अधिकता के प्रयास तथा परस्पर गर्व में न पड़ो ।

[5]यह लुप्त सौगन्ध का उत्तर है । अर्थात अल्लाह की सौगन्ध तुम नरक अवश्य देखोगे अर्थात उसकी यातना भोगोगे ।

[6]पहला देखना दूर से होगा । यह देखना समीप से होगा इसीलिये इसे عَيْنَ الْيَقِيْن जिसका विश्वास आँख से देखकर किया गया हो । कहा गया है ।

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ ٱلنَّعِيمِ ⑧

(८) फिर उस दिन तुमसे अवश्य-अवश्य उपहारों का प्रश्न होगा ।[1]

سُورَةُ الْعَصْرِ

सूरतुल अस्र-१०३

सूरतुल अस्र मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें तीन आयतें हैं ।

بِسْمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحْمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

وَٱلْعَصْرِ ①

(१) काल की सौगन्ध ।[2]

إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ لَفِى خُسْرٍ ②

(२) वास्तव में समस्त मनुष्य सर्वथा घाटे में है ।[3]

---

[1]यह प्रश्न उन नेमतों (अनुकम्पाओं) के बारे में होगा जो अल्लाह ने दुनियाँ में दी है। जैसे आँख, कान, दिल, शान्ति, स्वास्थ, धन, सम्पत्ति तथा संतान आदि कुछ कहते हैं कि प्रश्न केवल काफ़िरों से होगा। कुछ कहते हैं कि प्रत्येक ही से होगा क्योंकि केवल प्रश्न ही यातना का कारण नहीं होगा । जिन्होंने अनुग्रह का प्रयोग अल्लाह के आदेशों के आधीन रहकर किया होगा वह प्रश्न के उपरान्त भी यातना से सुरक्षित रहेंगे तथा जिन्होंने कृतघ्ना की होगी वह धर लिये जायेंगे।

[2]***सूरतुल अस्र*** : युग से अभिप्राय रात-दिन का यह चक्कर है तथा उनका अदल-बदल कर आना। रात आती है तो अंधकार हो जाता है तथा दिन से प्रत्येक वस्तु प्रकाशित हो जाती है । इसके सिवा कभी रात लम्बी तथा दिन छोटा एवं रात लम्बी हो जाती है यदि दिनों का यही चक्कर युग है जो अल्लाह की पूर्ण शक्ति तथा सामर्थ्य का संकेत देता है। अतः पालनहार ने उसकी शपथ ली है। यह पहले बतलाया जा चुका है कि अल्लाह तो अपनी सृष्टि में से जिसकी चाहे शपथ ग्रहण कर सकता है। किन्तु इंसान के लिये अल्लाह के अतिरिक्त किसी की सौगन्ध खाना वैध नहीं है।

[3]यह सौगन्ध का उत्तर है। इंसान की क्षति एवं विनाश स्पष्ट है कि जब तक वह जीवित रहता है उसके दिन घोर परिश्रम में व्यतीत होता है। फिर जब मर जाता है तो मौत के पश्चात भी सुख नहीं मिलता। बल्कि वह नरक का ईंधन बनता है।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿٣﴾

(३) उनके अतिरिक्त जो ईमान लाये तथा पुण्यकारी कार्य किये[1] तथा (जिन्होंने) आपस में सत्य की वसीयत की[2] तथा एक-दूसरे को धैर्य रखने का उपदेश दिया।[3]

सूरतुल हुमज़:-१०४

سُورَةُ الْهُمَزَةِ

सूरतुल हुमज़: मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें नौ आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ﴿١﴾

(१) बड़ी ख़राबी है उस व्यक्ति की जो त्रुटियाँ टटोलने वाला चुगली करने वाला हो।[4]

---

[1]हाँ इस घाटे से वे लोग सुरक्षित हैं जो ईमान तथा पुण्य के कर्मों से युक्त हैं मौत के पश्चात वस्तुत: अनन्त प्रदानों तथा स्वर्ग के सुखद जीवन से सफल होंगे। आगे ईमान वालों के अन्य सद्गुणों की चर्चा है।

[2]अर्थात अल्लाह के धर्म विधानों का पालन तथा अवैधानिक एवं अवज्ञा से बचने का सदुपदेश।

[3] अर्थात दुखों तथा अपवादों पर धैर्य धर्म के आदेशों तथा विधानों का पालन करनें में धैर्य। अवज्ञा से बचने, स्वार्थों तथा आकांक्षाओं के त्याग पर धैर्य। धैर्य भी यद्यपि सत्य के सदुपदेश में सम्मिलित है फिर भी विशेष रूप से उसकी अलग से चर्चा की गई है जिससे उसकी प्रधानता तथा प्रतिष्ठा स्पष्ट है।

[4]***सूरतुल हुमज़:*** : هُمَزَة तथा لُمَزَة कुछ के विचार में पर्यायवाची हैं, कुछ उसमें कुछ अन्तर करते हैं। हुमजा वह व्यक्ति जो सामने बुराई करे तथा लुमजा जो पीठ-पीछे बुराई करे। कुछ इससे विपरीत अर्थ करते हैं। कुछ कहते हैं हम्ज आँखों तथा हाथों के इशारे से बुराई करना तथा लम्ज जबान से।

(२) जो माल को एकत्रित करता जाये तथा गिनता जाये ।[1]

الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ۝٢

(३) वह समझे कि उसका माल उसके पास सदैव रहेगा ।[2]

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ۝٣

(४) कदापि-नहीं[3] यह तो अवश्य तोड़-फोड़ देने वाली अग्नि में फेंक दिया जायेगा ।[4]

كَلَّا لَيُنْبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝٤

(५) तथा तुझे क्या पता कि ऐसी अग्नि क्या कुछ होगी ?[5]

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥

(६) वह अल्लाह (*तआला*) की सुलगायी हुई आग होगी ।

نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ ۝٦

(७) जो दिलों पर चढ़ती चली जायेगी ।[6]

الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ۝٧

---

[1]इससे अभिप्राय यही है एकत्रित करना तथा गिन-गिन कर रखना अर्थात सैंत-सैंत कर रखना तथा अल्लाह की राह में ख़र्च न करना । अन्यथा धन रखना निषेध नहीं यह उसी समय निहित है जब ज़कात सदके (दान) तथा अल्लाह के मार्ग में व्यय करने का प्रबन्ध न हो ।

[2] أَخْلَدَهُ का अधिक उचित अनुवाद यह है कि उसे सदैव जीवित रखेगा अर्थात यह धन जिसे वह एकत्र करके रखता है उसकी आयु बढ़ा देगा तथा उसे मरने नहीं देगा ।

[3]अर्थात मामला ऐसा नहीं है जैसाकि उनका विचार तथा अनुमान है ।

[4]अर्थात ऐसा कंजूस व्यक्ति حُطَمَة में फेंक दिया जायेगा । यह भी नरक का एक नाम है । तोड़-फोड़ देने वाली ।

[5]यह प्रश्न उसकी भयानकता दिखाने के लिये है कि तुम उसका ज्ञान नहीं कर सकते तथा तुम्हारी समझ उसकी गहराई तक नहीं पहुँच सकती ।

[6]अर्थात उसका ताप दिलों तक पहुँच जायेगा । वैसे तो संसार की आग में भी यह विशेषता है कि वह प्रत्येक वस्तु को जला डालती है । परन्तु दुनियाँ में यह आग दिल तक नहीं पहुँचती कि इंसान की मौत इससे पहले हो जाती है । नरक में ऐसा नहीं होगा, वह

إِنَّهَا عَلَيْهِم مُّؤْصَدَةٌ ﴿٨﴾

(८) तथा उन पर बड़े-बड़े स्तम्भ में।

فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿٩﴾

(९) हर ओर से बंद की हुई होगी।[1]

سُورَةُ الْفِيلِ

सूरतुल फ़ील-१०५

सूरतुल फ़ील मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पाँच आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ﴿١﴾

(१) क्या तूने नहीं देखा कि तेरे प्रभु ने हाथी वालों के साथ क्या किया।[2]

होगा, वह आग दिलों तक भी पहुँचेगी किन्तु मौत नहीं आयेगी अपितु कामना के उपरान्त भी मौत नहीं आयेगी।

[1] مُؤْصَدَةٌ (बन्द) अर्थात नरक के द्वार तथा मार्ग बन्द कर दिये जायेंगे ताकि कोई बाहर न निकल सके तथा उन्हें लोहे की कीलों से बाँध दिया जायेगा जो लम्बे-लम्बे स्तम्भों के समान होगी। कुछ के विचार में عَمَد से अभिप्राय बेड़ियाँ अथवा तौक़ हैं। कुछ के विचार में स्तम्भ हैं। जिनमें उन्हें यातना दी जायेगी (फ़तहुल क़दीर)

[2] **सूरतुल फ़ील :** जो यमन से ख़ाना कआबा को ढाने आये थे أَلَمْ تَرَ का अर्थ है أَلَمْ تَعْلَمْ क्या तुझे ज्ञान नहीं ? यह प्रश्न सकारात्मक है। अर्थात तू जानता है या वह सब लोग जानते हैं जो तेरे समकालीन है। यह इसलिये फ़रमाया कि अरब में यह घटना घटे अभी अधिक समय व्यतीत नहीं हुआ था। प्रचलित कथनानुसार यह घटना उस समय घटी जिस वर्ष नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* का जन्म हुआ था इसलिये अरब में उस की ख़बरें प्रसिद्ध तथा निरन्तर थीं। यह वाक्य संक्षेप में इस प्रकार है।

हाथी वालों की कथा : हबशा (इथोपिया) के राजा की ओर से यमन में अबरहा अशरम गर्वनर था उस ने सन्आ में एक बड़ा गिरजा निर्माण किया तथा यह प्रयत्न किया कि लोग ख़ान-ए-कअबा के स्थान पर उपासना तथा हज के लिए इधर आया करें। यह बात मक्कावासियों तथा अन्य अरब कबीलों के लिये अति अप्रिय थी। जैसाकि उनमें से एक व्यक्ति ने अबरहा के बनाये उपासना गृह को मल से लीप दिया। जिससे उसको सूचित कर दिया गया कि किसी ने इस प्रकार इस गिरजा को दूषित कर दिया है। जिस

(२) क्या उसने उनकी दुष्प्रयोजन को अकारथ नही कर दिया ?[1]

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ﴿٢﴾

(३) तथा उन पर पक्षियों के झुरमुट भेज दिये ।[2]

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ﴿٣﴾

(४) जो उन्हें मिट्टी तथा पत्थर की कंकरियाँ मार रहे थे ।[3]

تَرْمِيهِم بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ﴿٤﴾

(५) तो उन्हें खाये हुए भूसे की तरह कर दिया ।[4]

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ﴿٥﴾

पर उसने ख़ान-ए-कअ'बा को ढाने का प्रयत्न किया तथा एक भारी सेना लेकर मक्का पर आक्रामण के लिए प्रस्थान किया जिसमें कुछ हाथी भी उसके साथ थे। जब यह सेना वादिये मुहस्सिर के निकट पहुँची तो अल्लाह ने पक्षियों के झुंड भेजे जिनकी चोंचों तथा पंजों में कंकड़ियाँ थीं जो चने अथवा मसूर के बराबर थीं, जिस सैनिक को यह कंकड़ियाँ लगतीं वह पिघल जाता तथा उसका माँस झड़ जाता तथा अन्तत: मर जाता । स्वयं अबरहा का भी सन्आ पहुँचते-पहुँचते यह परिणाम हुआ। इस प्रकार अल्लाह ने अपने घर की रक्षा की। मक्का के निकट पहुँचकर अबरहा की सेना ने नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* के दादा के, जो मक्के के मुख्या थे ऊँटों पर नियन्त्रण कर लिया। जिस पर अब्दुल मुत्तलिब ने आकर अबरहा से कहा कि तू मेरे ऊँट वापस कर दे जो तेरे सैनिकों ने पकड़े हैं। शेष रही ख़ान-ए-कआबा की समस्या जिस को ढाने के लिये तू आया है, तो वह तेरा मामला अल्लाह के साथ है वही उसका रक्षक है। वह उसी का घर है। तू जाने तथा बैतुल्लाह का मालिक अल्लाह जाने (ऐसरूत तफ़ासीर)

[1]अर्थात वह ख़ान-ए-कअ'बा को ढाने का इरादे से आया था। उसमें उसे विफल कर दिया। यह सकारात्मक प्रश्न है

[2] أَبَابِيل यह किसी पक्षी का नाम नहीं इसका अर्थ है झुन्ड ।

[3] سِجِّيل मिट्टी को आग में पकाकर बनाये हुए कंकड़। इन छोटे-छोटे कंकड़ों ने तोप के गोलों तथा बंदूक की गोलियों से अधिक विनाश का काम किया।

[4]अर्थात उनके शरीर के अंश इस प्रकार बिखर गये जैसे खाई हुई भूसी होती है।

सूरतु कुरैश-१०६

سُوْرَةُ قُرَيْشٍ

सूरतु कुरैश मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें चार आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ①

(१) क़ुरैश को प्रेम दिलाने के लिए।

اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ②

(२) (अर्थात) उन्हें जाड़े तथा गर्मी की यात्रा का अनुसेवी बनाने के लिए।[1]

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ③

(३) तो (उस धन्यवाद में) उन्हें चाहिए कि इसी घर के प्रभु की इबादत करते रहें।[2]

सूरतु कुरैश : इसे *सूरतुल ईलाफ* भी कहते हैं। इसका सम्बन्ध भी विगत सूरत से है।

[1] إِيلاف का अर्थ है हिला-मिला तथा अनुसेवी होना। अर्थात इस काम से दुख तथा घृणा का दूर हो जाना। कुरैश की जीविका का साधन व्यापार था वर्ष में दो बार उनका काफ़िला व्यापार के लिये विदेश जाता तथा वहाँ से व्यापार की सामग्री लाता। जाड़े में यमन जो गर्म क्षेत्र था तथा गर्मियों में शाम की ओर जो शीतल था। ख़ान-ए-कअबा के सेवक होने के कारण पूरे अरबवासी उनका आदर करते थे इसलिये उनके काफ़िले बिना रोक-टोक यात्रा करते थे। अल्लाह (*तआला*) इस सूरत में कुरैश को बतला रहा है कि तुम गर्मी तथा जाड़े में जो दो यात्रायें करते हो तो हमारे इस अनुग्रह के कारण कि हमने तुम्हें मक्के में शान्ति प्रदान की तथा अरबवासियों में आदरणीय बनाया। यदि यह बात न होती तो तुम्हारी यात्रा सम्भव न थी तथा हाथी वालों को भी हमने इसीलिए नाश किया की तुम्हारा सम्मान भी रहे तथा तुम्हारी यात्राओं का क्रम (भी जिसके तुम अनुसेवी हो) स्थित रहे यदि अबरहा अपने लक्ष्य में सफल हो जाता तो तुम्हारा आदर मान भी समाप्त हो जाता तथा यात्रा क्रम भी, इसलिये तुम्हें चाहिये कि केवल बैतुल्लाह के प्रभु की उपासना करो।

[2] उपरोक्त व्यापार तथा यात्रा द्वारा।

(४) जिसने उन्हें भूख में भोजन दिया तथा डर (एवं भय) में शान्ति प्रदान किया ।[1]

الَّذِيٓ أَطْعَمَهُم مِّن جُوعٖ وَءَامَنَهُم مِّنْ خَوْفِۭ ۝٤

सूरतुल माऊन-१०७

سُورَةُ المَاعُونِ

सूरतुल माऊन मक्का में अवतरित हुई इसमें सात आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

(१) क्या तूने (उसे भी) देखा जो बदले (के दिन) को झुठलाता है ।[2]

أَرَءَيۡتَ ٱلَّذِي يُكَذِّبُ بِٱلدِّينِ ۝١

(२) यही वह है जो अनाथ को धक्के देता है ।[3]

فَذَٰلِكَ ٱلَّذِي يَدُعُّ ٱلۡيَتِيمَ ۝٢

---

[1]अरब में हत्या तथा लूटपाट सामान्य थी किन्तु मक्का के कुरैश को हरम के कारण जो आदर-मान प्राप्त था उसके कारण वे भय तथा डर से सुरक्षित थे ।

सूरतुल माऊन : इस सूरत को *सूरतुद्दीन, सूरत अरअैत,* तथा *सूरतुल यतीम* भी कहते हैं (फ़तहुल क़दीर)

[2]रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* को सम्बोधित किया गया है । तथा प्रश्न से अभिप्राय आश्चर्य व्यक्त करना है । رُؤيت (देखना) जानने के अर्थ में है तथा دين से तात्पर्य परलोक का हिसाब तथा प्रतिकार है । कुछ कहते हैं कि वाक्य में लोप है मूल वाक्य है, क्या तूने उस व्यक्ति को पहचाना जो प्रतिफल के दिन को झुठलाता है । क्या वह अपनी इस बात में सही है अथवा ग़लत ?

[3]इसलिये कि एक तो कंजूस है । दूसरे प्रलय का इंकारी है, भला ऐसा व्यक्ति अनाथ के साथ क्योंकर अच्छा व्यवहार कर सकता है ? जिसके दिल में धन की जगह मानवीय मूल्यों तथा नैतिक नियमों का महत्व एवं प्रेम होगा वही अनाथ के साथ अच्छा व्यवहार करेगा, दूसरे यह कि उसे इस बात का विश्वास हो कि उसके बदले मुझे क़ियामत (प्रलय) के दिन प्रत्युप्कार (अच्छा बदला) मिलेगा ।

وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ③

(३) तथा निर्धन (भूखे) को भोजन कराने की प्रेरणा नहीं देता ।[1]

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ④

(४) उन नमाज़ियों के लिए 'वैल' (नरक का एक स्थान) है ।

الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ⑤

(५) जो अपनी नमाज़ से अचेत (ग़ाफ़िल) हैं ।[2]

الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ⑥

(६) जो दिखावे का कार्य करते हैं ।[3]

وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ⑦

(७) तथा प्रयोग में आने वाली वस्तुऐं रोकते हैं ।[4]

---

[1]यह काम भी वही करेगा जिसमें उपरोक्त सद्गुण होंगे अन्यथा वह अनाथ की भाँति ग़रीब (फ़क़ीर) को भी धक्का देगा ।

[2]इससे वह लोग तात्पर्य हैं जो नमाज़ या तो पढ़ते ही नहीं अथवा पहले पढ़ते रहे फिर आलसी हो गये । अथवा नमाज़ उसके नियमित समय से नहीं पढ़ते अथवा विलम्ब से पढ़ने की आदत बना लेते हैं अथवा विनम्रता एवं ध्यान से नहीं पढ़ते । यह सभी भावार्थ इसमें आ जाते हैं । अतः नमाज़ में सभी उक्त आलस्य से बचना चाहिये । यहाँ इस स्थान पर चर्चा करने से यह भी स्पष्ट है कि नमाज़ यह आलस्य उन्हीं से होता है जो परलोक के प्रतिकार (बदले) तथा हिसाब, किताब पर विश्वास नहीं रखते । इसलिए मुनाफ़िकों का एक दुर्भाग्य *(सूरत अन्निसा-१४२)* में यह भी बताया गया है ।

﴿وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كُسَالَىٰ يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا﴾

[3]अर्थात ऐसे लोगों का आचरण यह होता है कि लोगों को साथ हुये तो नमाज़ पढ़ ली, अन्यथा नमाज़ पढ़ने की आवश्यकता ही नहीं समझते अर्थात बस दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ते हैं ।

[4] مَاعُونٌ थोड़ी चीज़ को कहते हैं । कुछ इसका अभिप्राय ज़कात (देयदान) लेते हैं । क्योंकि वह भी मूल धन की अपेक्षा अति अल्प होती है । (ढाई प्रतिशत) कुछ ने इससे घरों में प्रयोग की चीज़ें ली हैं । जो पड़ोसी एक-दूसरे से मँगनी में माँग लिया करते हैं । अभिप्राय हुआ घरेलू प्रयोग की वस्तुऐं मंगनी में दे देना । इसमें संकीर्णता न प्रतीत करना अच्छे गुण हैं तथा इसके विपरीत कृपण एवं कंजूसी बर्तना यह क़यामत के निवर्तियों का आचरण है ।

सूरतुल कौसर-१०८

سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ

सूरतुल कौसर मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें तीन आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ①

(१) नि:संदेह हमने तुझे कौसर (तथा बहुत कुछ) दिया है।[1]

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ②

(२) तो तू अपने प्रभु के लिए नमाज पढ़ तथा क़ुर्बानी कर।[2]

सूरतुल कौसर : इसका दूसरा नाम *सूरतुन नहर* भी है।

[1] كَوْثَرٌ *कौसर* كَثْرَةٌ कसरत से है। इसके अनेक वर्णन किये गये हैं। इब्ने कसीर ने خَيْرٌ كَثِيْرٌ (अत्यधिक भलाई) को अधिमान दिया है। क्योंकि इसमें ऐसी साधारणता है जिसमें दूसरे अर्थ भी आ जाते हैं। जैसे सहीह हदीसों में बतलाया गया है कि यह एक नहर है जो स्वर्ग में आपको प्रदान की जायेगी। ऐसे ही कुछ हदीसों में इसका चरितार्थ हौज़ (जलाशय) बताया गया है। जिससे ईमान वाले स्वर्ग में जाने से पहले नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) के करकमलों (हाथों) से पानी पियेंगे। इस जलाशय में भी पानी इसी स्वर्ग की नहर से आ रहा होगा। इसी प्रकार दुनियाँ की विजय तथा आप के शुभ नामों की चर्चा तथा परलोक (आख़िरत) का प्रतिकार एवं पुण्य सब ही चीजें हैं जो "ख़ैरे कसीर" में आ जाती हैं। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात नमाज़ भी केवल अल्लाह के लिये तथा क़ुर्बानी भी केवल एक अल्लाह के नाम पर। बहुदेववादियों के समान इसमें दूसरों को सम्मिलित न कर। نَحْرٌ का मूल अर्थ है ऊँट के गले में नीज़ा अथवा छुरी मार कर वध करना। दूसरे जानवरों को भूमि पर लिटाकर उनके गलों पर छुरी फेरी जाती है उसे ज़िब्ह करना कहते हैं किन्तु यहाँ नहर से अभिप्राय साधारण क़ुर्बानी है। इसके सिवा इसमें दान-पुण्य के रूप में बलि देना, हज के अवसर पर मिना में ईदुल अज़हा के दिन क़ुर्बानी करना सब सम्मिलित है।

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ③

(३) निःसंदेह तेरा शत्रु ही लावारिस एवं बेनाम व निशान है ।[1]

सूरतुल काफ़िरून-१०९

سُورَةُ الْكَافِرُونَ

सूरतुल काफ़िरून मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें छः आयतें हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ①

(१) आप कह दीजिये कि हे काफ़िरो ![2]

---

[1] أبتر ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जिसके संतान न हो अथवा जिसका नाम न रह जाये । अर्थात उसी पर उसका वंश समाप्त हो जाये अथवा उसका कोई नाम लेवा न हो । जब नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* के नर संतान न रही तो कुछ काफ़िरों ने आपको أبتر कहा जिस पर अल्लाह *(तआला)* ने आप के वंश को भी सांत्वना दी, कि أبتر तू नहीं तेरे शत्रु ही होंगे । जैसेकि अल्लाह ने आप के वंश को भी शेष रखा यद्यपि यह पुत्रियों की ओर से है, इसी प्रकार आप की उम्मत (अनुयायी) भी आपकी संतान स्वरूप ही है जिसकी अधिकता पर आप क़ियामत के दिन गर्व करेंगे । इसके सिवा आप का नाम पूरे विश्व में अति आदर-मान से लिया जाता है । जबकि आप के शत्रु मात्र इतिहास के पन्नों में रह गये । परन्तु किसी दिल में उनका सम्मान नहीं तथा किसी ज़बान पर उनकी शुभ चर्चा नहीं ।

सूरतुल काफ़िरून : सही हदीसों से सिद्ध है कि रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तवाफ़* (परिक्रमा) की दो रकअतों, तथा *फ़ज्र* एवं *मग़रिब* की सुन्नतों में ﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ﴾ तथा *सूरतुल इख़्लास* पढ़ते थे । इसी प्रकार आप ने कुछ सहाबा से फ़रमाया कि रात को सोते समय यह सूरत पढ़कर सोओगे तो शिर्क से निर्दोष माने जाओगे । (मुसनद अहमद ५।४५६, तिर्मिज़ी क्रम संख्या ३४०३, अबूदाऊद न॰ ५०५५, मजमउज़ ज़वायेद १०।१२१) कुछ रिवायतों में स्वयं आप का कर्म भी यही बतलाया है । **(इब्ने कसीर)**

[2] الكافرون में अलिफ़, लाम साधारणता के लिये है परन्तु यहाँ विशेष रूप से उन काफ़िरों से सम्बोधन है । जिनके विषय में अल्लाह को ज्ञान था कि उनका अंत कुफ़्र पर

لَآ أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝٢

(२) न मैं इबादत करता हूँ उसकी जिसकी तुम पूजा करते हो।

وَلَآ أَنتُمْ عَٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ ۝٣

(३) तथा न तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूँ।

وَلَآ أَنَا۠ عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ ۝٤

(४) तथा न मैं इबादत करने वाला हूँ उसकी जिसकी तुमने इबादत की।

وَلَآ أَنتُمْ عَٰبِدُونَ مَآ أَعْبُدُ ۝٥

(५) न तुम उसकी इबादत करोगे जिसकी इबादत मैं कर रहा हूँ।[1]

لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِىَ دِينِ ۝٦

(६) तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म है तथा मेरे लिये मेरा धर्म है।[2]

होगा क्योंकि इस सूरह के उतरने के पश्चात कई मुशरिक मुसलमान हुए तथा उन्होंने अल्लाह की इबादत की। (फ़तहुल क़दीर)

[1]कुछ ने पहली आयत को वर्तमान तथा दूसरी को भविष्य के अर्थ में लिया है। किन्तु इमाम शौकानी ने कहा है कि इन आडंबरों की आवश्यकता नहीं। बल देने हेतु पुनरावृत्ति अरबी भाषा की साधारणतया शैली है। जिसे पवित्र क़ुरआन के कई स्थानों पर अपनाया गया है जैसे *सूरत रहमान* तथा *सूरत मुर्सलात* में है। इसी प्रकार बल देने हेतु यह वाक्य भी यहाँ दुहराया गया है। उद्देश्य यह है कि, यह कभी संभव नहीं कि मैं तौहीद (एकेश्वरवाद) का मार्ग त्याग कर शिर्क का मार्ग अपना लूँ। जैसाकि तुम चाहते हो। यदि अल्लाह ने तुम्हारे भाग्य में मार्गदर्शन नहीं लिखा है, तो तुम भी इस तौहीद तथा अल्लाह की उपासना से वंचित रहोगे। यह उस समय फ़रमाया गया जब काफ़िरों ने यह प्रस्ताव रखा कि एक वर्ष आप हमारे देवताओं की पूजा करें तथा एक वर्ष हम आपके देवताओं की पूजा करें।

[2]अर्थात यदि तुम अपने धर्म पर प्रसन्न हो तथा उसे त्यागने के लिए तैयार नहीं, तो मैं अपने धर्म पर प्रसन्न हूँ, मैं क्योंकि छोड़ दूँ।

﴿لَنَآ أَعْمَٰلُنَا وَلَكُمْ أَعْمَٰلُكُمْ﴾ (अल-क़सस-५५)

सूरतुन नस्र-११०

سُوْرَةُ النَّصْرِ

सूरतुन नस्र मदीने में अवतरित हुई तथा इसमें तीन आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(१) जब अल्लाह की सहायता एवं विजय प्राप्त हो जाये।

إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ①

(२) तथा तू लोगों को अल्लाह के धर्म की ओर झुंड के झुंड आता देख ले।[1]

وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ أَفْوَاجًا ②

(३) तू अपने प्रभु की महिमा एवं प्रशंसा करने में लग, तथा उससे क्षमा की प्रार्थना

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ

सूरतुन नस्र : अवतरण के हिसाब से यह अन्तिम सूरत है (सहीह मुस्लिम किताबुत तफ़सीर) यह सूरत उतरी तो कुछ सहाबा समझ गये कि अब नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) का अन्तिम समय आ गया है, इसलिये आपको तस्बीह तथा क्षमा याचना का आदश दिया गया है। जैसे आदरणीय इब्ने अब्बास तथा माननीय उमर का वाक्य सहीह बुख़ारी में है। (तफ़सीर *सुरतिन नस्र*)

[1]अल्लाह की सहायता से अभिप्राय है इस्लाम तथा मुसलमानों का कुफ्र तथा काफ़िरों पर प्रभुत्व। तथा فَتْح विजय से तात्पर्य मक्का की विजय है जो नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) की जन्म भूमि तथा निवास स्थान था, किन्तु काफ़िरों ने आप को तथा आपके सहावा (सहचरों) को वहाँ से स्थानान्तरित होने पर बाध्य कर दिया था,तथा जब सन ८ हिज्री में मक्का विजय हो गया तो लोग झुंड के झुंड ने इस्लाम धर्म में प्रवेश करना आरम्भ कर दिया जबकि इससे पहले एक-एक, दो-दो, मुसलमान होते थे। मक्का विजय से लोगों पर यह बात खुल गई कि आप अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर (संदेष्टा) है। तथा इस्लाम धर्म सत्य धर्म है जिसके बिना पारलौकिक मोक्ष सम्भव नहीं। अल्लाह ने फ़रमाया कि जब ऐसा हो तो।

إِنَّهُۥ كَانَ تَوَّابًۢا ﴿٣﴾

कर,[1] नि:संदेह वह क्षमा करने वाला है।

सूरतुल्लहब-१११

سُورَةُ اللَّهَبِ

सूर: लहब मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पाँच आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ﴿١﴾

(१) अबू लहब के दोनों हाथ टूट गये तथा वह (स्वयं) नाश हो गया।[2]

---

[1]यह समझ कि जो संदेश पहुँचाने तथा सत्य की सत्यता सिद्ध करने का कर्तव्य तेरे ऊपर था। पूरा हो गया, तथा अब तेरा दुनिया से जाने का समय निकट आ गया है। अत: अल्लाह की महिमा उसकी तस्बीह तथा क्षमायाचना की खूब व्यवस्था कर। इससे विदित हुआ कि जीवन के अन्तिम युग में इन चीजों का प्रबन्ध अधिकता से करना चाहिये।

सूरतुल्लहब : इसे *सूरतुल मसद* भी कहते हैं इसके अवतरण के विषय में आता है कि जब नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* को आदेश हुआ कि अपने समीपवर्ती सम्बन्धियों को डरायें तथा उपदेश दें, तो आपने सफा पर्वत पर चढ़कर يَا صَبَاحَاه की आवाज लगाई। ऐसी आवाज ख़तरे का लक्षण मानी जाती थी। जैसाकि आप *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* की पुकार पर लोग एकत्र हो गये। आपने फ़रमाया : तनिक बताओ, यदि मैं तुमको सूचना दूँ कि इस पर्वत के पीछे एक घुड़सवार सेना है जो तुम पर आक्रामण करना चाहती है, तो तुम मेरी बात मानोगे ? उन्होंने कहा क्यों नहीं। हमने आप को कभी झूठा नहीं पाया। आपने फ़रमाया : फिर मैं तुम्हें एक बड़े प्रकोप से डराने आया हूँ। (यदि तुम कुफ़्र तथा शिर्क पर तत्पर रहे) यह सुनकर अबूलहब ने कहा تَبًّا لَكَ तेरा नाश हो। क्या तूने हमें इसके लिये एकत्र किया था जिस पर अल्लाह ने यह सूरत उतारी (सहीह अलबुख़ारी, तफ़सीर *सूरतु तब्बत*) अबूलहब का वास्तविक नाम अब्दुल उज़्ज़ा था। उसकी सुन्दरता तथा शोभा एवं चेहरे की लाली के कारण उसे अबू लहब कहा जाता था। इसके सिवा अपने अन्त के आधार पर भी उसे नरक का ईंधन बनना था। यह नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* का सगा चचा था किन्तु आप का घोर शत्रु। तथा उसकी पत्नी उम्मे जमील बिन्ते हर्ब भी शत्रुता में अपने पति से कम न थी।

[2] يَدَا द्विवचन है يَدٌ का, इससे अभिप्राय वह स्वयं है, अंग बोल कर पूरा लिया गया है। अर्थात नाश तथा बर्बाद हो जाये। यह अभिप्राय उन शब्दों के उत्तर में है। जो उसने

مَآ اَغۡنٰى عَنۡهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۞

(२) न तो उसका माल उसके काम आया तथा न उसकी कमायी ।[1]

سَيَصۡلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۞

(३) वह निकट भविष्य में भड़कने वाली आग में जायेगा ।

وَّامۡرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الۡحَطَبِ ۞

(४) तथा उसकी पत्नी भी (जायेगी), जो लकड़ियाँ ढोने वाली है ।[2]

فِىۡ جِيۡدِهَا حَبۡلٌ مِّنۡ مَّسَدٍ ۞

(५) उसकी गर्दन में खजूर की छाल की बटी हुई रस्सी होगी ।[3]

नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* को कहे थे । وَتَبَّ (तथा वह नाश हो गया) यह ख़बर (सूचक) है । अर्थात शाप के साथ ही अल्लाह ने उसके विनाश तथा बर्बादी की सूचना दे दी । तथा बद्र की लड़ाई के कुछ दिन पश्चात वह रोगग्रस्त हुआ उसे प्लेग की गिलटी के समान गिलटी निकली तथा मर गया । तीन दिन तक उसका शव यूँ ही पड़ा रहा । यहाँ तक कि दुर्गंध आने लगी । अन्ततः उसके पुत्रों ने महामारी फैलने के भय तथा लज्जा की डर से उसके शव पर दूर से पत्थर तथा धूल डाल कर उसे गाड़ दिया । (ऐसरूत तफ़ासीर)

[1] कमाई में उसका वैभव पद तथा उसकी संतान भी सम्मिलित है । अर्थात जब अल्लाह की पकड़ आई तो कोई चीज़ काम न आई ।

[2] अर्थात नरक में अपने पति की आग पर लकड़ियाँ ला-लाकर डालेगी । ताकि आग अधिक भड़के । यह अल्लाह की ओर से होगा । अर्थात जिस प्रकार यह संसार में अपने पति की उसके कुफ्र एवं शत्रुता में सहायक थी परलोक में भी यातना में उसकी सहायक होगी । (इब्ने कसीर) कुछ कहते हैं कि वह काँटेदार झाड़ियाँ ढो-ढोकर लाती, तथा नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* के मार्ग में लाकर बिछा देती थी । कुछ कहते हैं कि उसकी चुगली खाने की आदत की ओर संकेत है । चुगली खाने के लिये यह अरबी मुहावरा (वाक शैली) है । यह क़ुरैश के काफ़िरों के पास जा-जाकर रसूल अल्लाह *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* की चुगली खाती थी तथा आप के विरोध पर उकसाती थी (फ़तहुल बारी)

[3] جِيد गर्दन مَسَد दृढ़ बटी हुई रस्सी, वह मूँज की अथवा खजूर की छाल की, अथवा लोहे के तारों की । जैसाकि अनेक लोगों ने इसका अनुवाद किया है । कुछ ने कहा कि

सूरतुल इख़्लास-११२

سُورَةُ الإِخْلَاصِ

सूरतुल इख़्लास मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें चार आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

(१) (आप) कह दीजिये कि वह अल्लाह एक (ही) है।

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ①

(२) अल्लाह (*तआला*) किसी के आधीन नहीं सभी उसके आधीन हैं।[1]

اللَّهُ الصَّمَدُ ②

(३) न उससे कोई पैदा हुआ तथा न उसे किसी ने पैदा किया।[2]

لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ③

(४) तथा न कोई उसका समकक्ष है।[3]

وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ ④

सूरतुल इख़्लास : यह संक्षिप्त सूरत बड़ी प्रधानता रखती है। इसे नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने एक तिहाई क़ुरआन कहा है। तथा इसे रात को पढ़ने का प्रलोभन दिया है। (सहीह अलबुख़ारी, किताबुत तौहीद तथा फ़ज़ायेलुल क़ुरआन, बाबु फ़ज़्ले क़ुल हुवल्लाहु अहद्) कुछ सहाबा अन्य सूरतों के साथ प्रत्येक रकअत में इसे मिलाकर अवश्य पढ़ते थे। जिस पर नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने उनसे फ़रमाया : तुम्हारा इससे प्रेम तुम्हें स्वर्ग मे ले जायेगा। (बुख़ारी किताबुत तौहीद, किताबुल अज़ान, बाबुल जमओ वैनस सूरतैने फ़िर रकअः मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफ़िरीन) इसके उतरने का कारण यह बताया गया है कि मुशरिकीन ने आप से कहा कि अपने प्रभु का गोत्र बताओ। (मुसनद अहमद ५\१३३,१३४)

[1]अर्थात सब उसके सम्मुख मुहताज हैं तथा वह सबसे निस्पृह तथा निरपेक्ष है

[2]अर्थात न उससे कोई वस्तु निकली है न वह किसी वस्तु से निकला है।

[3]न उसके व्यक्तित्व में न उसकी विशेषताओं में न उसके कर्मों में ﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ﴾ (*अश शूरा*-११) हदीसे कुदसी में है कि अल्लाह (*तआला*) फ़रमाता है कि इंसान मुझको गाली देता है। अर्थात मेरे लिये संतान सिद्ध करता है। जबकि मैं अकेला हूँ। निस्पृह हूँ। मैंने न किसी को जन्म दिया है, न मैं किसी से पैदा हुआ, न कोई मेरे समान है। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर कुल हुवल्लाहु अहद) इस सूरत में उनका भी खण्डन हो गया जो अनेक ईश्वर मानते हैं तथा उनका भी जो अल्लाह की संतान मानते हैं तथा उनका भी जोदूसरों को उसका साझी कहते हैं। तथा उनका भी जोअनिश्वरवादी (नास्तिक) हैं।

सूरतुल फ़लक़-११३

سُورَةُ الفَلَق

सूरतुल फ़लक़ मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पाँच आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सूरतुल फ़लक़ : इसके पश्चात *सूरतुन नास* है। इन दोनों की सम्मिलित प्रधानता अनेक हदीसों में आई है। उदाहरणार्थ एक हदीस में नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* ने फ़रमाया: आज रात मुझ पर कुछ ऐसी आयतें उतरी हैं जिनके समान मैंने कभी नहीं देखी। यह फ़रमा कर आपने यह दोनों सूरतें पढ़ीं। (सहीह मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफिरीन, बाबु फ़ज़ले किराअतिल मुअव्वज़तैन, वत तिर्मिज़ी) अबू हाबिस जुहनी से आप ने फ़रमाया : हे अबू हाबिस ! क्या मैं तुम्हें सर्वोत्तम तावीज़ (यंत्र) न बताऊँ। जिसके द्वारा शरण के चाहने वाले शरण माँगते हैं। उन्होंने कहा हाँ अवश्य बतलाइये। आप ने दोनों सूरतों की चर्चा करके फ़रमाया कि यह दोनों مُعَوِّذَتَيْن (मुअव्वजतैन) हैं। सहीहुन नसाई लिल अलबानी न॰५०२०) नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* इंसानों तथा जिन्नों की प्रभाव से शरण माँगा करते थे। जब यह दोनों सूरतें उतरीं तो आप ने इनके पढ़ने का नियम बना लिया तथा शेष दूसरी दुआयें छोड़ दीं। (अलबानी की सहीह तिर्मिज़ी न॰२१५०) माननीय आयशा *(रज़ी अल्लाह अन्हा)* फ़रमाती हैं कि जब आप को दुख होता तो मुअव्वजतैन पढ़कर अपने शरीर पर फूँक लेते तथा जब आप का रोग बढ़ गया तो मैं यह सूरतें पढ़कर आप के हाथों को बरकत की आशा में आप के शरीर पर फेरती (बुख़ारी फ़ज़ायेलुल क़ुरआन, बाबुल मुअव्वजात, मुस्लिम किताबुस सलाम, बाबु रूक़्यातिल मरीज़े बिल मुअव्वज़ात) जब नबी *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* पर जादू किया गया, तो जिब्रील यही दो सूरतें लेकर उपस्थित हुए तथा फ़रमाया कि एक यहूदी ने आप पर जादू किया है, तथा यह जादू अमुक कूऐं में है, आप ने माननीय अली को भेजकर उसे मंगवाया। (यह एक कंघी के दाँतों तथा बालों के साथ एक ताँत के अन्दर ग्यारह गाठें पड़ी हुई थी तथा मोम का एक पुतला था जिसमें सुइयाँ चुभाई हुई थी) जिब्रील की आज्ञानुसार आप इन दोनों सूरतों को पढ़ते जाते थे और गाँठें खुलती तथा सुई निकलती जाती थी अन्त तक पहुँचने पर सब गाँठें भी खुल गईं तथा सब सुइयाँ भी निकल गईं तथा आप इस प्रकार स्वस्थ हो गये जैसे कोई बंधन से मुक्त हो जाये (सहीह अलबुख़ारी फ़तहुल बारी सहित, किताबुत तिब्ब,बाबुस सेहर, मुस्लिम किताबुस सलाम, किताबुस सेहर) आप *(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)* का यह भी नियम था कि रात को सोते समय *सूरतुल इख़लास* तथा मुअव्वज़तैन पढ़कर अपने दोनों हथेलियों पर फूँकते फिर उन्हें पूरे शरीर पर मलते। पहले सिर, चेहरे तथा शरीर के अगले भाग पर हाथ फेरते तत्पश्चात जहाँ तक आप के हाथ पहुँचते। तीन बार आप ऐसा करते (सहीह अलबुख़ारी, किताबु फ़ज़ायेलिल क़ुरआन, बाबु फ़ज़लिल मुअव्वज़ात)

(१) आप कह दीजिये कि मैं प्रात: के प्रभु की शरण में आता हूँ ।[1] قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ①

(२) प्रत्येक उस वस्तु की बुराई से जो उसने पैदा की है ।[2] مِن شَرِّ مَا خَلَقَ ②

(३) तथा अंधेरी रात्रि की बुराई से, जब उसका अंधकार फैल जाये ।[3] وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ③

(४) तथा गाँठ (लगाकर उन) में फूँकने वालियों की बुराई से (भी)[4] وَمِن شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ④

(५) तथा द्वेष करने वाले की बुराई से भी जब वह द्वेष करे ।[5] وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ⑤

---

[1] فَلَق का प्रधान अर्थ भोर है प्रात: को इसलिये विशेष किया कि जैसे अल्लाह (*तआला*) रात का अंधकार समाप्त करके दिन की रोशनी ला सकता है वह इसी प्रकार भय तथा डर को दूर करके शरण माँगने वालों को शान्ति भी प्रदान कर सकता है । अथवा इंसान रात को जिस प्रकार इस बात की प्रतीक्षा में रहता है कि सवेरे प्रकाश हो जायेगा । इसी प्रकार भयभीत व्यक्ति शरण द्वारा सफलता की प्रभात के उदित होने की आशा रखता है । (फ़तहुल क़दीर)

[2] यह साधारण है इसमें शैतान उसकी संतान, नरक तथा प्रत्येक उस वस्तु से शरण है जिससे इंसान को क्षति पहुँच सकती है ।

[3] रात के अंधकार में ही भयावह जन्तु अपनी कक्षारों से तथा दु:खदायी जानवर अपनी विलों से तथा इसी प्रकार अपराधी लोग अपने कुविचारों को पूरा करते हैं । इन शब्दों द्वारा इन सभी से शरण माँगी गई है । غَاسِق रात وَقَب आ जाये, छा जाये ।

[4] نَفَّاثَات स्त्रीलिंग का रूप है । जो النُّفُوس (लुप्त विशेष्य) का विशेषण है । مِن شَرِّ النُّفُوس النَّفَّاثَات अर्थात गाँठों में फूँकने वालियों की बुराई से शरण । इससे अभिप्राय जादू का काला काम करने वाले पुरूष तथा स्त्री दोनों हैं । अर्थात इसमें जादूगरों की दुष्टता से शरण माँगी गई है । जादूगर, पढ़-पढ़ कर फूँक मारते तथा गाँठ लगाते जाते हैं । साधारणत: जिस पर जादू करना होता है उसके बाल अथवा कोई चीज़ प्राप्त करके उस पर यह काम किया जाता है ।

[5] ईर्ष्या यह है कि ईर्ष्या करने वाला दूसरे की अच्छी चीजों की समाप्ति की कामना करता है । अत: उससे भी शरण माँगी गई है । क्योंकि ईर्ष्या भी एक बड़ा चरित्रक रोग है जो पुण्य को खा जाता है ।

सूरतुन नास-११४

سُوْرَةُ النَّاسِ

सूरतुन नास मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें छ: आयतें हैं।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾

(१) आप कह दीजिये कि मैं लोगों के प्रभु की शरण में आता हूँ ।[1]

مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾

(२) लोगों के स्वामी की ।[2] (तथा)

اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾

(३) लोगों के पूजने योग्य की (शरण में) ।[3]

---

[1]ईष्या यह है कि ईर्ष्या करने वाला दूसरे की अच्छी चीज़ों की समाप्ति की कामना करता है । अत: उससे भी शरण माँगी गई है। क्योंकि ईर्ष्या भी एक बड़ा चरित्रक रोग है जो पुण्य को खा जाता है।

सूरतुन नास : इसकी प्रधानता विगत् सूरत के साथ वर्णन की जा चुकी है। एक अन्य हदीस में है कि नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) को नमाज में बिच्छू ने डस लिया नमाज़ के पश्चात आपने पानी तथा नमक मँगवा कर उसके ऊपर मला तथा साथ-साथ ﴿قُلۡ يٰۤاَيُّهَا الۡكٰفِرُوۡنَ﴾ ﴿قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ﴾ ﴿قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ पढ़ते रहे (मज्मउज़ ज़वायेद ५\१११ तथा हैसमी ने कहा कि इसकी सनद हसन है)

[2] رَبّ (पालनहार) का अर्थ है, जो आरम्भ ही से जब इंसान अभी माँ के गर्भाशय ही में होता है। उसकी व्यवस्था तथा सुधार करता है यहाँ तक कि वह व्यस्क हो जाता है फिर वह यह उपाय केवल कुछ विशेष लोगों के लिये नहीं, अपितु सभी मानव जाति के लिये करता है तथा सभी मानव जाति के लिये ही नहीं अपनी पूरी सृष्टि के लिये करता है, यहाँ केवल इंसानों की चर्चा उसकी प्रतिष्ठा एवं प्रधानता दिखाने के लिये है जो उन्हें पूरी सृष्टि पर प्राप्त है।

[3]जो अल्लाह सब इंसानों का पोषक तथा संरक्षक है। वही इस योग्य है कि विश्व तथा सृष्टि का शासन तथा राज्य उसी के पास हो।

[4]जो अखिल जगत का पालनहार हो। पूरी सृष्टि उसी का अधिपत्य है। वही सत्ता इस बात के योग्य है कि उसकी उपासना की जाये तथा वही सब लोगों का पूज्य हो अत: उसी महान तथा सर्वोच्च सत्ता की शरण प्राप्त करता हूँ।

مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝٤ (४) शंका डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से ।[1]

الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝٥ (५) जो लोगों के सीनों में शंका डालता है ।

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝٦ (६) (चाहे) वह जिन्न में से हो अथवा मनुष्य में से ।[2]

---

[1] الوسْوَاس कुछ के विचार से कर्त्ता संज्ञा है الْمُوَسْوِسُ के अर्थ में है, तथा कुछ के विचार में ذِي الوَسْوَاس है وَسوَسَة वस्वसा, गुप्त ध्वनि को कहते हैं । शैतान भी अनजाने ढंग से इंसान के दिल में बुरी बातें डाल देता है उसी को वस्वसा कहा जाता है الخَنَّاس (खिसक जाने वाला) यह शैतान का दुर्गुण है कि जब अल्लाह का स्मरण (याद) की जाये, तो यह खिसक जाता है । तथा अल्लाह की याद (स्मरण) से अचेत रहा जाये तो दिल पर छा जाता है ।

[2] यह वस्वसा (गुप्त ध्वनि) डालने वाले दो प्रकार के हैं जिन्नातों के शैतान और मानव जाति के शैतान-प्रथम को अल्लाह तआला ने मानव को पथभ्रष्ट करने की क्षमता दी है । उसके अतिरिक्त हर मानव के साथ उसका एक शैतान साथी होता है जो उसको पथभ्रष्ट करता रहता है ।

हदीस में है कि जब नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ने यह बात बताई तो सहाबा ने प्रश्न किया, हे अल्लाह के नबी क्या वह आपके साथ भी है, आपने कहा, हाँ । परन्तु अल्लाह ने मेरी सहायता की है और वह मेरा आज्ञाकारी है । मुझे भलाई के अतिरिक्त किसी चीज़ को नहीं कहता । (सहीह मुस्लिम किताबु सिफ़तिल क़ियाम:)

इसी प्रकार दूसरी हदीस में है कि नबी (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) ऐतिकाफ़ में थे कि आपकी पत्नी सफ़िया (*रज़ी अल्लाहु अन्हा*) आपसे मिलने आयीं । रात्रि का समय था । आप उनको छोड़ने के लिए मस्जिद के बाहर आये और उनसे बात करने लगे । दो अंसारी सहावी वहाँ से गुज़रे तो आपने उनको बुलाकर फ़रमाया : यह मेरी पत्नी सफ़िया है ! उन लोगों ने कहा कि हे अल्लाह के रसूल क्या आपके विषय हमें बुरा गुमान हो सकता है । आपने कहा यह ठीक है परन्तु शैतान मानव के अन्दर रक्त के समान दौड़ता है । मुझे संदेह हुआ कि वह तुम्हारे हृदय में आशंका डाल दे । (सहीह बुख़ारी किताबुल अहकाम)

दूसरे प्रकार के शैतान मानव जाति में से होते हैं जो व्यक्ति को सदुपदेशक और दयावान वन कर पथभ्रष्ट करते हैं ।

कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि शैतान जिन लोगों को पथभ्रष्ट करता है वे दो प्रकार के हैं अर्थात शैतान मानवों को भी गुमराह करता है और जिन्नातों को भी ।

क़ुरआन मजीद की सूरतों की अनुक्रम सूची

इस्लाम का सन्देश

क्या हम ब्रहमाण्ड को परिभाषित कर सकते हैं ? क्या इसके अस्तित्व के कारण को परिलक्षित कर सकते हैं ? जैसाकि हम जानते हैं कि कोई भी परिवार बिना किसी मुखिया के अच्छी प्रकार से जीवन व्यतीत नहीं कर सकता, कोई भी नगर बिना किसी उचित कार्यपालिका के प्रगति नहीं कर सकता, किसी भी देश का अस्तित्व बिना किसी राजनैतिक नेता के नहीं रह सकता । यह भी सार्वभौमिक सत्य है कि कोई भी वस्तु स्वयं नही बनी। प्रतिदिन हम यह देखते हैं कि ब्रहमाण्ड एक बहुत ही उचित ढंग से अपने पथ पर चल रहा है। तब क्या यह प्रश्न नहीं उठता कि क्या यह अचानक और ऐसे ही अस्तित्व में आया ? क्या हम मनुष्य के जन्म और समस्त संसार के अस्तित्व को किसी घटना से सम्बन्धित कर सकते हैं ?

मनुष्य इस विशाल ब्रहमाण्ड में एक छोटा-सा जीव है। यदि वह कोई योजना बनाता है तो योजना की विशेषता के लिए प्रोत्साहन चाहता है। उसी प्रकार उसका स्वयं आना और ब्रहमाण्ड का अस्तित्व भी एक योजना पर आधारित है । अर्थात हमारे भौतिक अस्तित्व के पीछे कोई योजना है, और संसार की प्रत्येक वस्तु को कार्यबद्ध रखने के लिए एक अपार शक्ति है।

इस संसार में अवश्य कोई बड़ी शक्ति है जो हर चीज़ को एक उचित व्यवस्था में चला रही है। इस सुन्दर प्रकृति का अवश्य कोई सृष्टा है, जिसने सृष्टि को निर्माण किया, सुन्दर सृष्टि के बनाने का अवश्य ही कोई विशेष कारण है। विद्वान ज्ञानी व्यक्तियों ने उस स्रष्टा को पहचाना और उसे 'अल्लाह' ईश्वर के नाम से पुकारा। वह कोई मनुष्य नहीं, क्योंकि मनुष्य स्वयं अपने जैसा दूसरा मनुष्य नहीं बना सकता, वह कोई जानवर नहीं, और न कोई वृक्ष है। वह न मूर्ति है, और न किसी भी चीज़ का चित्र, क्योंकि वह सभी अपने जैसा अथवा दूसरी किसी चीज़ की सृष्टि नहीं कर सकती हैं। वह इन सबसे भिन्न है, क्योंकि वह स्रष्टा है, स्रष्टा के स्वभाव को सृष्टि के स्वभाव से भिन्न होना चाहिए। इस तरह स्रष्टा अनादि है, अन्नत और अमर है।

'अल्लाह' (ईश्वर) को जानने के लिए बहुत से रास्ते हैं, उसके विषय में बताने के लिए बहुत सी बातें हैं । दुनिया में देखे जाने वाले बड़े आश्चर्य और चमत्कार एक खुली किताब की तरह हैं, जिनके द्वारा 'अल्लाह' का ज्ञान प्राप्त

किया जा सकता है । अल्लाह ने स्वयं हमारी सहातार्थ कई दूत (रसूल) भेजे और उनका मार्गदर्शन देववाणी (वह्यी) से किया, ताकि वे अपनी जाति अथवा क़ौम के लोगों को अल्लाह का आदेश पहुँचा दें ।

'इस्लाम' धर्म, अल्लाह के आदेश व शिक्षा जो उसने अपने रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को अवतरित की, को पूर्ण रूप से स्वीकार करने को कहते हैं ।

इस्लाम अल्लाह से सम्बन्ध जोड़ने का नाम है। अल्लाह से जो सम्बन्ध जोड़ता है, वह अल्लाह सर्वशक्तिमान और एक सच्चा खुदा है। उस से पूरी सृष्टि में इन्सान की सही पदवी निर्धारित होती है। यह धारणा मनुष्य को हर प्रकार के भय और अंधविश्वास से मुक्ति दिला देती है, जब वह यह सोचता है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह अपने विशाल ज्ञान द्वारा हर जगह उपस्थित है और मनुष्य को उसी का होकर रहना चाहिए। मात्र विश्वास पर्याप्त नहीं, तथा एक अल्लाह में विश्वास का अर्थ है कि हम सम्पूर्ण मानव जाति को एक परिवार समझें और अल्लाह को उसका संरक्षक, स्रष्टा और पालनकर्त्ता। इस्लाम प्रतिष्ठित जनों के किसी भी विचार का खण्डन करता है उसके निकट यदि महत्व है, तो अल्लाह पर विश्वास और उसके आदेशानुसार व्यवहारिक जीवन व्यतीत करने का। इस प्रकार बिना किसी की मध्यस्यता के हर एक का सीधा सम्बन्ध स्थापित होता है ।

इस्लाम कोई न्या धर्म नहीं है। यह एक ही संदेश है जो सभी संदेष्टाओं आदम, नूह, इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, दाऊद, मूसा और ईसा (सल्लल्लाहु अलैहिम अहमईन) द्वारा अल्लाह की ओर से प्रसारित किया जाता रहा है। परन्तु जो संदेश रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अवतरित किया गया, वह व्यापक, पूर्ण एवं अन्तिम है, और यही इस्लाम की आधारशिला है ।

क़ुरआन अल्लाह का अन्तिम अवतरित संदेश है और इस्लाम की शिक्षा और विधि इसी पर आधारित है। क़ुरआन का प्रमुख विषय विश्वास व आस्था, चरित्र व आचरण, मानवता का इतिहास, उपासना, ज्ञान, विवेक, अल्लाह से मनुष्य के सम्बन्ध और सामाजिक सम्बन्ध हैं। और वह इन विषयों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालता है। ऐसी सतर्क शिक्षायें जिन पर सामाजिक न्याय, अर्थव्यवस्था, राजनीति विधि निर्माण, न्याय शास्त्र विधि और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की इमारतें खड़ी की जा सकती हैं, ये पवित्र क़ुरआन के कुछ प्रमुख विषय हैं ।

रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं, वचन और कर्म को हदीस कहते हैं। हदीस को पूरी सतर्कता एवं सावधानी से आपके श्रद्धालु साथियों ने संग्रहीत और प्रचारित किया, ये हदीसें क़ुरआन की आयतों की व्याख्या एवं स्पष्टीकरण करती हैं।

एक सच्चा श्रद्धालु मुसलमान आस्था के निम्नलिखित नियमों पर विश्वास करता है।

१. **एकेश्वरवाद (तौहीद)** : वह विश्वास करता है कि 'अल्लाह' ईश्वर एक है, वह सर्वशक्तिमान, अनन्त, अनादि, दयालु, मेहरबान, स्रष्टा, पूज्य एवं पालन करता है।

२. **ईश-दूतत्व (रिसालत)** : इस्लामी विश्वास में रिसालत (ईश-दूतत्व) का नियम यह है कि मुसलमान बिना किसी अपवाद के सभी पैग़म्बरों (ईश-दूतों) पर विश्वास करते हैं। अल्लाह ने हर क़ौम को एक या इससे अधिक ईश-दूत (रसूल) अथवा उपदेशक भेजे। अल्लाह ने उनका चयन स्वयं किया, ताकि वे मानवजाति को उस का संदेश पहुँचा दें, तथा उसके अनुसार मानव को शिक्षा दें। क़ुरआन में पच्चीस ईश-दूतों के नाम लिखित हैं, जिन में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्तिम एवं प्रमुख हैं।

३. **ईश्वरीय पुस्तकें** : मुसलमान अल्लाह की अवतरित सभी पुस्तकों पर आस्था रखते हैं। वे सभी अल्लाह के बताए हुए सीधे रास्ते पर प्रकाश डालती हैं, जो ईश-दूतों को प्राप्त हुईं। क़ुरआन में विशेष रूप से हज़रत इब्राहीम, मूसा, दाऊद और ईसा को अवतरित की गई पुस्तकों का वर्णन मिलता है। क़ुरआन के हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित होने से पहले, ये पुस्तकें या तो खो गईं अथवा उनके स्वरूप को बदल दिया गया। आज यदि कोई मान्यता प्राप्त तथा पूर्ण अल्लाह की किताब अब भी उपलब्ध हैं, तो वह केवल क़ुरआन है।

४. **फ़रिश्ते** : सच्चे मुसलमान अल्लाह के फ़रिश्तों पर विश्वास करते हैं, वे शुद्ध आत्मिक और विशेष सृष्टि हैं, जिनको प्रकृति खाना, पीना, सोना कुछ नहीं चाहती हैं। वे अपने दिन व रात अल्लाह की उपासना में व्यतीत करते हैं। वे विशेषता प्राप्त सेवक हैं, जिनको एक विशेष कार्य के लिए निर्धारित किया गया है। वे अल्लाह के समक्ष नहीं बोलते, वे केवल अल्लाह के आदेश का पालन

करते हैं।

५. न्याय का दिन : मुसलमान न्याय के दिन पर विश्वास करते हैं। एक दिन इस संसार का अन्त होना है, मरे हुए ज़िन्दा किए जायेंगे, ताकि उनको अन्तिम तथा उचित न्याय दिया जा सके। अच्छे कर्मों वाले व्यक्तियों को उचित फल मिलेगा और वे अल्लाह के स्वर्ग में पूर्ण सम्मान के साथ स्वागत किये जायेंगे और जिनके कुकर्म होंगे, उनको दण्डित करके नरक में डाल दिया जायेगा।

६. भाग्य : अच्छा या बुरा भाग्य जो अल्लाह के अपने पूर्व ज्ञान के अनुसार लिख दिया है, पूर्ण सृष्टि को उसी के अनुसार चलना है। उसकी आज्ञा के बिना इस ब्रहमाण्ड में कुछ नहीं हो सकता। उसका ज्ञान एवं शक्ति हर समय अपनी सृष्टि पर आदेश करने के लिए क्रियाशील है। वह बुद्धिमान एवं दयालु है और जो भी करता है उसका कोई अवश्य ही अर्थ होता है। यदि हमारे दिल व दिमाग़ में वह स्थापित हो जाये तो हमारा विश्वास सही होगा, जिसका वह अधिकारी है, यद्यपि हम पूर्ण रूप से समझने योग्य न रहें या इस को बुरा समझें।

इस्लाम के पाँच स्तम्भ

विश्वास, बिना प्रयोगात्मक एवं क्रियात्मक रूप से प्रकट किये बेकार है। आस्था प्राकृतिक रूप से अति संवेदनशील है, इसको अतिप्रभावशाली जीवन में प्रयोग करके ही किया जा सकता है। यदि इसको प्रयोग में न लाया जाये तो इस की शक्ति क्षीण होकर समाप्त हो जाती है। इस्लाम के पाँच स्तम्भ निम्न हैं।

१. ईमान की गवाही : मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना योग्य नहीं, और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके सेवक (बन्दे) और रसूल हैं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत का उद्देश्य यह है कि जीवन के हर अंग में मुसलमान आपके आदर्श जीवन को उदाहरणार्थ रखें।

२. नमाज़ : प्रतिदिन पाँच नमाज़ें प्रत्येक व्यस्क मुसलमान को अल्लाह द्वारा निर्धारित कर्तव्य के रूप में अदा करनी होती हैं। यह नमाज़ें अल्लाह में विश्वास को जीवन्त और सुदृढ़ बनाती हैं और मनुष्य को श्रेष्ठ चरित्र निर्माण पर उकसाती हैं। यह मन को शुद्ध करती हैं, और कुकर्मों और पाप से रोकती

हैं। ये नमाज़ें निम्नलिखित हैं :

(१) **फ़ज्र की नमाज़** (प्रात:काल की उपासना)

(२) **ज़ोहर की नमाज़** (मध्यान्ह की उपासना)

(३) **असर की नमाज़** (पूर्वान्ह की उपासना)

(४) **मग़रिब की नमाज़** (संध्याकाल की उपासना)

(५) **एशा की नमाज़** (रात्रिकाल की उपासना)

३. ज़कात : ज़कात का शब्दिक एवं साधारण अर्थ 'शुद्धि' है। परन्तु प्रयोगात्मक रूप से एक मुसलमान अपनी वार्षिक बचत का ढाई प्रतिशत योग्य निर्धन व्यक्तियों को देता है। लेकिन धार्मिक एवं आत्मिक रूप से ज़कात का अर्थ बहुत गहरा एवं बहुत ही जीवन्त है। इसलिए इसकी एक मानवीय, सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्य है।

४. रमज़ान के रोज़े : मुसलमानों पर रमज़ान के महीने में खाने-पीने स्त्रीगमन पर सुबह से लेकर सूर्यास्त तक निषेधाज्ञा लग जाती है। रोज़ा बुरे एवं ग़लत विचारों पर भी नियन्त्रण लगाता हैं। रोज़ा प्रेम, शुद्धता एवं भक्तिभाव उत्पन्न करता है। रोज़ा शुद्ध सामाजिक चेतना, धैर्य, नि:स्वार्थता, निष्ठा और मनोबल को विकसित करता है।

५. हज (मक्का की तीर्थयात्रा) : इसको जीवन में एक बार करना है, यदि कोई मार्ग व्यय, स्वास्थ व अन्य व्यय के लिए समर्थ है, उसके लिए अनिवार्य है। यह सबसे बड़ा वार्षिक आस्था का सम्मेलन है, जहाँ दुनियाँ के मुसलमान एक-दूसरे को समझते हैं, अपने पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन करते हैं और सामान्य विकास को विकसित करते हैं। यह इस्लाम की सार्वभौमिकता का प्रदर्शन है और मुसलमानों के भ्रातृत्व एवं समता के भाव को प्रदर्शित करता है।